युद्धवीर

एक हरियाणवी उपन्यास

:: लेखक ::

जगबीर राठी

:: प्रकाशक ::

समर्पण

"कारगिल युद्ध के समस्त शहीदों व उनके परिवारों के चरणों में समर्पित जिन्होंने अपने ज़िगर का खून भारत माँ की आन के लिये न्यौछावर कर दिया"

आवरण – श्री भूप सिंह गुलिया
कम्पयूटर अंकण – श्री हितेश गर्ग

लेखक

प्रथम संस्करण – 2007

आलोक

मैं श्री जगबीर राठी के व्यक्तित्व एवं कतित्व के विकास का गत दो दशकों से भी अधिक से स्वयं साक्षी रहा हूँ। वे जितने वाग्वीर हैं, उतने ही लेखन-शूर भी हैं। मंच-संचालन और कविता की मंचीय प्रस्तुति में उनकी वाग्वीरता के दर्शन होते हैं। लेखन के क्षेत्र में भी उन्होंने अनूठी प्रतिभा का परिचय दिया है। अब तक उनके तीन कविता-संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। इन सभी में मार्मिक जीवन-प्रसंगों से सम्बन्धित संवेदनाओं की प्रभावशाली प्रस्तुति दर्शनीय है। प्रस्तुत कति में उनकी प्रतिभा का एक नया आयाम उजागर हुआ है। यह उत्कट देश-भक्ति का उज्ज्वल उदाहरण प्रस्तुत करने वाली सरस एवं सोद्देश्य कथा-कति है, जिसमें मार्मिक प्रसंगों की क्रमिक योजना द्वारा अद्‌भुत कथा-रस की सष्टि की गयी है।

कथाकार श्री जगबीर राठी के प्रस्तुत उपन्यास का कथानक मुख्यत: चार परिवारों के पात्रों के जीवन-प्रसंगों की क्रमिक व्यवस्था पर आधारित है। केन्द्रीय परिवार जागेराम और उसकी पत्नी सुजानी का है। इनका सुपुत्र फ़ौजी युद्धवीर है, जो इस उपन्यास का सुशील, शूरवीर और देश-भक्त नायक है। युद्धवीर की दो बहिनें हैं। यह परिवार स्नेह, सेवा, श्रद्धा आदि सद्‌भावनाओं से सुवासित पारिवारिक प्रेम-सम्बन्धों का उत्तम नमूना प्रस्तुत करता है। लेखक पारिवारिक प्रेम को प्रेम के सभी आयामों की आधार-भूमि मानता है और प्रभु से प्रार्थना करता है, "जिस ढाल ताऊ जागे कै घर में खुशियाँ का पहरा रहै सै - ऐसा सारे गाम म्हँ रहवै तो जी-सा आज्या।" युद्धवीर के पंजाबी फ़ौजी मित्र गुरूप्रीत के परिवार में भी ऐसा ही प्रेमपूर्ण वातावरण देखने को मिलता है। पारिवारिक प्रेम का यही रूप युद्धवीर की सुसराल में भी पाया जाता है। चौथा परिवार जागेराम के मित्र दलीप का है, जिसका पुत्र पश्चिमी सभ्यता की चकाचौंध के वशीभूत हो कर उपेक्षा, अनादर और अलगाव का मार्ग अपनाता है तथा माँ की मत्यु और पिता के अवसाद का कारण बनता है। चोट खाकर बाद में वह पटरी पर आता है। सांस्कतिक प्रदूषण से उत्पन्न पारिवारिक विघटन का यह उदाहरण वर्तमान युवा पीढ़ी को सचेत रहने और अपनी सांस्कतिक अस्मिता को सुरक्षित रखने का संदेश देता है। परिवार ही लेखक के प्रेम-दर्शन के समाज-सेवा, देश-भक्ति, मानवतावाद आदि आयामों का मूलाधार है। यह पारिवारिकता ही विश्व-परिवार या 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना का स्रोत है। जागेराम और सुजानी जब युद्धवीर से मिलने के लिए मेरठ छावनी में गये, तो फ़ौजी जवानों के उमड़ते हुए असीम आदर-भाव से अभिभूत जागे को ऐसा लगा कि "उसकै तो बहुत घणे बेटे सैं"। विभिन्न रिश्तों के संवेदनागत रेशों को बारीकी से तराशने में सुधी कथाकार ने गहरी मनोवैज्ञानिक सूझ-बूझ और पैठ का परिचय दिया है। यह सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक पकड़ ही वह केन्द्रीय तत्त्व है, जिसने इस उपन्यास को कथानक और कथ्य की दष्टि से जन-जन के लिए पठनीय और मननीय बना दिया है।

श्री जगबीर राठी युवा-कल्याण विभाग के निदेशक के नाते लोक-जीवन, लोक -संस्कति और लोक - तत्त्व से गहराई के साथ जुड़े हैं। लोकतत्त्व ने कथानक और कथ्य में सजीवता और सरसता का प्रचुर संचार किया है। अनेक विवाहों के समावेश से विविध लोक-प्रथाओं, रीति-रिवाजों, लोक-नत्यों और गीतों के माध्यम से लोक-संस्कति का जीवान्त रूप उपस्थित हो गया है। बेटियों की बिदाई के प्रसंगों की मार्मिकता दर्शनीय है। होली के प्रसंग में उद्‌दाम उल्लास के मनोरम चित्र अंकित हुए हैं।

प्रस्तुत उपन्यास में राजपुरे के मन्दिर में बाबा द्वारा आयोजित रागनियों के कार्यक्रम में कुछ अनामन्त्रित मलंगों की टोली ने अश्लील गीतों की प्रस्तुति द्वारा लोक-संस्कति को कलंकित कर दिया। कथा-नायक युद्धवीर की दष्टि में अश्लीलता और विकति के लिए श्रोता ही मुख्य रूप से दोषी हैं, जो अच्छे कार्यक्रमों की उपेक्षा करके

गन्दगी में रस लेते हैं और अपनी सस्ती रुचि का परिचय देते हैं। युद्धवीर के अनुसार, "जै हाम खुद गन्दे बोल ना सुणना चाहवाँ, तो किसकी हिम्मत कै गन्दा बोल्ज्या!"

प्रस्तुत उपन्यास प्रखर मूल्य-चेतना से अनुप्रणित होने के कारण समता, सद्भाव, भावनात्मक एकता, न्याय और पारिवारिक - सामाजिक समरसता का सन्देश देता है। जब युद्धवीर की बहिनों के विवाह-समारोह के उपरान्त उसका फ़ौजी मित्र गुरुप्रीत अपनी माँ और बहिन के साथ अपने गांव जाने लगता है तो युद्धवीर भी उनके साथ चल पड़ता है। स्टेशन से उतर कर गांव की ओर उन्मुख होते ही वे देखते हैं कि कुछ गुण्डे गुरूप्रीत के परिवार के चिर शत्रुओं की लड़की सुखविन्द्र के साथ छेड़-छाड़ कर रहे हैं। यह देखते ही गुरूप्रीत सारी शत्रुता को भूल कर उन गुण्डों को ललकारता है, "ओय, तुहाड़ी मौत आई है! साढी बैहण नूँ जलील करदे हो कंजरो।" यह कहते हुए वह उनपर टूट पड़ता है। युद्धवीर भी उनकी धुनाई में गुरूप्रीत का जमकर साथ देता है। लौकिक सीमाओं से ऊपर उठना ही अध्यात्म है। यहां गुरूप्रीत का आचरण आध्यात्मिक ज्योति से भास्वर हो उठा है। इस अनूठे व्यवहार से उपकत और आभारी अनुभव करते हुए दुश्मनों का पूरा परिवार गुरूप्रीत की माँ के चरणों में सशस्त्र आत्म-समर्पण करता है और भविष्य के लिए शत्रुता त्यागने की शपथ ग्रहण करता है। यह चारित्रिक उत्कर्ष और हृदय-परिवर्तन का प्रेरक प्रसंग है। जागेराम और सुजानी भी विपदाग्रस्त दलीप और उसकी पत्नी किताबो की सहायता करके मित्रता का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत करते हैं, जिससे दलीप के विकत विद्रोही पुत्र सुरेश का हृदय परिवर्तन हो जाता है।

पूरा उपन्यास मनोमन्थन, अन्तर्द्वन्द्व, कुण्ठा, अवसादं, कुतूहल, आशंका, असमंजस आदि अनेक मनोदशाओं के सूक्ष्म नमूनों से भरा पड़ा है, जिससे प्रसंगों में मार्मिकता आ गयी है। अपने पुत्र के दुर्व्यवहार से कुण्ठित दलीप मन की पीड़ा छिपाकर ऊपर-ऊपर से उसकी प्रशंसा करता है। कभी-कभी दलीप और उसकी पत्नी हंसते हैं तो मन का दर्द तिलमिला उठता है। मरते समय किताबो के मन में पुरानी कड़वी यादों की परछाईयाँ सी मँडराने लगती है। रूपासक्ति और प्रेमाकर्षण के कुछ मनोदशा- निरूपक चित्र युद्धवीर और स्वर्णा के पूर्वानुराग अर्थात् विवाहपूर्ण प्रेम के प्रसंगों में अंकित हुए हैं। स्वर्णा का प्रथम बार दर्शन करते ही युद्धवीर की आँखों में ऐसी बिजली सी कौंध गयी कि वह बुत सा बना खड़ा रह गया। पुन: महिला-छात्रावास के पास भेंट होने पर वह इतना विस्मित और विचलित सा हो गया कि उसकी मोटरसाइकिल एक सब्ज़ी वाले की रेहड़ी से टकरा गयी और सारे टमाटर बिखर गये। कारगिल में युद्ध छिड़ जाने पर सुजानी की शंका, भय, चिन्ता आदि से ग्रस्त मनोदशा पाठक को भी झकझोर कर रख देती है।

सात्त्विक प्रेम-दर्शन ही उपन्यासकार का जीवन-दर्शन है। जो प्रेम बहिन, भाई, पुत्र, मित्र, माता-पिता आदि के प्रति स्नेह, सख्य, श्रद्धा, पितभक्ति आदि रूपों में व्यक्त हुआ है, वही उपन्यास के अन्तिम भाग में देश के प्रति प्रगाढ़ रूप ग्रहण करके देश-भक्ति के रूप में प्रकट हुआ है। युद्धवीर और गुरुप्रीत सरीखे सच्चे देश-भक्त सेनानियों के लिए यह देश-भक्ति ईश-भक्ति से भी कहीं बढ़कर है। दोनों फ़ौजी मित्रों की देश के प्रति असीम आस्था ने अद्भुत साहस, शौर्य और युद्ध-कौशल का रूप ले लिया है। पराक्रम और शूरवीरता के अद्भुत कारनामों का चित्रण इतना सजीव, प्रभावशाली और विश्वसनीय है कि ऐसा प्रतीत होता है मानो लेखक स्वयं युद्ध-क्षेत्र से आँखो देखा हाल प्रसारित कर रहा है। युद्धवीर जूझते-जूझते अनेक दुश्मनों को ठिकाने लगा देता है। युद्धवीर को बचाने के प्रयत्नों में गुरूप्रीत के मैत्रीभाव की पराकाष्ठा दिखलायी पड़ती है। सारा वीर रस अन्त में करुण रस में समा जाता है। शोक-संतप्त परिवार और सारे ग्रामवासियों के विषाद और विलाप के दश्य बहुत ही मर्मभेदी और हृदय द्रावक हैं। शहीद को श्रद्धांजलीस्वरूप उसकी पावन स्मति में उसकी भव्य प्रतिमा स्थापित की गयी।

उपन्यास की भाषा अनूभूतियों के अनुरूप अपनी भंगिमाएँ बदलती चलती है। चुस्त, सजीव और स्वाभाविक, संवादों की योजना से उपन्यास के कथानक में नाटकीयता का समावेश हो गया है। मुहावरों, लोकोक्तियों के साथ ही अनेक चिन्तनपूर्ण सूक्तियों के समावेश से उपन्यास में अर्थ-गौरव की वद्धि हुई है। उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, मानवीकरण आदि के प्रयोग से गद्य में भी लालित्य के दर्शन होते हैं। पूरा उपन्यास कथानक, चरित्र-चित्रण, संवाद-योजना, परिवेश-निरूपण, उद्देश्य और भाषा शैली की दष्टि से विशेष प्रभावशाली, प्रेरक और उद्बोधक है। ऐसे उन्मेषकारी, सात्त्विक, सत्साहित्य की सष्टि द्वारा ही युवा पीढ़ी को अपसंस्कति, नग्नता, वासना की भट्टी में धकेल कर अपार धन बटोरने वाले हास्य रस के कवियों, टी.वी. पर अश्लील कार्यक्रमों के प्रायोजकों, गन्दी फ़िल्मों के निर्माताओं के कुटिल मनसूबों को पस्त और पराजित किया जा सकता है।

पारिवारिक, सामाजिक, सांस्कतिक और राष्ट्रीय उत्थान की चेतना से अनुप्रणित ऐसे सफल और सोद्देश्य उपन्यास की सष्टि के लिए मैं इसके मनस्वी रचनाकार श्री जगबीर राठी को हार्दिक बध ाइयाँ देता हूँ और उनके उत्तरोत्तर उत्कर्ष की कामना करता हूँ।

डॉ० हरिश्चन्द्र वर्मा
एम०ए०, पीएच०डी० (हिन्दी, संस्कत), डी० लिट० (हिन्दी)
साहित्य-रत्न, विद्यावाचस्पति (मानद)
सेवा-सम्पन्न प्रोफेसर तथा अध्यक्ष, हिन्दी तथा ललित कला विभाग
महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक।
प्रथम सूर-पुरस्कार-विजेता
सदस्य, हिन्दी सलाहकार समिति, उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार।

संकल्प की राह

जिस प्रदेश की पावन धरा पर वेदों और पुराणों का सजन हुआ, गीता का अमर संदेश दिया गया तथा महाराजा कुरू ने स्थाई कषि का सुत्रपात करते हुए क्षमा, दया, तप, सुचिता रूपी बीजारोपण किया उसी धरा की संस्कति को कुछ लोगों ने अज्ञानतावश ‘‘हरियाणवी कल्चर इज एग्रीकल्चर’’ कहना शुरू कर दिया था।

महाराजा हर्षवर्धन के कन्नौज प्रस्थान के बाद १९४७ तक पूरे १३०० वर्ष तक अराजकता का दौर रहा। यवन, शक, कुषाण, हूण, मंगोल, तुर्क, पठान, मुगल, अंग्रेज तो यहां आक्रमणकारियों के रूप में आए ही, साथ ही साथ स्थानीय राजे-रजवाड़ों के आपसी युद्ध भी निरन्तर होते रहे। कोई भी २५-३० वर्ष का कालखंड ऐसा न ही मिलता, जब कोई लड़ाई न हुई हो। लेकिन इतने लम्बे समय तक छोटी बड़ी लड़ाइयां झेलने के पश्चात् भी यहां के लोगों ने हरियाणवी संस्कति के मूल मानवीय व सांस्कतिक गुणों जैसे सहजता, सरलता, निजता, तरलता और इन सब से उपर वीरता से मुंह कभी नहीं मोड़ा बल्कि जितने संकट आते गए उतना ही यहां की जनता का आत्मविश्वास बढ़ता चला गया। मैं स्वयं के बारे में साहित्यकार, विद्वान या इतिहासकार होने का भ्रम नहीं पालता परन्तु यह अवश्य कह सकता हूँ कि हरियाणवी संस्कति को पिछड़ी, फूहड़ और इस कल्चर को केवल एग्रीकल्चर कहने वाले लोग जो लेखक और विद्वान होने के लबादे ओढ़े हुए हैं वे शायद ये भूल जाते हैं कि कषि के बिना संस्कति संसार के किसी भी स्थान पर संभव नहीं है। पहले तो व्यक्ति को पेट भरने की समस्या का हल खोजना पड़ता है, उसके पश्चात् ही संस्कति की बात करता है। जहां अभिमान करना घातक होता है उससे भी घातक अपनी उपलब्धियों को नकारना होता है क्योंकि इससे हताशा और निराशा के कारण प्रगति स्वत: ही बाधित हो जाती है। आज ठीक ऐसी ही स्थिति हरियाणा की युवा पीढ़ी में घर करती जा रही हैं, जिससे युवा वर्ग हीन भावना से ग्रसित होता जा रहा है। विशेषकर हरियाणा में रचित साहित्य और बोली को लेकर इस हीन भावना का निदान आवश्यक है।

पिछले दो दशकों में हरियाणा के लेखकों ने जितने साहित्य का सजन हरियाणवी बोली में किया है वह इसे भाषा का दर्जा दिलवाने के लिए पर्याप्त हैं परन्तु यह प्रवाह निरन्तर अपेक्षित है। हरियाणवी बोली में अब तक लोकगीत, लोककथा, नाटक या अन्य प्रकार के लोक साहित्य के मुकाबले में उपन्यासों का लेखन काफी कम हुआ है। उपन्यास के नाम पर लिखी गयी कुछ पुस्तकें तो उपन्यास की श्रेणी में आती ही नहीं है। श्री जगबीर राठी का यह उपन्यास इस लोक साहित्य श्रंखला में एक अनुपम कति इसलिए है क्योंकि इसमें हरियाणवी जनमानस की मानसिकता के दर्शन होते हैं तथा ग्रामीण जनजीवन की एक सुन्दर झांकी है। इसकी सरल और सरस भाषा में जो प्रवाह बन पड़ा है वह हरियाणवी जीवन दर्शन का एक झर-झर बहता झरना है। लेखक ने कलिष्ठ शब्दों के माध्यम से अपनी विद्वता बघारने की बजाय ठेठ देहाती शब्दों, व उपमाओं का प्रयोग करके हरियाणवी जीवन दर्शन की झलक प्रस्तुत करते हुए अपनी मातभूमि और जीवनमूल्यों की रक्षा के लिए जीवन न्यौछावर कर देने की परम्परा को सुन्दर सलीके से चित्रित किया है। युद्धवीर और उसकी पत्नी दोनों मे किसका त्याग बड़ा है निर्णय करना कठिन है।

जहां श्री जगबीर राठी हरियाणवी रंगमच व कविता से राष्ट्रीय स्तर पर अपना मुकाम बनाने में सफल रहे हैं, यह कति हरियाणवी लोकसाहित्य में उपन्यास लेखन के क्षेत्र में उन्हें एक नई पहचान देगी ऐसी मेरी आशा है। इनकी लेखनी का प्रवाह हरियाणवी संस्कति के विभिन्न पहलूओं को उकेरने के लिए निरन्तर बना रहे ऐसी प्रभु से विनती है।

रामफल चहल
पं० लख्मीचन्द पुरस्कार से सम्मानित
लोक साहित्यकार
कार्यक्रम अधिकारी आकाशवाणी, रोहतक

मेरी ओर से

जब परम्परायें बड़ी स्वस्थ व रचनात्मक होती है तो उनको निभाने में बहुत आनन्द आता है। इसी परम्परा का निर्वाह करते हुये मैंने इस उपन्यास को लिखा। मेरे अपने परिवार में साहित्य लेखन की कोई परम्परा नही है। मेरी माँ सिर्फ पढ़ सकती है, लिख नहीं सकती मेरे पिता ने अदालतों में मुकद्मों की नकले लिखते-पढ़ते जीवन गुजारा। पर यहां मैं अपने साहित्यिक परिवार की बात कर रहा हूँ जिसमें मेरे कई अग्रज है, पिता तुल्य साहित्य-सन्त है जिनकी परम्परा को मैंने आगे बढ़ाया है। कम से कम अब मैं उन्हें बता सकता हूँ कि मैंने इस साल की जिम्मेवारी निभा दी है। ये मेरा पहला उपन्यास है, इससे पहले कविताये लिखी सबने उन्हें सराहा तो हौंसला बढ़ा। मैं हरियाणा की माटी की सुगन्ध का व्यसनी हूँ। मुझे अपना हरियाणवी होना तथा हरियाणा में पैदा होना एक वरदान की तरह लगता है। भौगोलिक दष्टि से दुनिया का सर्वश्रेष्ठ मैदानी क्षेत्र है मेरा प्रदेश - ये मैं मानता हूँ कोई और माने या ना माने, मेरा इससे सरोकार नहीं।

मेरी जन्मस्थली जीन्द ने देश को कई शहीद दिये है। कुछ बच्चे जो हमारी आंखों के सामने बड़े हुये वो इतिहास बन गये है जब उनके चित्र देखता हूँ तो अवाक रह जाता हूँ। इतनी छोटी उमर में पर्वत सा साहस शायद हरियाणा की माटी का ही असर रहा होगा। रायफल मैन आशीष कुमार, मेजर विनय चौधरी, मेजर राजीव दहिया जैसे अनेकों नाम है जिन्हें मैं कभी भूल नहीं पाता हूँ। ये उपन्यास उन सब की पावन खुशबुओं में रचा बसा है। आजकल मेरे आस पास बहुत धनात्मक और क्रियाशील लोगों का पहरा है। अत: उपन्यास लिखना मेरी विवशता भी हो गई थी अन्यथा वो मुझे अपनी बिरादरी से निकाल फैंकते। मेरा प्रयास रहा कि आप इस कहानी को पात्रों की बीच बैठकर अनुभव करें। इस कहानी में सभी पात्र सकारात्मक व साहसी है। बुरे लोग मेरे पात्र नहीं है, ना ही किसी को बुरा कहने का मेरा अधिकार है।

उपन्यास का कथानक सरल हरियाणवी में लिखने का मेरा प्रयास

रहा। फिर भी पाठक किसी हरियाणवी शब्द पर अटक कर उसका अर्थ आस-पास से पूछेगें तो मेरी योजना सफल रहेगी। इस उपन्यास की प्रथम पाठक मेरी पत्नी है जिसने हर पंक्ति हर संदर्भ को आम पाठक के नजरिये से पढ़ा और संशोधन भी किये। उसे मेरे लिखे शब्दों से प्यार है।

मेरा सबसे पहला धन्यवाद मेरे नन्हें बेटे चिन्मय को इसलिए है कि उसने लेखन के दौरान बार-बार मुझे तंग किया और मेरी कल्पनाओं को संजोये रखने की शक्ति का परीक्षण किया। मेरी इस रचना को डा० हरिश्चन्द्र वर्मा जैसे हिमालयी साहित्यकार का आर्शीवाद मिला है ये मेरे लिये बहुत बड़ा सम्मान है। पिछले दो दशकों से परम मित्र श्री रामफल चहल जी मेरा धन्यवाद इसलिए लौटा देते है क्योंकि हरियाणवी में हम जो भी लिखते पढ़ते है वो हमारी दिनचर्या का हिस्सा है। इस उपन्यास के लिये उन्होंने जो रूचि दिखाई शायद उसी कारण छप सका।

कुछ कला पुरूष बीच सफर में हमें उस समय छोड़ गये जब हरियाणा को उनकी सबसे ज्यादा जरूरत थी। कला पारखी स्व० श्रीयुत श्रीवर्धन कपिल जी व वरिष्ठ साहित्यकार श्री रघुबीर मथाना जी इस रचना से पहले ही चले गये इसका मलाल मुझे सारी उमर रहेगा। मुझे मालूम है अगर वो इस उपन्यास को पढ़ते तो मुझे किस कदर हौसला देते। आभार की श्रंखला बहुत लम्बी है। सभी मुझे प्यार करते है, ये मेरा सौभाग्य है। विश्वविद्यालय के तथा महाविद्यालयों के सैंकड़ों प्राध्यापक व हजारों छात्र-छात्राऐं मेरी रचनाओं को आदर देते है तो मैं गौरवान्वित महसूस करता हूँ। भगवान से इतनी ही प्रार्थना है कि मैं हमेशा अपने लोगों की कसौटी पर खरा उतरा रहूँ। विशेष आभार श्री हितेश गर्ग को इसलिए है कि उन्होंने व्यवसायिकता से अलग हटकर इस उपन्यास को कम्पूयटर से अंकित किया। आदरणीय श्री भूप सिंह गुलिया की आवरण कला से उपन्यास को चार-चाँद लग गए हैं, वे एक महान चित्रकार हैं उन्हें मेरा विशेष प्रणाम।

इस उपन्यास में जितने भी पात्र है वो सब मुझे अपनी-अपनी लड़ाई बड़ी वीरता से लड़ते नजर आते है। यह सही है कि उपन्यास के नायक का नाम युद्धवीर है परन्तु उपन्यास का शीर्षक उन तमाम युद्धवीरों की चर्चा करता है जो अपने-अपने मोर्चे पर डटे हुए है। यह उपन्यास आदरणीय श्रीवर्धन कपिल जी व श्री रघुबीर मथाना जी को मेरी पावन श्रद्धांजलि है, श्री रामफल चहल जैसे लोक साहित्यकार का साहित्य प्रेम, तथा श्री बलजीत मलिक की साहित्यिक चेतना है, इस उपन्यास में श्री परिवन्द्र पाल जैसे व्यक्ति का संघर्ष, राजकिशन नैन जैसे तपस्वी की कला साधना तथा महावीर गुड्डु जैसे महान लोक कलाकार का हरियाणवी के प्रति जनून है। यह उपन्यास श्रीमति शकुन्तला जैसी संघर्षशील महिला का मानवता के प्रति प्रेम है वहीं मेरे गांव में मिट्टी से सोना उगा रहे मेरे परिवार के लोगों का जीवन के प्रति संघर्ष है।

यह उपन्यास मेरे तमाम मंच के कवि मित्रों श्री राजेश जैन 'चेतन', श्री गजेन्द्र सोंलकी, श्री प्रताप फौजदार, श्री दिनेश रघुवंशी, श्री विनित चौहान जैसे साथियों का मेरे प्रति विश्वास है।

परम् आदरणीय श्री जगदीश मित्तल जी का स्नेह व सानिध्य इस उपन्यास की रचना में एक अह्म भूमिका रखता है।

यह उपन्यास मेरी जीवन संगिनी प्रीति का धर्म है जिसने घर के काम के साथ-साथ इस उपन्यास की कथा को एक उचित दिशा दी है। इस उपन्यास में मेरे परिवार का प्यार है, मेरी माँ का दुलार है वहीं नन्हें चिन्मय की निश्छल हंसी की ब्यार है।

ये विनम्र प्रस्तुति आप सबके लिए,

आदर सहित।

जीन्द, 07 मार्च

जगबीर राठी

1

अड्डै प टैम्पू रूक्या तो मैं उतर तो लिया पर पायां का जी लिकड़या जा था। सारै गात मै कांपणी सी चढ़ रही थी। टैम्पू आले ताहीं पचास का नोट तो दिया पर उसकै बाद दिमाग सुन्न हो ग्या।

"रै ओ भाई पैण्ट आले! ले आपणे बाकी पीसे - चल्या गया तो हाम टैम्पू आलयं! नै बेईमान बताओगे।"

थोड़ा सा ध्यान हट्या, सूटकेस ठाया अर गाल कै बीचों - बीच चाल पड़या। थोडी सी बार मैं वो घर भी आग्या जित मैं आपणै घराँ जाण तै पहल्यां जाया करता। दरवाजा बन्द था। शिखर दुफारी का टैम। गाल म्हं माणस, न माणस का बीज।

एक दो कुत्ते लड़ लड़ा कै गन्दी नाली कै पाणी म्हं पेट टेके बैठे थे।

मैं चुपचाप दरवाजे कै आगै खड्या होग्या। मन बहोत बोझिल सा होग्या था। यू दरवाजा कदे भी बन्द नहीं पाया करता, पर भाग का कुछ ऐसा चक्कर चाल्या के.......। मैं उल्टा ए मुड़ लिया, मन का दर्द आख्यां की कोरां पै आ टिका था। अचानक ताई के हासंण की आवाज आई। झटका सा तो लाग्या एक बै पर सोच्चा मन का भरम सै। पर नहीं.....

मैं झट तै उल्टा लपक्या।

दरवाजै कै हाथ लगाते ही वो खुलग्या। भीतर देख्या तो हक्का बक्का सा रहग्या। ताई सुजानी आपणै पोतै गेल्याँ कानाबाती करण लाग रही थी।

पूरा घाम तपदा हो हवा रुक री हो अर अचानक काली घटा छाज्या तो किसा हो!

मेरी हालत भी वैसी सी थी।

इसतैं पहल्यां मैं ताई तै बोलता, दूसरै कमरै मैं तै ताऊ जागे आग्या। मन्नै देखता ए भाज कै मेरे लिपटग्या। मुँह तै कुछ बोल ना लिकड़या ना ताऊ कै ना मेरे।

ताऊ की आख्यां तै गंगा बह चाली, जाणो कई दिन तै बान्ध की जकड़ म्हं थी। मेरे भी मन की जितणी व्यथा थी, वैं सारी पिघलगी.... गर्म-गर्म आख्यां का पाणी ज्यों-ज्यों लिकड़ै था, कालजै में सीलक पड़ दी जा थी।

ताऊ खूब रोया।

हामनै दोनूआं नै कुछ देर तक तो जाणो रुदन समाधि ले ली। कुण द ौरे से - कुण देखे सै, कौण के कहवैगा सारी बात, इसै ढ़ाल बिरथा होगी, ज्यूकर साधू खातर संसार।

आख्यां कै बहतै पाणी नै वर्तमान धुँधला कर दिया। अतीत की परछाई उसमैं दिखण लागगी।

2

ताऊ जागे के धोरै तेरहा किल्ले थे। सबके सब उपजाऊ। साल म्हं जो फसल बोई, कदे भी ना मुकरी। ऐब क्यायें का भी ना था। ६ फूट का कद। गाल, मुँह, का रंग सब इसे ढाल लाल रह्या करते, जाणो इबै बालक ऊहद करकै हटा सै। खेत क्यार की संभाल

तो पूरी करया ए करता पर ताऊ नै अपणी मूंछ भी उसी ऐ प्यारी लाग्या करती। एक मिनट मैं कम तै कम तीन बै तो उनकै ताव लाए लिया करता। निडर, साच्ची बात कहणियाँ, व्यवहार का पक्का और भी जितनी बात एक बढ़िया माणस पै लागू हों, वो सारी थी ताऊ जागे म्हं।

ताऊ कै गेल्याँ ब्याही आकै म्हारी ताई सुजानी तो कती निहाल होगी। सुजानी भी ठाड्डै घर की थी। खानदानी परिवार की गैरतमन्द बेटी। वैसे तो आगले घर मैं कोय भी दिक्कत, कयायें की कमी ना थी पर कदे थोड़ी बहोत उक-चूक होई भी तो आपणे घराँ जा कै सुजानी नै जुबान ना खोली।

म्हारा घर उनकै घर तै तीसरा था। हाम थे भी दूसरी कुढ़ी के, पर मन्नै वै आपणे बेटे जैसा मान्या करते। कदे तो उनकी बात म्हारै घरां म्हारी मां बताती, अरे कदे कदे जब ताऊ जागे मस्ती में होता तो आपणे पुराणे दिन म्हारै गैल्याँ बैठ के याद करता।

सब कुछ अनछुआ, पवित्तर सा। जब दूस्सर कै टैम जागे सुजानी नै लेण गया था तो बाहर घेर मैं खाट घाल दी थी। कालै अर लाल चैक की नई चादर, नया मटका, नया गिलास, इसा लागै था अक घर की हर चीज बटेऊ पै न्यौछावर थी। जागे के गेल्या फुलिया भी था। उसका एक मात्र गहरा मित्र।

“ले बैठ भाई जागे तेरे खातर नई चादर बिछा राखी सै“। “बैठ-बैठ फुलिये तू बैठ मैं एक बे गाम नै निहार ल्यूँ।“

फुलिया धम्म तै सूत कै पलंग पै बैठग्या - “हाय रै मरग्या रै“

चादर तलै कीकर की सूल बिछा राखी थी।

फुलियै कै इसी जगहां चुभगी अक किसे नै सहजे दरद भी ना बता पावै।

“हा-हा-हा तू के जाणे था मैं गाम निहाँरू था। रै बावले मन्नै तो शक सा तो पहल्या ए था।“

इतणी बार म्हं एक मीठी सी हंसी खिड़की कै रास्तै आई अर फुलियै कै दरद पै मरहम बणगी।

या खजानी थी.... सुजानी तै छोटणी।

“खड़ी रहो तू चाण्डाल छोरी“ जागे लपकया तो फुलियै नै हाथ पकड़ लिया -

“रै रहण दे जागे या तो सूल सूल के चाहे पूरी जेली मार दे, तो भी दरद ना होवे“

फिर एक जोरदार हंसी का दंगा सा होया‘ खजानी उन्नै चिड़ाती होई भाजगी।

सांझ नै जब वै घरां रोटी खाण गये तो इबकै सावधान थे, ठीक इसे ढ़ाल ज्यूँकर डांगरा के मेले म्हं व्यापारी पीस्सां नै ले कै सावधान रहवै से। फुलिया तो चौकन्ना इतणा अक जब तक जागे नहीं बैठ्या, खुद नहीं बैठ्या।

दूध का जल्या होया था ना.....।

घी, बूरा...... फेर आलू का साग.....

जागे टूक चबाण कै बहानै चौगरदे देखज्या था। सौपे की तरफ नजर जाती तो हल्की सी हंसी का आभास सा होवै था।

सासु बुढ़िया भी समझै तो सारी थी......

ये दिन सबमैं आये सै.......

एक हाथ तै ओल्हा करे बुढ़िया बीजणा हांकण लागरी थी। आख्यां म्हं बगावत होणी शुरू होगी।

सुजानी की घर म्हं बहोत अहमियत थी। सुजानी का बाबु मरे पाछै कुछ दिन तो मां का हाल ए बुरा था। भाई इतणा छोटा अक आपणे कंचया का हिसाब ना राख सकै था, फेर घर खेत नै के संभालदा। पर दुनियाँ की रीत,बेटी किसकै घर म्हं रही सै?

फुलियां खजानी गेल मगजमारी कर रह्या था। जागे नै बुढ़िया की हल्की सी सुबकी सुणी तो फुलिया ताँय बोल्या -

''चाल भाई उठ, इन्नै भी रोटी पाणी खाणा होगा''

साला दूध का डोलू ले कै आगे-आगे हो लिया।

अगले दिन जब चालण की तैयारी बणी तो गाम की लुगाई-पताई कठ्ठी होगीं। गीताँ के बोलां नै जाणो चुगरदै टैण्ट सा ला दिया। एक बै फेर वोह ए माहौल जी उठया। सुजानी का दुस्सर था यो। एक बड़ी सी पेटी अर बुढ़िया की लायक बेटी।

जागे बड़े संयम तै टैम काट रह्या था। आखिरकार टैम्पू आग्या। गाम के कुणबे के माणसां नै लाग कै सामान चढ़वा दिया। टैम्पू की छात पै सितारे लाग्या होया चरखा इसे ढ़ाल धर्‌या था जाणो किसी विजय-यात्रा की अजय पताका हो। सुजानी नै दामण कुर्ता कोन पहर्‌या, मन तो बहोत था पर जागे नै पहल्या ए सीझा दी थी।

''मन्ने बेरा सै दामण म्हं तू घणी सुथरी लागैगी, पर क्यूँ सबकी नजरां म्हं चढ़ै-रहण दिये।''

सुजानी दिन ढले सी खजानी गेल्या थोड़ी सी बार घेर की तरफ आई थी।

''मैं जाणूँ सूँ घर छोड़ कै जाण म्हं ब्होत हांगा लागै सै। पर तू चाल, एक नई दुनियां म्हारी बाट देखै सै''। मैं न्यू तो नहीं कहता के मैं तन्नै के सुख द्यूँगा, पर हां दु:ख नहीं द्यूँगा।

सुजानी मुँह बाये जागे की तरफ देखती रही।

खजानी हाथ पकड़ कै सुजानी नै खींच लेगी।

''चाल इब, माँ नै बेरा पटग्या तो छोह म्हं आवैगी।''

टैम्पू चाल पड़या।

फुलियां आगे बैठ्या था।

भाई पहल्यां तो बीच म्हं बैठ्या था, पर बालक का मन मचलग्या। बाहर की तरफ म्हं बैठग्या। जागे अर सुजानी साथ-साथ बैठगे।

घर तै स्कूल तक कच्चा रोड था। सड़क के डेढ़-फूट के खड्डे दूधिये बेशक सरकार नै गाली देते हों, पर ये खड्डे जागे अर सुजानी के प्रथम स्पर्श का कारण़ बणे।

सुजानी नै हल्का गुलाबी रंग का सूट पहरया था। मण्डी म्हं मंहगे तै महंगा सूट दुआ कै ल्याई थी मां। कदे बेटी बाप की कमी ना महसूस करै। जूतियाँ की चमक, अर सुजानी कै दुपट्टै के सितारां नै रंग बिरंगे रोशनी के गुच्छे दोनुआं कै चौगरदे पहरेदार बणा दिये। सुजानी बाहर लखावै थी, जागे सुजानी नै देखै था।

शब्द मौन थे, पर कोलाहल बहोत ज्यादा।

घर आग्या।

टैम्पू रुकग्या।

जीवन शुरू होण की दहलीज पै आ खड़या होया।

रूप दोनों का ऐसा कि लाख नजर उतार द्यां, फेर भी किते ना किते

डर बण्या रहै।

दुस्सर - सारै कुणबै के रंग-चाव की घड़ी। सुजानी नै आते ही टूमाँ का डिब्बा आपणी सासू के हवाले कर्या। पायाँ कै हाथ लाया।

तील आगले दिन खाटां पै सजा दी गई, बिलंगणी, हाथी घोड़े, झुणझुणे, आगलियां की तील, नाईण की, जमादरणी की, किते भी कोय कसर ना थी। कुणबे म्हं जितणे भी जेठ थे सुजानी के, वै भी बहानै सिर चक्कर मारकै आपणा हक बतागे। पर बढ़िया काम्बल थे बारहा। सबकै जी सा आग्या। सब मगन थे। सबकी नजर आपणी आपणी सौगात पै थी। जागे फुलियां हर की हेली की छात पै भीत की ओट ले के खड़ा-खड़या आपणै घर के आंगण म्हं पीढ़ै पै बैठी उसकी हमसफर नै बड़ी तसल्ली तै देखण लाग रह्या था। कोय लुगाई-पताई बीच-बीच म्हं सुजानी नै पाणी प्याज्या थी तो जागे कै बड़ी ठंडक पड़ती।

प्यार की फसल के बीज बहोत स्वस्थ थे, ईमानदार थे।

साँझ ढ़ली, रात होई।

बारह बजे पाछे तपस कम होई, पूरबाई का एक ठण्डा सा झोकां आया - मन शान्त होगे। गहरी नींद आग्यी।

3

सुजानी कै तीन बालक होये। दो छोरी, अर फेर एक छोरा। तीसरे बालक के बाद डाक्टरां नै हिदायत दी कि अब और बालक होये तो सुजानी की जान नै खतरा हो सकै सै।

“ओ हो, के खतरा होवैगा - घणे तै घणा मरूंएगी नै। पर एक बेटा

तो और जामल्यूँ“ - सुजानी नै तर्क दिया।

“घणी ना बोलै- ठीक सै एक ए भतेरा गुण करैगा तो। तू मरज्यागी तो औलाद नै के चाटूंगा“ - जागे बड़बडाया

जब घर म्हं काया और माया का सु:ख बणया रहै, तो जीवन का घोड़ा जवान बणया रहै सै और दौड़ भी कमाल की लगावै सै।

सब कुछ ठीक-ठाक था - जागे का मन, बच्चों का तन अर सुजानी के मन म्हं इन्सानियत और भगवान के प्रति लगन।

बड़ी छोरी सरला, उसतै छोटी सुनीता अर दोनुआं तै छोटा युद्धवीर। नाम चाहे हाम कितणा ए बढ़िया धरल्यां पर एक मिनट म्हं बिगड्ज्या सै - बड़ी छोरी नै सुर्रो, छोटणी नै काबर, अर युद्धवीर नै हाण्डू कह्या करता सारा गाम। सरला नै आपणी नानी - अर मां की ढ़ाल हर काम का सुहर था ज्यातैं उसका नाम सुर्रो पड़ग्या। सुनीता बोल्या बहोत करती, हर टैम चबर-चबर, ज्यातैं उसका नाम काबर पड़ग्या। अर युद्धवीर कदे घरां नहीं टिकाया। हाण्डता रहता, उसनै शौक था नई-नई जगह देखण का - हो सकै सै ज्यातै उसका नाम हाण्डू पडया हो। युद्धवीर आपणे बाप की मूरत था। उतणा ए लाम्बा होता आवै था। गोरा रंग, मूंछ जितणी भी आई थी कमाल की थी। गजब सुथरा जवान। काम का पक्का था। क्याये का ऐब नहीं था। एक ए ऐब था, एक तो गाणे सुणन का अर दूसरा हाण्डण फिरण का। पर कदे भी घर तै लुहक कै कोय काम नहीं कर्या। कुल मिला कै उसनै हाम जागे का सपूत कह सकां थे। पढ़ाई म्हं भी ठीक ठाक था। आठवी के बोर्ड के पेपर थे, पर बिना तकलीफ कै पाड़ लिये थे। दसवीं के पेपर होय तो महीना भर चौबारे म्हं ऐ धूणा ला लिया।

मैं उसतै तीन कलास आगै था। ताऊ मन्नै उसनै संभालणा का अर

सवाल समझावण का जिम्मा दे दिया करता। मन्नै भी युद्धवीर गाम के दूसरे बालकां तै न्यारा लाग्या करता। एक तो उसमैं दिखावा नहीं था, दूसरा जो काम ओट लिया, उसनै पूरा करकै दिखाता।

दंसवी का इम्तहान पास कर लिया। मन्नै सीनियर होण का फरज निभाया। युद्धवीर ताय कह्या अक रोजगार दफ्तर म्हं दसवीं की सनद दिखा कै नम्बर लुआ लाईये, के बेरा कद काम आज्या!

युद्धवीर शहर म्हं तो चला गया, पर ओ दिन उसकै जीवन नै़ बदलग्या।

शहर के स्टेडियम म्हं घणी ए भीड़ थी। बाहर घणी ए केलां की रेहड़ी खड़ी थीं। युद्धवीर नै छः केले लिये। नमक लगवा कै खाण लाग्या। रेहड़ी आला हल्का हल्का गाणा सा गाण लाग रह्या था।

"हां भाई या क्यां की भीड़ लाग री सै?"

"ओ जी फौज दी भरती हो री हैगी, तुसी भी जाओ"

वो समझदार तो था, पर अभी इतणा पक्या नहीं था। मन म्हं झाल उठी, अर स्टेडियम के भीतर। कोय ठाड्डा, कोय बोदा आपणां आपणां जेर सबनै ला राख्या था।

होणी आपणै बहल चलावै सै, कोय कित लग बचै।

युद्धवीर का मार्शल खून जेर मार रह्या था, शरीर भी चुस्त था, हाथ म्हं दसवीं की सनद। युद्धवीर भरती कर लिया। एक चिट्ठी सी पकड़ाई अर आण की तारीख बता दी।

कागज ले कै दौड़ता-दौड़ता स्टेडियम कै बाहर आग्या।

नींद सी टूटी, झटका लाग्या, सब कुछ एक सपनै सा था, पर सपना नहीं था।

सांझ होये सी घराँ आया।

"भाई घणी ए बार कर कै आया"।

चुप्पी साधे रह्या युद्धवीर

"दिन मैं किमे खाया था, अक नहीं?"

"क्या की चिन्ता हो रही सै?"

माँ पूछै जा रही थी, पर युद्धवीर चुप्प था।

जागे भी बुलध लेकै आग्या था खेत म्हं तै -

"आ रै तू आज भरती आलयां धोरे गया था"?

एक सवाल नै सारी परत खुद ब खुद उधेड़ दी।

"ओ सरूपै का छोरा बतावै था अक तू भरती आलयां की लाईन म्हं खड्या था"

"के होया, नाटगे के भरती तै?"

"अर न्यू कौण भरती करै था - आज काल तो हर काम म्हं सिफारिश. ...." जागे बोल दा जा रहया था।

"मै भरती कर लिया बाबू" - युद्धवीर नै सहजै सी बात काटी।

"विचार और अनुमान जब तक एक दिशा म्हं दौड़ते रहै तो कोय रोला नहीं, पर एक दम जब दोनू आमी स्यामी होज्या सैं तो जोरदार धमाका हौवै सै।

जागे गेल भी या ए बणी।

जो बात बड़े सहज भाव तै कह रह्या था, वा उलझन बणकै पायां म्हं उलझगी।

कुछ देर तक मुँह तै बोल नी निकल्या

सुजानी नै देख्या मामला कुछ रोल म्हं सै -

"कै होग्या? मैं भी तो सुणुँ"।

"भाई फौज मैं भरती होग्या" सुर्रो बोल पड़ी।

युद्धवीर चुपचाप खड़्या था।

सुजानी अनपढ़ जरूर थी, पर संस्कार अर व्यवहार गज़ब के थे उसमैं।

विचलित ना होई - "कौण पूछै सै इन कागज़ाँ नै, जाण की टाल करिये"।

उधर जागे कै मन का मन्थन निचोड़ तक पहुँचण आला था।

"सुर्रो की मां, जै हर कोय कागजां नै पाड़न लागज्या तो देश क्यूँकर चालै?"

युद्धवीर चुपचाप आपणै बाबू की तरफ देखण लाग रह्या था।

"उड़ै आपणै नाम की गेल्या न्यू भी तो लिखवा कै आया होगा ना अक तू जागे का बेटा सै!

जब राम आपणे सारे काम निश्चित करकै दिन काढ़ै सै तो हाम उसनै टालण आले कौण हो सका साँ।"

युद्धवीर चुपचाप अपने बाबू का यो नया रूप देखण लाग रह्या था। खेत म्हं हलाई काढ़ते-काढ़ते चौ० जागे राम सन्त भी हो ग्या था। बिना दिखावै का, सच म्हं माटी का बेटा।

अब सब कुछ चुप होग्या

काबर सुर्रो के नजदीक आकै खड़ी होगी। उसनै न्यू तो पता नहीं था, अक मामला के सै, पर किमे गंभीर बात सै, न्यू आभास जरूर था।

युद्धवीर था तो छोटा, पर दोनू बहाण उसकै अगल बगल आकै खड़ी

होई तो लगा कि भाई छोटा हो या बड़ा, बहाण के लिये एक गजब का सहारा अर सुरक्षा हो सै।

जागे नै माहौल बदल्या।

"रै के होग्या फौज म्हं माणस ए जाते होंगे - क्यू टैंशन कर रहे सो"?

अनपढ़ बाप की बातां मैं अग्रेंजी का शब्द अट्कया सुण्या तो सारे हाँस पड़े।

बिस्तरा, पेटी, गूंद के लाडू, अटरम-सटरम, जो कुछ भी जिसकी भावना थी, तैयार कर दी। काबर एक छोटी सी डायरी अर पैन ठा ल्याई। जिस दिन स्कूल मैं काबर नै ये दोनू चीज़ मिली थी, तो युद्धवीर नै वे छुपा दी थी। काबर बहोत रोई थी।

"ए मां हाण्डु नै मेरी चीज़ छुपा दी।" पूरी अदालत लागी। हाण्डू केस हार गया। काबर नै मुकदमा जीत लिया। डायरी अर पैन फिर से उसके कब्जे म्हं थे। जब युद्धवीर कै हाथ म्हं डायरी अर पैन थमाये तो हाण्डु की आख्यां म्हं पाणी आग्या।

"हे मेरी बेबे - मेरे भाग मैं कोय भी खुशी हो वा भी तन्ने मिलज्या"

दोनू बहाण भाई खूब गलै मिले रोये तो नहीं, पर कसर भी बाकी ना थी।

सुर्रो चुपचाप खड़ी थी। बड़ी थी सयाणी भी। वियोग के समारोह म्हं शामिल तो थी, पर आपणै आप नै बान्धे खड़ी थी। जागे नै बटुए म्हं त २० सौ-सौ के नोट काढ़ कै युद्धवीर कै हाथ पै धर दियें।

"रेल म्हं किसे तै घणा मत बतलाईये, कोय खाणै नै दे तो नॉट जाईये"

"आजकाल भरोसा कोन रह रहया"?

"खाण की सारी चीज़ धर दी सै, किसे का दिया होया क्यूँ खावैगा? - बावला सै कुणसा?" - सुजानी नै हांक लगाई।

मैं उस दिन उसे रेल म्हं था। गेल्या आया था युद्धवीर कै। युद्धवीर नै बताया "अक इब हाल तो ८ महीना की ट्रेनिंग सै, फेर छुट्टी आऊंगा। सुर्रो अर काबर दोनुआं का एक ए मांढ़ै ब्याह करांगे - बाबू कह रह्या था।"

रेल चाल पड़ी थी।

युद्धवीर के चेहरे पै तनाव तो नहीं था, पर कुछ सवाल से जरूर नजर आवैं थे।

4

सारी चीज उसे ए जगहां थी पर आज हर काम पै एक अजीब सी उदासी की चासनी चढ़ी थी। जागे भी बख्ते खेत म्हं तै घरा आग्या। सुजानी सारी समझै थी। उसनै आज पहली बार अपणा आदमी थोड़ा उदास दिखाया था।

"कै बात आज त तावला ए आग्या?"

"हाँ सुर्रो की मां - आज मन सा कोन बन्धया" - जागे नै उदास स्वर निकालया।

"मैं समझू सूं - जै न्यू ए करणा था तो नाट ज्याता उसे ए दिन क्यू भेज्या?" - सुजानी बोली

"बात उदासी की नहीं सै - बात खुद की इज्जत की हो सै। मन्नै आपणे बेटे की काबलियत पै कोय शक नहीं, उस जिसा बेटा तो राम

सबनै दे। पर जीवन म्हं एक काम उसनै आपणी सोच तै करया जै मैं छोह म्हं आता तो उसनै पाछै हटण की बाण पड़ ज्याती।

आदमी पहाड़ तै गिर के उठ सकं सै पर खुद की नजरां तै गिरा होया आदमी किसे दीन का ना होता।" - जागे की सोच बिल्कुल सुलझी होई थी।

"भगवान सु:ख राखैगा। नये गाम तै भी संदेशा आ लिया। तड़कै फोन आवै तो हाण्डू नै पूछ लिये कद छुट्टी मिलेगी?"

"उसे ए हिसाब तै ब्याह की तारीख........" सुजानी भीतर जाती जाती बोली।

उधर तै एक गीत उभरा....

"मेरा बीरा गया सै सासड़ फौज मैं...

इबकै छुट्टी आवैगा तो हाड्ड तुड़ा दयूंगी"

सुर्रो अर काबर चुन्दड़िया कै सितारे लावैं थी, अर गेले-गेले गीत की तान भी ला दें थी।

जब आदमी धोरै हो सै, उसकी बड़ी-बड़ी बात भी ध्यान नहीं रहती, पर जब आख्याँ ओझल हो ज्या सै तो उसकी छोटी-छोटी बात भी धरोहर बण ज्यां सैं।

"मां देख मेरी बन्दुक, इसनै मशीनगन कहवै सैं, इसमैं एक साथ पांच गोली चालै सै अर दस दुश्मन मरज्या सैं" युद्धवीर जब छोटा सा था तो बन्दुक का खिलौणा राख्या करता।

"रे बावले बेटा पांच गोलियां तै दस क्यूँकर मरेगे"

"पांच तो डर कै ए मर ज्यांगे तेरे बेटे ते" - युद्धवीर का बचपन बहोत प्यारा था।

सुजानी की आंखा म्हं पाणी छलक आया था। सोच्या - कुछ बात भगवान पहल्यां ए बता दे सै। म्हारै तो सपनां म्हं भी या बात ना थी अक वो फौज में जागा।

"लै सुर्रो की मां" - सुजानी का ध्यान टूटया

जागे कह रहया था -

"अड्डै पै जा सूं - फोन कर कै आऊंगा छोरे नै।"

5

सुर्रो अर काबर के ब्याह की तारीख धर दी थी। बीस एक दिन रहरे थे। मैं बाहर नोहरै म्हं बैठया था के ताऊ जागे आग्या।

"रै भाई तू के करैगा आज?"

"कुछ ना ताऊ बता...." मन्नै पूछ्या।

"फेर एक काम करिये तू ट्रैक्टर ले के टेंशण पै चल्या जाईये। आज युद्धवीर आवैगा।"

"ट्रैक्टर का के करूंगा, मोटर साईकिल ले ज्यांगा" मैं बोल्या

"रै नही बेटा - वो एकला कोनी उसकी गेल्यां उसकी युनिट के कुछ और फौजी भी आवैगें।

मैं बहोत राजी होया।

फटाफट ट्रैक्टर काढ्या - ट्रेली जोड़ी अर टेशण काहन हो लिया। रेल आगी....।

एक दो तीन चार पांच छह जवान उतरे।

सबतै बाद मैं युद्धवीर दिखाई दिया। सबके सब एक से दिखै थे। युद्धवीर का रंग कुछ काला तो हो रह्या था, पर गात तै ठाड्डा हो रह्या था। मन्नै रूक्का मारया तो सब के सब नै सामान उठाया अर ट्राली के म्हां। ट्रैक्टर चाल्या तो उनकी हंसी गुंजणी शुरू होगी। ट्रैक्टर के रोले में इस बात का तो नहीं बेरा पाट्या के किस बात पै हांसै थे, पर हंसी बहुत गजब की थी। वे फौज म्हं किस माहौल म्हं रहरे थे, इसका अंदाजा तो मन्नै हो गया था। ट्राली गाम म्हं बड़ते ही तो गजब होग्या।

"हाण्डू आग्या रै"

"गेल्या और भी फौजी सै" - गाम कै भी चाव चढ़ग्या।

जुण सी गाल म्हं कै ट्रैक्टर निकल्या, गाम के माणस गेल-गेल होन्दे चले गये।

ट्रैक्टर रूक्या तो सबके सब ट्राली पै टूट पड़े। कोय फौजियां गेल हाथ मिलाण लागग्या तो कोय इस होड़ म्हं अक कोण सा इनका सामान घर तक पहुचावैं। वै सारे जवान इस मेहमानवाजी पै गद्गद् होगे। उनमें दो मद्रास के थे, तीन हरियाणा के, एक पंजाब का सिक्ख था गुरप्रीत सिंह। युद्धवीर की गुरूप्रीत तै खास यारी थी।

सारे के सारे बैठक म्हं चले गये।

कोय लोटा दूध का ले रह्या, कोय उनके नहाण का प्रबंध करण लागग्या। सारै गाम नै बड़े आदरमान तै फौजियां का सत्कार कर्या।

गुरप्रीत बोल्या - "एक बारी मां नू मिल आईये। साढ़ी बैहणा तो भी

मिल लेने आ। चलो चलो।"

सारे के सारे घरां पहुंचे।

सुजानी कै जी म्हं जी आग्या।

भाज कै युद्धवीर नै पुचकारण चाली तो गुरप्रीत बीच म्हं आग्या।

"ऐ कि करदी हो मां जी। हुण ए अधिकार तो साढ़ा हैगा। पहले सानू आर्शिवाद द्यो बाद विच....।"

सुजानी के मुँह तै बोल नहीं निकलया।

युद्धवीर नै मां का काम आसान कर्‌या।

"मां ले, तू एक बेटे ने फौज म्हं भेज कै परेसान थी, इब कितणे ए और आगे।" जब मद्रासी फौजियां नै टूटी फूटी हिन्दी बोली तो दूसरे फौजी हांसन लागगे।

तो उनमैं तै एक बोल्यां -

"मां तो हर स्टेट की एक जैसी होती है युद्धवीर की मां तो हमारा मां"

शब्द अस्पष्ट थे पर भावना इतणी अचूक थी के सबकै दिल म्हं बसगी।

सुर्रो अर काबर दोनूं आई। आपणै भाई कै इस ढ़ाल चिपटगी ज्यूकर बांदरी का नान्हा बच्चा आपणी माँ के चिपटया करै।

थोड़ा सा भावुक, पर हंसी-खुशी का माहौल बणता चल्‌या गया।

जागे मण्डी म्हं तै उल्टा आया तो घर मैं चहल पहल देखीं। इसतै पहल्याँ कुछ बोलता, सारे फौजी चौगरदे आके खड़े होये, सबनै पा छुंये। जागे बीच म्हैं इसे ढ़ाल खड़या था ज्युँकर हरे-हरे करड़े डोडया कै बीच म्हं कपास का फोहा हो सै। युद्धवीर की अर उसके बाबू जागे की आंख मिली। चुपचाप रहे पर सब बतलागे, दिल की बात आख्यां कै रास्तै समझली दोनूआं नै।

सांझ सी होई तो फेर मेरी डयूटी लागी। उन सबनै मैं टयूबवैल पै लेग्या। उड़ै सबनै मस्ती करी। गेल्या रम की बोतल ले रहे थे। दो-दो तीन गिलास चढ़ा कै सब के सब रंग म्हं आगे। मैं उन्नै रोटी खुवाण खातर आपणै नोहरै म्हं लेग्या। युद्धवीर अर गुरूप्रीत घरां ऐ रहगे थे। युद्धवीर पिया नी करता अर गुरूप्रीत पक्का साथी था। रात नै आठ बजे का टैम होगा दोनू ताऊ जागे धोरै बैठक म्हं चले गये। युद्धवीर आपणै बाबू धोरै बैठ के छावनी की बात बतावण लाग्या।

"गुरूप्रीत भाई तू भी आपणै घर की बता"

गुरूप्रीत एक दम चौंक गया

युद्धवीर भी असंमजस सै म्हं होग्या।

गुरूप्रीत एक बै तो थोड़ा हंसा। फेर बोल्या - "मैं कि बतावां मेरी राम कहानी। घर में एक मां है जी और एक छोटी बैहण है। अपणी सरला जितनी। इस साल उसकी बी शादी करणी है जी"

जागे बड़ा सधा होया आदमी था। किसेके मन की बात जब्बै ताड़ लिया करता। गुरूप्रीत के चेहरै पै उभरी दर्द की लकीरा नै वो पिछाणग्या।

"बेटा युद्धवीर नै फौज की नौकरी शौकिया अपणाई। अर साची पूँछै तो खेल-खेल म्हं भरती होग्या पर......।

"तुसी ठीक समझ रहे हो जी' असी तीन ब्रादर सी गे। साढ़े पिण्ड विच दुश्मनी के चलते कत्ल होगें एक हुणे भी जेल विच है तो एक वाहे गुरू कौल। मेरी मां ने जिद्द कीती सौ मैं फौज विच आग्या।"

"बेटा, मां के बोल भगवान के बोल हो सै। अच्छा कर्‌या जो उसकी बात मानग्या।"

"पर हुण मैन्नु चिन्ता नहीं। एक और भाई मुझे मिल गया युद्धवीर"

माहौल फेर तै खुशनुमा होग्या।

उन दोनों को देख कै जागे कै चेहरे पर अजीब से सन्तोष के भाव उभर आये। बोल पड़ा -

"बेटा जो सम्बन्ध किसे मतलब तै बनाये जा सैं, उनकी उमर बहोत छोटी हो सै, पर जो सम्बन्ध मन की जरूरत हो सै, वे मरते दम तक साथ रहै सै। भगवान थारी दोस्ती बणाये राखै"

दोनू जणे उठ के चाले।

"ले जाऊ सू बाबू, उन्नै भी संभाल लू, कित लोट मार रे सै बेरा ना?"

ठीक सै बेटा - या लाइट कै हाथ मारता जाईये" - जागे नै सोवण की तैयारी कर ली।

अगले दिन बाकी सारे फौजी तो विदा हो लिये पर गुरूप्रीत गाम म्हं ए रहग्या। युद्धवीर मेरे धोरे आया अर पंजाब का गुरूप्रीत का पता दिया। मैं जाकै गुरूप्रीत की मां अर उसकी बहाण नै गाम मै ले आया। गुरूप्रीत की मां का नाम सुजानकौर था। यू भी अजीब संजोग था। एक सुजानी अर दूसरी सुजानकौर। दोनूं बुढ़िया एक ए दिन मैं इसी घुल मिलगी जाणो जन्म-जन्म की बहाण हो। वा पंजाबी बोलती तो सुजानी कती देसी, पर बात किते भी ना उलझती।

ब्याह की तारीख आण पहुंची। बड़ी धूमधाम तै बारात पहुंची। जब विदा का टैम आया तो विरह की बेदन आसूं बण कै गीतां कै लिपटती चली गई।

दोनूँ बहाण विदा होई। सुजानी कै किले के दो पहरेदार बदली करवागे।

कह्या करेंसैं जो माणस रो नहीं सकता उसके भीतर म्हं ढ़ीमरा पाकज्या सै और फिर औरत का तो दिल चिड़िया कै चीकलै की ढ़ाल्या हो सै।

जागे कितणा ए कढ़ा होया इन्सान था पर उसके दिल म्हं भी भावना एक अनमोल खजानै की ढ़ाल बसी थी। सबकै स्यामी सांस नही काढ्या। एक तरफ नै चल्या गया।

युद्धवीर अपने बाबू नै जाणै था।

पाछै-पाछै हो लिया।

सोपे म्हं नाज के ठेके कै सहारै लागकै जागे फूट पड्या।

युद्धवीर नै कान्धै पै हाथ धरया। मुड्या तो बाबु बेटा एक दूसरे म्हं समागे।

पर समझदार बाबू अर उतणा ए समझदार बेटा। जल्दी से दोनू संभले अर बाहर आकै लुगाई पताईयां नै चुप्प कराण लागगे।

गुरूप्रीत एक तरफ खड्या था। करता भी के, पर समझै सारी था। बहाण की गेल्यां एक जगह युद्धवीर गया अर दूसरी जगहां गुरूप्रीत। गुरू के बेटे नै कमी पूरी कर दी।

ब्याह का काम निपटग्या। ब्याह का अर ओलयां का तोड़या होया तीन दिन बाद दु:ख्या करै, पर जागे नै सारी चीज़ा की इतणी बढ़िया ढ़ालां तैयारी करी अक कोय परेशानी ना होई। भगवान की दया तै अगले घर भी बहोत बढ़िया पागे। छोरियां नै किसे चीज की तकलीफ ना थी। वै मां-बाप भी भाग्यशाली हो सैं जिनके बालक सु:ख की छां म्हं रहवै। गुरूप्रीत नै उल्टा आकै काबर कै सासरै की बात बताई तो सारे हांसते-हांसते लोटपोट होगे।

"मां जी कि दसां उनाने पूरी दे विच मेरे को रूई खिला छड्डी"

सुजानकौर ने हंस कर पूछा - "ते तू कि कीत्ता?"

"ओ बेबे मैंने भी कह दिया, हमारी बहण नूँ तंग ना करियो, मैंनू तो चाहे पूरी रजाई खिला दो"

सुजानी खूब हंसी।

युद्धवीर भी आग्या थ। उस गेल भी दो चार झटके होये। उसनै भी आपणे दु:खड़े सुणाये तो सबनै चटकारे लिये।

सुजानकौर नै टोक्या - "हूण ते आपणा बी ब्याह करवा लै"

युद्धवीर बोल्या - "हाम तो कट्ठा ए करवावागे दोनू भाई।"

गुरूप्रीत बोल्या - "ना भाई मैं तो तेरी शादी के बाद ही करवाऊँगा। भई मेरी शादी में मुझे काजल तो भाभी ही डालेगी ना?"

हंसते खेलते दो-तीन दिन बीत गये सुजान कौर नै जाण की जिद्द की - सुजानी नहीं मानी पर जागे नै समझदारी का भाषण झाड़या-

"रै जाण दे भागवान, तन्नै सारै माहौल का बेरा सै फेर भी?"

युद्धवीर बोल्या - "चालो, मैं थारै साथ चालूंगा।"

गुरूप्रीत नै चुप रहकै भी सवाल सा कर्या?

सुजानकौर के चेहरे पर भी चिन्ता उभर आई।

युद्धवीर तपाक से बोल्या - "भाई भी कहवै सै, अर दूर भी राखणा चाहवै सै। या तो बात जायज कोन्या भाई।"

जागे नै भी हाँ मैं हाँ मिलाई।

गुरूप्रीत व सुजानकौर चुप थे।

युद्धवीर की इन्सानियत भरी पेशकश थी।

जागे की उसपै सात्विक मोहर थी तो कैसे मना होती।

सुजानी भी बोली - "सब भली करेगें करतार" चालण की तैयारी बणन लागी।

बाहर हलवाई आ रहया था आपणे राछ भान लेण। जागे नै अलमारी मैं तै पीसे काढ़ कै उनका हिसाब भी कर दिया। कुछ पीस्से युद्धवीर तांय दिये।

6

युद्धवीर, गुरूप्रीत सुजानकौर अर गुड़िया टेशण पै उतर कै बाहर आये। टेशण तै थोड़ी सी दूर गाम म्हं जाण आले टैम्पू खड़े थे। एक सुथरी सी सरदारनी दूर खड़ी टैम्पू की बाट देख रही थी। युद्धवीर नै बैग ठा लिया तो मां नै टोकरी सी ठा रखी थी। इतनी बार म्हं दो पल्सर मोटरसाईकिल पै पांच छह मुस्टंडे से आये अर उस सरदारनी गैल्यां हरकत करण लागगे। उसनै विरोध कर्या, पर वे घणे थे। टैम्पू आले भी खिसकन लागगे। युद्धवीर अर गुरूप्रीत की पीठ थी उस ओर।

अचानक गुड़िया चिल्लाई - "बेबे ए तो सुखबिन्द्र है"

सुजानकौर भी सहम गई - "हाय नी बैरियां दी कुड़ी, इत्थे की कर दी है?"

युद्धवीर और गुरूप्रीत मुड़े।

एक सैकण्ड में ही संस्कारों ने व्यवहार पै जीत हासिल कर ली।

गुरूप्रीत चिल्लाया - "ओय तुहाडी मौत आई है। साढी बैहण नूँ जलील करदे हो कंजरो"

सुखविन्द्र नै गुरूप्रीत को देखा - भूल गई ये दुश्मनां का बेटा सै।

"वीरे! मेरा वीर आगया हुण तुसी जान बचाओ"

फिर तो युद्धवीर और गुरूप्रीत नै उन मुस्टड़ाँ की ऐसी ठुकाई की के

अंजर-पंजर अलग अलग। दस ए मिनट मैं दोनू फौजियां ने कोल्हू सा उधेड़ दिया। इब तो टैम्पूआं आल्यां नै भी हाथ साफ कर्‌या। मोटरसाईकिल छोड़ कै भाजगे दुष्ट।

गाम आला टैम्पू चाल पडया। सुखविन्दर चुप बैठी रही। सुजानकौर भी कुछ ना बोली।

गाम म्हं आकै सुखविन्दर आपणै घरां चली गई। गुरूप्रीत नै भी घरां आकै ताला खोल्या। सुजानकौर चौके की ओर बढ़ गई। युद्धवीर अर गुरूप्रीत ने पानी के ड्राम में बचे होय पानी तै स्नान करया। नहा ध ाो के दोनू खाट पै जमगे। गुड़िया बोली - "मैं पानी ल्यानी हां"

जैसे ही ही गुड़िया घर तै लिकड़ी उसके मुँह तै चीख निकली -

"हाय नी बेबे दुश्मन आये ने!"

दोनों चारपाई तै उछल पड़े।

गुरूप्रीत भीतर तै किरपाण काढ़ ल्याया। युद्धवीर नै भी कुण मैं धरया फरसा ठा लिया।

"ले भाई गुरूप्रीत आज यू झंझट खत्म कर कै ए कैन्ट म्हं चालांगे"

सुजानकौर भी भाज कै जेली ठा लाई। वे पूरे दस बारहा थे। सबकै हाथ मैं हथियार कोय छोटा कोय बडा। गुरूप्रीत नै किरपाण पै पकड़ मजबूत करी तो युद्धवीर नै भी फरसा उल्टा पल्टा करया।

"सुजान कौर"

बाहर तै कठोर आवाज आई

गुरूप्रीत लपका तो मां ने रोक लिया

"तू ठहर एं तो बाबे दी आवाज है"

सुजानकौर जेली ले कै दरवाजे के बीचो-बीच खड़ी होगी।

दुश्मनां का सारा टोल सुजानकौर के स्यामी आ कै डटग्या।

उनके बड़े - बूढ़े नै किरपाण ली अर सुजानकौर के पायां मैं धर दी।

"ए लै गुरूप्रीत की मां, आज से सब दुश्मनी खत्म। आज तुहाड़े पुतर ने हमारे खानदान की इज्जत बचाई है। गये हुए बन्दे ना हमारे आ सकते है ना ही तुहाडे। पर हुण और कोई मार काट ना होगी"।

एक - एक करकै सबनै हथियार छोड़ दिये।

आहिस्ता-आहिस्ता गाम जुड़ग्या औड़ैं

सबनै यो सीन देख्या तो खुशी ते भर गये।

बीच मैं एक सरदार ने जयकारा लगाया "जो बोले सो निहाल!"

स्वर गुंज्या - "सत श्री अकाल!!

भीड़ म्हं तै निकल कै सुखविन्दर आई अर गुरूप्रीत नै रोती-रोती बोली

"आज उस जगहं मैं तुहानू देख तो लिया सी पर मैनू ए भरोसा नही सीगा के तू बैरी हो के भी मेरा वीर है।"

"अरी पगली बैहणे - हमने एक गांव की मिट्‌टी में जन्म लिया है। सच्चे वाहे गुरू दी सो तेरी तरफ कोय नजर चुक के वेखेगा तो मैं उसकी आंखे फोडू दूंगा।"

तीसरे दिन युद्धवीर उल्टा गाम मैं आग्या। दो दिन पंजाब म्हं रहया। गाम मैं घूम्या। गुरूप्रीत नै आपणे खेत दिखाये।

"म्हारै तरफ लुगाई कमावै सै, पर आड़ै लुगाई तो बस घर ए संभालै सै"

"घर संभालना भी तो एक पूरा जिम्मेवारी का काम सै"

और कई इसी इसी बाता का मिलान भी वै दोनू करते रहे जो दोनू

सूबयां की साझली थी।

युद्धवीर नै घरां चालण की तैयारी बणा ली।

गुरूप्रीत अड्डे तक छोड़ण आग्या। टैम्पू मिलग्या गुरूप्रीत नै विदा ली।

"मैं घरां जा कै तन्नै फोन कर द्यूंगा।"

"तू कद आवैगा"

"हफता एक तो लाऊगा घरे। फेर एक बार जेल भी जा कै भाई जी को मिल के आवाँगा"

युद्धवीर थोड़ा सा झिझका।

"कोय बात ना। सब ठीक हो ज्यागा।"

टैम्पू चाल पड्या।

रास्ते में युद्धवीर सोचता रह्या। चलो अच्छा होग्या गुरूप्रीत की या दुश्मनी आली रड़क भी खत्म होगी। घर पहुंचा तो सारी बात आपणे बाबू आगे बताई।

"चलो ठीक करया। संकट मैं जो गेल खड्या हो वो ए सच्चा साथी"

"आ रे इब लुहक छिप के तो वारदात नहीं कर दे कदै"

"ना सुर्रो की मां - दुश्मनी का भी आपणा स्वभाव हो सै। जब दिल का मैल साफ हो ज्या तो उसके बाद कोय कसर बाकी ना रहती"

रोटी पाणी खा कै जागै नोहरै म्हं चला गया। सुजानी अर युद्धवीर बात करते रहेगे। मां बेटे नै घणे दिन म्हं फुरसत मिली थी। युद्धवीर नै फौज की बात बताणी शुरू की तो सुजानी की उत्सुकता बढ़ती गई। रात के तीन बजे तक मां की गोदी म्हं सिर धर के बेटे नै छावनी के सारे चित्र खींच दिये। एकाधी बात पै मां का मन पसीज्या

तो किसे किसे बात पै मां ने शाबासी भी दी।

शिखर म्हं हिरणी आगी।

युद्धवीर किस टैम सोग्या उसनै ठीक सा याद ना था।

7

मैं बेशक तै शहर मैं पढ्या, पर कुछ बातां तै मेरा खास लगाव था। गाम गवांड म्हं जब किते रागनीयां का प्रोग्राम होता, मेरे भी चसक रहती। मन्नै बेरा पाटया अक राजपुरै म्हं बाबै नै मन्दर म्हं रागनियां का प्रोग्राम करा राख्या सै तो कला प्रेम फड़कन लागग्या, घर के मना कर्‌या करदे। पर इबकै एक जोर का बहाना लाया -

"ऐ री मां ओ युद्धवीर नी सै"

"कौण हाण्डू?"

"हां मां ओ न्यू कह रहया था अक मन्नै आज तक रागनीयां का प्रोग्राम ना देख्या, उस गेल जाणा पड़ैगा।"

"इब तन्ने नाम इसै बालक का ले दिया तो के कहूं?"

"चले जाओ अर किसे गेल रोला राला मत करियो इब बखत नहीं सै इसा ए काम हो रहया सै"

इतणै मैं युद्धवीर घरां ए क्यू ना आज्या

इब मेरी हालत खराब।

"आ रे तू कद तै रागनीयां का शौकीन हो ग्या रे हाण्डू"

"कदे तै बी ना, कौण कहवै था?"

मर्न्न लाग्या मेरी झूठ पकड़ी गई

"तु ए नै कहै था उड़ै फौज म्हं रागनी सुनानी पड़ज्या सै एकाधी बर तो बड़ी शरम आवै सै, मन्नै सोची ले एक आधी बात सीख ज्याँगा। फेर भाई तेरा कोय इन्ट्रेस्ट ना सै तो रहण दे। मेरे पै तो रात नै वैसे भी ना जाग्या जाता"

युद्धवीर सारी बात ताड़ग्या।

"ना ना के दिक्कत सै, एक आधी बै रौनक मेले देख लेणे चाहिये।

"थाम सारे एक ए बेल के तोड़े होय सो" - मां नै हल्का सा थप्पड़ उसकी कमर म्हं मार्या।

"ले थम जाओ मैं दूध ल्याऊँ सूँ कढ़ोणी म्हं तै काढ़ कै" - मां की पौष्टिक सजा थी या।

मोटरसाईकिल पै बैठ कै हाम दोनू एक बजे उस गाम म्हं पहुंचगे। डेरा आलै बाबै नै भण्डारा ला राख्या था। एक चेला म्हारी जाण पिछाण का था। दूसरा उसनै न्यू पता लाग्या के एक फौजी भी गेल्यां सै फेर तो ओ बिछग्या। भण्डारै म्हं वी. आई. पी. ट्रीटमैन्ट दे दिया शेर कै बच्चै नै। पूरी थी, पेठा का साग अर देसी घी के लाडू। हाम दोनूआं नै तलै बैठ कै पतल बिछा कै भण्डारा का प्रसाद छिक कै खाया। इतणी बार म्हं उड़ै रागनीयां की पार्टी भी आणी शुरू होगी। सबतै पहल्या पोहंचे मास्टर जी अर उनकी पार्टी। युद्धवीर थोड़ा सा जिज्ञासू था। मेरे तै पूछी तो मन्नै उसतायं बताया अक मास्टर जी नै सैकड़ाँ किस्से गा राखे सै। फेर शीशपाल की पार्टी अर फेर जब कविता चौधरी की पार्टी आई तो किलकी पाटी। बाबा भी भण्डारा छोड़ कै बाहर भाज्या आया।

"रै के बिजली पड़ग्यी?

"कुछ ना कविता चौधरी आई सै महाराज"

सन्यासी झेंपग्या, दुनिया दारी की एक लहर चेहरे ने भिगाती होई लिकड़ग्यी।

"चलो ठीक होग्या - इब सत्संग आच्छा हावैगा"

बाबा नै बात टाली पर औरे धोरे खड़े टोल की किलकियां नै बात तलै ना पड़ण दी।

मन्दर कै बाहर एक स्टेज बणा राख्या था। मण्डी म्हं तै लोड स्पीकर आला भी आपणा तामझाम ले कै पहुंच गया। तीन पहियां आलै माच्छर कै पाछै जनरेटर बन्धया था। जब गाम म्हं आया तो आच्छे भुंडे, सिनकले - भिनकले सारे बालक उसकै पाछै-२ किलकी मारते हुए चाल पड़े। बाबा उसनै छोह म्हं आया। पर लोड स्पीकर आलै का तो रोज का काम था।

"ओ बाबा जी पांच मिनट म्हं सारा काम फिट कर दूंगा"

बाबा जी नै चोगै की गोज में तै एक पुरानी सी कैसेट काढ़ी

"लै ये चलाईये मेरे गुरू जी के शब्द सै इसमै"

गाम जुड़ना शुरू होग्या।

वै शराबी भी डेरे कै धोरे आण जमे, जुणसे घरक्याँ नै खोसड़े मार-मार भजा दिये थे।

एक दो घण्टया ए म्हं उड़ै आच्छी चोखी भीड़ जमा होगी। बालक स्टेज के चौगरदे आपणे आपणे प्लाट काट के बैठगे।

"शुरू करो शुरू करो"

सदन नै आदेस देणा शुरू कर्या।

पार्टियाँ नै भी रोटी पाणी खा लिया था।

बाबा जी का वो चेला इब भी म्हारी सेवा पाणी म्हं लाग रह्या था। उसनै स्टेज के धोरे दो कुर्सिया का जुगाड़ कर कै मैं अर युद्धवीर उसपै बिठा दिये।

मन्नै तो ये बिघन कई बै देख राखे थे, पर युद्धवीर खातर यो नया सा ए काम था।

युद्धवीर कै स्वभाव म्हं एक बात गजब की थी, वो ना तो घणा सा खुश होया करता अर कदे घणा सा दु:खी भी ना देखा। हांसण की बात पै हांसता खुल कै, कोय बात दुनियादारी की व्यवहार की होती तो ताऊ जागे की झलक उसमैं दिख्या करती।

कुम्हारां कै तै कोरे मटके आगे। पार्टियां के साजिन्दां नै आपणी आपणी होशियारी अर गुण के हिसाब तै घड़वे छांट लिये। घनखरे तम्बाकू पी रे थे। एकाधी बै धुमा हवा के बट म्हारै कान आता तो युद्धवीर नाक सिकौड़ता।

"यू किसा धूम्मा सै? - सिर म्हं भड़क सी करै सै"

"सुल्फै की छींट ला रहे सै बटें" मैंने वो समझाया।

युद्धवीर नै कोय घणा सा विरोध ना कर्‌या। शायद उनकै धन्धै की मजबूरी हो, न्यू सोच कै चुप होग्या। घड़वे बधंगे, बैन्जु आले नै एक फिल्मी धुन बजाई। घड़वां की गुंज का चौगरदे राज होग्या। पिछले साल बाबा जी नै एक भजन पार्टी बुलाई थी तो बतावै हैं अक सारे पचास साठ आदमी जुड्ये थे। भण्डारै का सामान भी बचग्या था। पर इबके कुछ नये से बालकां की चपेट म्हं बाबा आग्या। किमै पीस्सा तो बाबा पहल्या ए जोड़ रह्या था। अर किमे औरै धोरै ते कट्ठे कर लिये। गाम के कुछ बुजुर्गों नै एतराज भी जताया था पर बात सिरै नहीं चढ़ी।

इतणी बार म्हं एक नया सा छोरा माईक पै आया।

शक्ल तै सुथरा पर कती देसी।

उसनै आपणे चुटकुले सुणाने शुरू कर दिये।

कुछ नये कुछ पुराणे।

पर सब मस्ती कै रंग म्हं थे। हांसै थे तो बस तूफान सा आवै था। युद्धवीर अर मैं भी कुर्सी पै बैठे-बैठे जी सा ले रे थे।

नया चुटकुला शुरू कर्‌या...

एक वै एक गाम मै......।

"रै क्यू फद्दू बणा रहया सै? बैठज्या जनानिये से"

पाछै तै एक आवाज आई, जोर का ठहाका गुंजया

"धो दिया रै" - दो चारयां नै समर्थन कर्‌या?"

चुटकले बाज भी पक्का था

"क्यूं तेरे पूंछड पै पा धरे खड़ा सूँ कै"?

फिर हंसी का झोंका आया

" ना पूझंड तो तेरी बेबे तायं पकड्या राख्या सै"

मामला मर्यादाये तोड़ता नजर आया तो दोनू पक्ष शर्मिन्दा से होये। बाबा जी स्टेज पै आये-

" दिखे भाईयों! यू धार्मिक काम सै इसका रूप ना बिगाड़ो"

दो चार्‌याँ नै हां भरी। दो चार्‌या नै दोनू तरफ के स्वाद लिये।

युद्धवीर अर मन्नै ओ चेला फेर बुला लेग्या।

"चालो थामनै दूध प्या ल्याऊँ, इबै तो काम जमदा सा जमैगा"।

मै अर युद्धवीर दोनू उठ कै उसकै गेल हो लिये।

उनकी बैठक पै ताला लटकै था तो वो हामने ले कै घर काहन हो लिया। मैं उनकै घरां एक दो बार पहल्यां भी जा रह्या था। भगता नाम था उसका। धर्म-कर्म कै काम म्हं आगै तो रह्या करता। घर म्हं बड़ते ही उसनै आवाज लगाई

“ए कित गये ए सारे?“

“आऊँ सूँ भाई!“ भीतर तै एक आवाज खनकी।

इतणी बार म्हं लाईट चली गई।

“घुप्प अन्धेरा।

“खम्बै पर तै तार हटगी, ले मै देख कै आऊँ“

“तू एकला चोट खावैगा, चाल मैं भी चालू“

युद्धवीर एकला रहग्या

युद्धवीर नै कुछ ना सूझै अक खड्या रहूँ अक बैठूँ।

इतणी बार म्हं माचिस की सींक जली। मोमबती की बाती तै बतलाई। युद्धवीर नै देख्या - कोय सै। मोमबती की रोशनी मुड़ी तो युद्धवीर बुत सा बण गया।

मोमबती की रोशनी म्हं... दो मोटी-मोटी आंख, काजल डाली होई...

बालां की एक लट चेहरे की पहरेदारी करती होई

रंग-रोशनी की लाली अर गोरा-रंग

मिल कै इसा काम हो रह्या था जाणो सुनार नै इब्बै सोना तपाया हो।

५ फूट ७ इंच का कद

ना ठाड्डी ना माड़ी

युद्धवीर भी कम सुथरा ना था। जब हल्की सी रोशनी उसके चेहरे पै पड़ी तो इसा सा लाग्या जाणो कोय देवता रात कै अन्धेरे म्हं वरदान देण आया सै।

समय थमग्या

सिर्फ मोमबती की लौ हालै थी बाकी सब कुछ पत्थर।

दोनुआं कै मुंह तै बोल ना निकल्या।

इतणी बार म्हं लाईट आगी।

“सब कुछ लठां तै चाले सै, बीस कम्पलेन्ट कर आया पर कोय आके नहीं चालता। हर रोज ताराँ गेल लठमलठ“ - भगता बड़बड़ाता हुआ आया।

“चलो आगी, इब क्यूँ टैंशन ले रह्या सै“ मन्नै भगता समझाया।

“ए सवर्णा....“

युद्धवीर के जी म्हं जी आया....

भीतर ए भीतर नाम बोल के देख्या “स्वर्णा“

“जा किमे दूध दाध ल्या“

“लांऊ सू भाई“

“या रोहतक पढ्या करै। मेरे आले बालक घराँ जा रहे थे। या मन्नै बुला ली, दो चार दिन रह लेगी। फेर इनके पेपर प्यापर भी सैं“ - भगतै नै सरसरी जानकारी दी।

युद्धवीर चुप था, पर चेहरे पै अलग सा रंग था। थोड़ी सी बार म्हं दूध आग्या।

युद्धवीर बेशक सिर झुकायै बैठ्या था, पर दो तीन बै स्वर्णा नै देखग्या।

“ए स्वर्णा इसनै घणा प्याईये। यू फौजी सै, नाम तो मन्ने भी ना बेरा इसका....

“युद्धवीर“ युद्धवीर अर मैं कठे बोल पड़े।

स्वर्णा के चेहरे पै भी इसे ढाल सन्तोष दौड़ग्या जाणो हिसाब की कोय थ्योरम सुलझगी हो।

दूध खत्म होते ही भगता बोल्या ’ लै चालो, उड़ै भी संभाल ल्यां, महाराज का के हाल सैं?

युद्धवीर उठ्या तो जरूर, पर जाणो आत्मा उड़ै ए रहगी। दरवाजे पै आकै मुड़या तो प्रेम ग्रन्थ की भूमिका भी लिख्यां गयां। दो बेहद सुन्दर रचना थी वै भगवान की, शायद मिलणा ए था। डेरे पै पहुंचे तो रंग जम चुक्या था। हाम फेर उनए कुर्सियाँ पर जा जमे। भगतै की डेरे म्हं आच्छी चाल पूग थी।

रागनियां का आज कै दौर म्हं रूप बदलग्या था। “पहल्या सांग होया करते पर आजकल सांगी बेचारे भूखे मरै सैं। यू नया ए सौदा चाल पड्या“ - बराबर म्हं बैठे एक बुजर्ग नै ठंडी सांस भर्यी। “वो श्रद्धा का दौर था यू बाजार का दौर सै ताऊ“ मन्नै बात रलाई तो उसनै सिर हलाया।

इब तक मेन गायकां का नम्बर नहीं आया था। कुछ सीखदड़ गायकाँ ने शुरू-शुरू म्हं आपणा हाथ साफ कर्यां। एक आधै नै ढ़ंग की बात करी तो रागनी पूरी सुणाग्या। नहीं तो बीच म्हं ए फुस्स होग्या। तुरन्त फैसला होज्या था। जुणसे नये गायक थे उनके चेहरे प भय सा था, पर जो पुराने खर्राट थे - उन्नै स्टेज का हिसाब था। शीशपाल एंड पार्टी की बारी आगी।

साजिन्दा नै एक साथ मिल कै गजब की धुन लगाई।

“मन्नै सुमर लिये जगदीश........... सतगुरू मिले......“

गायक नै आपणी वन्दना करयी। आंख खोली। दर्शकां की मन की बात ताड़ण खातर दोचार स्वागत की भी बात करी। एक दो खड़े थे आस पास, वै सारे गायक के चुटीले डायलांगाँ का शिकार हो कै रहगे। इन गायकां का भी अजीब हिसाब हो सै। राम का नाम लंदे लेदें कद गोबर चौथ की बात करज्याँ कोय भी अन्दाजा नहीं लगा सकदा।

“ओम नाम सबतै बड़ा.......“

“हां भाई बैठज्या नै के चौथ करकै बैठेगा?“

जोरदार ठहाका लगा।

गायक नै सत्ता संभाल ली।

रागनी म्हं सबतै पहला शिकार शराबी बणे

“लूट लिया यू देस रे इस दारू नै
टुन्न बणा दिया देस रे इस दारू नै“
ताऊ तेरे थे जब जाम चले,
तेरा कुणबा ढ़ोवै था खेत म्हं डले,
रल मिल कै करी थी फसल तैयार
फेर करण चल्या था तू व्यापार
बाबू मेरी जूती ल्याईये बाबू मेरा कुर्ता ल्याईये,
पांया के म्हां पड़गे छाले, बढ़िया सी जूता ल्याईये....
...“

युद्धवीर नै पूरा ध्यान गाणै के बोलां पै ला राख्या था। चौगरदे हां हल्ला था पर वो बिल्कुल शान्त सा, सात्विक सी हाजरी भरण लाग रहा था। निश्छल सा पर मजबूत भी, जाणो रावण के दरबार मैं अंगद सा।

"कित के कुर्ते कित की जुती
पी ली दारू अक्ल फुट्यी
पी कै दारू तू तो पड़ग्या,
तेरी गोज तैं बटुआ गीरग्या,
खाली रहग्या तेरा झोला,
किसकै गेल्या करैगा रोला,
लूटवा दिये चादर खेस रै इस दारू नै....
टुन्न बणा दिया देस रै इस दारू नै.....।"

गायक नै पूरा हांगा ला राख्या था, पर कुछ मदमस्त हाथियां कै ये बोल ना खटाये। वै पाछै तै चिंघाड़े " रै कविता चौधरी नै आण दो। दारू आल्या कै क्यू पाछै पड़ रहे सो?"

बस फेर के था, एक दम दंगल पाटग्या

"बैठ जाओ रै बैठ जाओ रै" कुछ लोग स्वाद ले रहे थे। हाम दोनूं चुपचाप कुर्सियाँ पै बैठै नजारा ले रहे थे। इतणी बार म्हं एक बालु रेत तै भरी थैली आई अर उस गायक के सिर पै लाग कै पाटगी। धूलम-धूल.... गायक का मेकअप होग्या। अर फेर जो हंसी का बवंडर चाल्या तो पूछो मत। खुद गायक भी हांस-हांस कै लोट-पोट होग्या।

बाबा बोल्या - "रै तू क्यू हांसै सै गधे?"

गायक बोल्या - "मैं तो न्यू हांसू सूँ अक शुकर सै या बालु रेत की थैली थी".......

"बाबा कुछ देर तो बात समझ नहीं पाया, अर समझ आई तो बाबा जी की हालत खराब। हंसी का जश्न हो रह्या था। या म्हारे लोगां की जीवट सै। कद किस जगहां माहौल नै बदल दे - कौय कुछ नहीं कह सकदा।

मंच पै गायक बदल्या।

मास्टर जी अर उनकी पार्टी आगी।

इब तक जो माहौल चाल रह्या था, उसनै देखे इसा लागै था अक बात ये मास्टरजी की भी ना सुणै पर गजब का रूतबा था गायक का।

मंच पै आते ही सब कुछ शान्त होता चल्या गया। मास्टर जी के आते ही संगीत नै अपणा करिश्मा दिखाया। सब के सब लय म्हं आगे। मास्टर जी नै सरस्वती वन्दना की और गुरू का नाम ले के बोलें

"आदरणीय साथियों, यू धार्मिक काम सै, अर धर्म ना बिगड़ै तो ए म्हारा भला"

बाबा जी नै भी सहारा मिल्या।

"म्हारी धरती ऋषि मुनियां की धरती सै पीर फकीरा की धरती सै - बहादुरां वीरां की धरती सै"

मास्टर जी ने बेरानी कित ते बेरा काढ़ लिया था अक युद्धवीर फौजी सै"

"आज मंच कै धोरे म्हारै हरियाणा का वीर फौजी भी बैठ्या सै। मैं एक बै फौजी भाई का स्वागत करणा चाहूं सूं"

सबनै जोरदार ताली बजाई।

देशभक्ति की मस्ती सब मस्तियां तै उपर हो सै या बात आज सिद्ध फैर तै होई। इब तक जो लोग धुलिये मारे थे वे ए लोग युद्धवीर के सम्मान मैं खड़े होगें सिर्फ इतणा जाण कै अक यो फोजी सै। मास्टर जी नै तान छेड़ी -

"जय-जय हिन्द के वीर जवान
खूब गजब की तेरी शान

तेरी सूरत पै जाऊँ कुरबान
जय-जय हिन्द के वीर जवान....।"

युद्धवीर बड़े शान्त भाव से सुणन लाग रहा था।

"सुथरा तगड़ा छैल छबीला
मर्द मुच्छैल सै तू रोबीला
सिंह जैसे तेरे नैन चमकीले
फड़फड़ फड़कै बाजु जोशीले
जन जन का तू सै भगवान
जय जय हिन्द के वीर जवान
बहाणा का भाई तू मां का प्यारा
बूढ़े बाप की आख्या का तारा
जिस गेल ब्याहा वा सूरत प्यारी
गजबण गोरी केसर क्यारी.....।"

"भाई इब्ब तक सारी बात तेरे पै फिट बैठे थी, पर या ब्याह आली बात तो लागू ना होई तेरे पै" मन्नै चुटकी ली।

"करांगे भाई इसका भी इलाज" युद्धवीर नै बात सरकाई।

दोनुआँ नै बात हंसी म्हं टाल दी।

भगता भी बीच म्हं बोल पड़्या - "अच्छा इब्बै फौजी कुंआरा सै के?"

"हां भाई पर इबकै साल इसका उपाय बांध देगा म्हारा ताऊ जागे।" मैं बौल्या।

भगता चुप होग्या

युद्दवीर एक दम तै खो सा गया। उसकी आख्यां आगै वो ए चेहरा आण खड़्या होया जिसनै मोमबती की रोशनी म्हं अवतार सा लिया था। ज्यूकर कोय टेप बार-बार चाल्या करै वो झलक बार-बार उसकी

आख्या आगै आण लाग री थी।

एक दो और रागनी सुणकै हाम तो उल्टे ए आगे।

आगलै दिन बेरा पाट्या के बाद म्हं औड़े बहोत हंगामा होया। कविता चौधरी नै कुछ रंगीली रागनी सुणाई तो शीशपाल ने टपकती होई सुणाई। कुछ देर म्हं संस्कति गोडयाँ नीचे गेर कै खूब धुनी गई। बाबा समझाता रहया, पर मलंग टोल कै आगै उसकी ना चली। डेरै पै वै गीत भी सुणा दिये गये जो दिन के चांदने म्हं आदमी अकेला बैठ्या भी सुणन म्हं शरम करै।

दो दिन बाद भगतै का सन्देशा आया "गाम के डेरे कै बाबे कै बारे म्हं पचांयत सै। पंचायत की नजरां म्हं बाबे नै डेरे म्हं गन्दा प्रोग्राम कराया सो बाबै नै डेरा छोड़ण की सजा दी जा सकै सै। बाबै नै गाम म्हं बहोत भलाई का काम कर राखे सै - फेर कसूर उसका नही सै जै गाम म्हं आकै पंचायत म्ह बाबे की मदद कर सको तो.....।"

युद्धवीर नै सुण्या तो वो एकदम तैयार होग्या। उसकी मरज बाबै तै घणी कुछ और थी। ताऊ जागे नै सारे मामले का बेरा पाट्या तो उसनै युद्धवीर बुलाया।

"पंचायत म्हं बोलण का हक उसै आदमी का हो सै जिसनै धर्म का पालना पकड़ राख्या हो। निष्पक्ष अर न्याय की बात करणी हो तो जाईये बेटा। जै तन्नै लागै अक तू आपणी बात म्हं किते भी कमजोर सै तो मत जाईये। पंचायत भगवान का रूप हो सै अर भगवान कै स्यामी साच्ची अर मजबूत बात करिये" ये कुछ बात इसी थी जिनपै युद्धवीर नै जागे का बेटा होण पै गर्व था। जिसा बाप उसा बेटा।

युद्धवीर चाल पड्या। मेरा शहर म्हं पेपर था, मैं नहीं जा सका। गाम

कै बाहर जोहड़ पै पीपल का एक बहोत ए बड़ा पेड़ था। उसकै चोगरदे एक बहोत ए बड़ा चबूतरा बणा राख्या था। आज सवैरै तै गाम के मोजिज आदमी आणे शुरू होगें थे। दो उस बल की कह रहे थे तो दो इस बल की...।

चर्चा जारी थी।

युद्धवीर जब अड्डै पै पहोचया तो भगता पहल्या ए उसकी बाट देखै था।

"घरां पाछै चालांगे, पहल्या जोहड़ पै चालांगे सारे बाट देख रहे सै"

युद्धवीर नै सिर हिलाया। कुछ बोलता भी तो के बोलता।

भगता उसनै ले कै सीधा जोहड़ पै पहुंच्या। एक और नै ईटां का चट्टा लाग रहा था। भगता अर युद्धवीर उसके सहारे खड़े होगे। जोरदार बहस चाल री थी।

"धर्म कै काम म्हं जो गन्द इस साल खिंडयाा सै आज तक गाम म्हं इसा नही होया"

"बाबा ने डेरा छोड़ के चला जाणा चाहिये"

"बाबा मुस्टंडा सै"

"रै भाई बाबे नै थोड़ी बलाये थे व गाणिये तो और किसने बुलाये"

भगता बीच म्हं जा के बोलण लाग्या पर रोला़ इतणा था अक उसकी आवाज दबगी। बाबा एक तरफ सहमा खड़या था। जोग लिये पाछै पहली बै उसकी जान नै इसा मुकदमा होया था।

बाबै की हिमायत म्हं कम थे विरोध करणिये घणे थे। कुछ इसे भी शामिल थे जिन्नै भण्डारै के प्रोग्राम म्हं चौधर नहीं मिली। काफी देर तक खींचताण चालती रही। कोय निचोड़ नहीं निकल्या।

युद्धवीर आपणी जगहां तै हिल्या।

आहिस्ता-आहिस्ता चबुतरा कै नजदीक जा कै खड्या होया तो सबका ध्यान उसकी ओर चल्या गया।

युद्धवीर नै आपणे होठ खोले -

"सबनै मेरी नमस्ते राम-राम! प्रणाम"

"यो कौण सै भाई? कुछ सवाल हवा म्हं लहराये।

"मेरा इस मामलें तै कोय घणा सा लेणा-देणा कौनी, पर मैं उस दिन उड़ै ए था, सो मेरा भी मन सैं के आपणी बात कहूँ। जै गाम राम इजाजत दे तो कुछ कहूँ"

भगता नै सरपंच अर पंचा के कान म्हं जा कै कुछ कह्या।

सरपंच बोल्या - "भाई तूं जागे का छोरा सै। तेरे बाबू नै आज तक न्याय की बात करी सै, सो उम्मीद तेरे तै भी या ए सै"

कुछ लोगा नै खुसरपुसर करी तो कुछ बिना विचार के भी बैठे थे।

जब युद्धवीर नै बोलणा शुरू कर्या तो लोग आपस म्हं बतला रहे थे।

युद्धवीर नै एक ए मिनट म्हं सबका ध्यान चुरा लिया।

"मैं इस मामलें की घणी सी तह म्हं तो जाऊगा नहीं, पर उस दिन मन्नै शुरूआत देखी। रोला भी देख्या, ज्ञान की बात भी सुणी। बाबा जी महाराज जुण से आज चुपचाप कुण म्हं बैठे सै, उस दिन बहोत जोश म्हं थे - इसे ढाल जाणो बालक नै कोय खिलौणा पाग्या हो।"

इब सारे युद्धवीर की बात सुणै थे।

" मैं गाम राम तै एक बात पूछणा चाहूं सू महाराज जी नै कितणे साल होगें इस गाम म्हं?"

"३०-३५ साल" जवाब आया।

"तीस साल तै जो माणस इस गाम नै आपणा परिवार मान कै चाल

रह्या हो अर उसकी देखा देखी कोय गल्ती होज्या......।''

''देख देखी नहीं छोरे, गल्ती खुद कर राखी सै'' एक विरोध का स्वर आया।

युद्धवीर समझै सारी था पर बातां नै तर्क तै सुलझा दे, इसतै बढ़िया रास्ता कोय नहीं होता।

युद्धवीर नै फिर बोलणा शुरू कर्‌या -

''मैं घणा सा ज्ञानी तो कोन्या, पर एक दो बात आपणे बड़याँ त सुणी सै जो आज वै जरूर करूंगा। फैसले पै मेरा कोय हक नहीं, पर जै मेरी या बात आपकै समझ आज्या तो फैसला कर लियो।

मेरी मां नै मेरे ताँय एक बै एक कहाणी सुणाई थी। एक राजा था प्रीत सिंह। बहोत बहादुर लड़ाका। वो जब भी किसे राजा की नगरी नै जीत कै आया करता तो उनकी सारी धन दौलत उनके राज मुकुट एक कमरे म्हं बन्द करके ताला ला दिया करता। बात बीतगी साल गुजरे। राजा परीक्षित नै जब राजा का काम संभालया तो वो कमरा खुलवाया गया। कमरे म्हं धन दौलत देखी तो राजा खुश होग्या। एक दिन जब शिकार पै जाण लागग्या तो उसके मन म्हं बेरा ना के आई, वो उस कमरे म्हं जो सबतै बड़ा मुकुट था उसनै पहर कै लिकड़ लिया। शिकार करया वापसी म्हं एक साधु तप करै था। महाराज नै मजाक सूझया। एक मर्‌या होया सांप उसकै गलै म्हं गेर दिया। साधु के बेटे नै यू नजारा देख्या तो राजा ताय शाप दे दिया। राजा महल म्हं लौट गया। जा कै मुकुट उतारया तो अचानक आपणी गल्ती का अहसास होया। साधु की आंख खुली तो सारै मामलै का पता लगाया। साधु नै अपणा बेटा धमकाया - रै नादान वा उस राजा की गल्ती ना थी, वो तो उस मुकुट का असर था जुणसा बुरी कमाई का

था। उधर तै राजा भी उल्टा आग्या। आपणी गल्ती की माफी मांगी। इब गाम राम बताओ राजा दोषी था के नहीं?''

''भाई गल्ती तो मुकुट के असर म्हं होई - राजै की नीयत तो ना थी साधु का अपमान करण की'' सुलझा सा जवाब मिल्या।

''तो गाम राम बाबा जी की नीयत पै क्यूँ शक कर रहे सो? मन्नै सुण्या सै अक पिछले साल भजनां का प्रोग्राम था तो सारे ए पचास आदमी सुणन गये थे। इबकै कविता चौधरी आई तो सारा गाम टूट पड्या। कितै नै कितै दोष म्हारा भी सै। जै हाम खुद गन्दे बोल ना सुणना चाहवां, तो किसकी हिम्मत के गन्दा बोलज्या।''

कह कै युद्धवीर एक और नै सरक गया।

कुछ देरी चुप्पी छाई रह्यी।

सरपंच उठ्या - मेरे ख्याल म्हं इब इसतै आगै कोय बात कहण नै बची नही। फैसला तो इस छोरे ने लिख दिया, हामनै तो मोहर लाणी सै''।

बाबा जी के पक्ष म्हं फैसला होया।

सब चालण लागगे।

बाबा सीधा युद्धवीर कै धोरै आ खड्या होया।

''आज तक मैं न्यू सोचूं था के ज्ञान लेण खातर तपणा पड़े सै, भगवा बाणा धारण करना पड़ै से, पर आज तन्नै ये बात सुणा कै मेरे विचार बदल दिये। साची कहूँ, म्हारै तै घणा ज्ञानी तो तु सै भाई। जै फैसला मेरे पक्ष म्हं ना होता तो हो सकै सै मन्नै यो गाम छोड़ना पड़ै है पर शायद जो खुद की नजरां म्हं जो मेरी इज्जत से वो खत्म हो जाती। मैं तो बाबा सूँ किते भी मांग ल्यू पर......।

युद्धवीर बोल पड़या - ''आपणी जगहाँ, आपणा सम्मान छोड़ कै नहीं

भाजया करते महाराज जी"

भगता खड़्या खड़्या सोचे था, अक दोनुआं म्हं तै ज्ञानी कोण सै, किसके पाया पड़ूँ।

"लो चालो जी इब घरा चाल्याँगे"

युद्धवीर ने उपर ले मन तै आनाकानी करी तो सही, पर भगता मान्या नहीं।

युद्धवीर फेर उतै पहुंचग्या। उस दिन मोमबती की वा रोशनी मन्दी जरूर थी पर उसका चौंधा आज तक युद्धवीर के साथ था।

"ले बैठ युद्धवीर। ऐ स्वर्णा पानी दे जिये बेबे!" भगत नै आवाज लगाई, कहकै बाहर निकल गया। युद्धवीर जाणो काठ का होग्या।

जुणसा थोड़ी सी बार पहल्या बड़े महात्मा की ढालँा प्रवचन करण लाग रह्या था वो इब जमां ऐ माटी का ढेर होग्या। उसनै इसा लागै था जाणो नीचे की कुर्सी किसनै काढ़ ली हो और वो हवा म्हं तैरण लाग रहया हो। गात का जी लिकड़्या जा था, उसकी हालत मरीज जैसी हो रही थी।

पाणी ले कै दूसरा मरीज भी आग्या।

युद्धवीर अर स्वर्णा - दो मरीज पर मर्ज एक। प्यार कै अहसास की।

वा भी चाबी आलै खिलौणै की ढालां सरकती आवै थी।

"धैड़.... खनखट खन खन"

कित का पाणी किते गये गिलास।

स्वर्णा कुर्सी मैं उलझ कै ऐसी गिरी अक सारा पाणी युद्धवीर के उपर....।

स्वर्णा पड़ी अर पड़ण तै पहल्या खड़ी भी होगी।

युद्धवीर की हालत देखकै दर्द नै भूलगी।

कुछ नहीं सूझया। आपणै भाई नै आवाज देण लागगी।

"मन्नै-मन्नै कुछ नहीं कर्‌या" युद्धवीर नै सफाई दी, स्वर्णा इब भी आवाज देण लाग री थी।

"मै कहूं सू मन्नै कुछ नहीं कर्‌या" युद्धवीर ने स्वर्णा का हाथ पकड़ के खींच लिया।

स्वर्णा पात्थर की होगी।

इसा काम होग्या जाणो एक साथ हजारो कोयल बोल रही हों। कई बार कुछ पूर्व निर्धारित काम बड़े तरीकै तै होन्दे चले जा सैं।

हाथ तो छुट्या पर इसा लाग्या जाणो कोय हथकड़ी सी पहर ली हो स्वर्णा ने।

स्वर्णा की उमर सत्रह-अठारहा कै बीच की थी। युद्धवीर बीस साल के ऐड़ गेड़ म्हं था। इब तै पहल्याँ मन का मटका कोरा था। प्रेम जल के शुरूआती छीटंया तै एक खुशबु उठी उर दोनू मदहोश।

थोड़ा सा होश आया तो युद्धवीर बोल्या -

"मैं रोहतक आऊंगा मिलैगी कै?"

स्वर्णा कुछ नहीं बोली - बाहर भाजगी।

युद्धवीर नै किस टैम आपणे गाम का टैम्पू पकड़या, किस टैम घरां पहुंचा, उसनै जो कुछ करया उसपै एक अजीब सा नशा था। आज तक इसी चुप्पी उसपै कदै नहीं आई थी। हर एक पल ज्युकर फिल्म की ढाल चालै था। घरां आया तो मां तै भी घणी सी बात ना करी।

ज्युकर तालाब के शान्त जल मैं कोय कंकर मार दे तो उसकी हलचल थोड़े सै टैम तो पाणी ने हलावै सै पर वो पाणी फेर पहलया की ढ़ाल

शान्त हो ज्या। युद्धवीर कै मन की हालत बड़ी अजीब थी।

8

स्वर्णा - जिसा उसका नाम था उसी ए थी। भगता एक साल का था, जब उसकी मां मरी। बाप ने दूसरी शादी कर ली थी। भगवान का शुकर था के उसनै मां ए मिलगी। आपणी औलाद तै बढ कै मानया करै थी भगता ने। स्वर्णा भगतै तै तीन साल छोटी थी। हो सकै सै दुनियां की ओर छोरी आपणै भाईयां तै डरती हों, पर स्वर्णा आपणै भाई नै भगवान मान्या करती। उसकी मां का रूप थी स्वर्णा। सुथरी, शान, शक्ल, कती टाईम सिर नाड़ी चाल्या करती। मां-बाप के जितणे बढ़िया संस्कार थे वे सारे के सारे मिले स्वर्णा नै। भगत नै सदा आपणी बहाण का ख्याल राख्या। कदे वा जोहड़ पै सखियाँ संग खेलण भी गई तो भगता आस-पास रहता। जोहड़ पै एक दिन भैसां नै बाहर काढ़ण कै चक्कर म्हं स्वर्णा पानी म्हं गोता खागी। भगता पास म्हं ना होता तो होग्या था कल्याण। वा जब एक साल की थी तो बहोत बीमार पड़ी, दो महीने तक भगता भी उसकी निगरानी, देख-रेख करता रह्या। स्वर्णा का पिता बलदेव सिंह साधारण किसान था। कदे किसे का बुरा नहीं कर्या। धर्म करम म्हं विश्वास राखणिया। उसका पहल्या ब्याह भानमति गेल होया था। भानमति थोड़ी गात की कमजोर सी लुगाई थी पर थी बहोत चातर लुगाई। भगता जब पैदा होया तब ज्यादा परेशानी म्हं पड़ग्यी। जो तकलीफ भगतै कै जन्म के टैम शुरू होई, वा एक साल बाद उसकी मौत बण कै ऐ खत्म होई। बलदेव की हालत बीच-बिचालै की थी। उमर के बहोत ऐ अजीब से मोड़ पै यू हादसा होया। बलदेव का मन

दूसरा ब्याह करण का कतई नहीं था, पर गाम राम भाई चारा सबनै एक साल तक करड़ी खुबात करी जब जा कै बलदेव थोड़ा सा हाल्या। वैसे भी न्यू कह्या करैं सैं अक लुगाई तो रंडेप्पा काट भी सकै पर मर्द खातर या दोधारी तलवार हो सै।

बलदेव नै दूसरा ब्याह कर्या धनकौर तै। सामान्य सी बुद्धि की लुगाई थी, पर व्यवहार म्हं होशियार। जब विदा होई थी तो उसकी मां नै रोते हुए एक ए बात कही थी -

“दिखे बेटी! आपणै मां-बाप नै उल्हाणा मत दुआइये। घणी समझ तै काम लेणा पड़ैगा।

उस टैम धनकौर कै या बात घणी सी पल्लै ना पड़ी थी, पर जब ब्याह कै नै पति के घर म्हं आई तो दिन ब दिन जिम्मेदारी समझ आण लागगी थी। उसनै बेरा था अक बलदेव आपणी पहली पत्नी नै भूल नहीं पाया सै, पर थोड़े दिन म्हं उसके न्यू भी समझ आगी अक वो बहोत ए नेकदिल आदमी सै।

पहली मिलन की रात थी तो धनकौर की गोदी म्हं भगता बिठा दिया बलदेव नै। मजबूत इन्सान था, पर हादसै नै कई तरहां तै कमजोर कर दिया। आख्यां का पाणी छुपा नहीं सकया, बोल्या - “हो सकै सै यू टैम या बात करण का ना हो, पर एक बात तेरे तांय कहणी सै धनकौर, यू छोरा मेरी आत्मा सै। मेरी आत्मा नै दु:ख ना पहुंचाईयें“

धनकौर चुप रहयी - पर उसकी समझ म्हं एक बात जरूरी आगी थी के आख्यां तै बहते सच्चे आंसू गंगाजल तै भी पावन होवै सै, मन के सारे संशय धुलगे उसके।

भगतै नै फिर तै उसकी मां मिलगी। बलदेव नै भी राहत की सांस ली। कई बै बलदेव अधमिची आख्यां तै मां छोरे की हरकत देखता, भगतै नै बोरी बिछा कै अर खुद पीढ़ै पै बैठ कै धनकौर जब उसके

बाल संवारती तो बलदेव बड़ा सुखी महसूस कर्या करता। भगतै नै नहा धुवा कै स्कूल भेजती। घर का, डांगरा का और तो ओर खेत क्यार के काम म्हं भी कदे धनकौर पाछै नही हटी।

बलदेव आपणी पहली पत्नी नै भूल्या तो नहीं, पर धनकौर नै कदै इसा मौका नहीं दिया जो बलदेव उसकी कमी महसूस करता।

स्वर्णा ब्याह कै दो साल बाद पैदा होई। जब भगतै ताय बलदेव नै बताया के उसकै घरां नान्हीं बेबे आयी सैं तो तीन साल के भगतं नै तोतली सी जुबान मैं कह्या था -

"थीक छै इब तॉ मैं घलाएं खेल लिया तरूगां आपणे बेबे देल्या"

बलदेव ठहाका लगा कै हास्या - कई ऐ साल बाद।

जिन्दगी न्यू एं चालती रही।

आज भगता अर स्वर्णा दोनू बड़े होग्ये। भगतै नै मर पड़ कै दंसवी कर ली तो आगे पढ़ण तै ऐ नाट गया। बलदेव नै ओ खेती में ए ला दिया। किल्ले आच्छे थे, नहरी थे, फसल भी खूब होया करती। जब सत्रह साल का था तो बलदेव नै उसका ब्याह कर दिया। कमला आठंवी फेल होकै सिलाई सीखया करती जब उसका ब्याह होया भगतै कै साथ। सिलाई करण म्हं घणा सा सीख नहीं पाई, बस पजामा सील लिया करदी। इस बात पै कई बै स्वर्णा अर भगता उसकी जम कै क्लास लिया करते।

"आ रे भाई जै भाभी नै पजामा भी ना सीमणा आवै है तो इस दुनिया का के बणता?"

"हे बेबे पूछ ना! दुनिया म्हं पहला इसा दर्जी टकरया सै जिन्नै सिर्फ पजामा ए सीमणा आवै सै"

फेर जोर का ठहाका गूँजता।

कमला भी गेल्या हांसती तो दोनुआं के कमला का दिल जलाण का मकसद फेल हो जाते।

"बहोत ढ़ीठ लुगाई सै ए स्वर्णा या तो......"

"ढीठ़ थी जबै तो तेरे गेले ब्याही गई" कमला हांक लगाती

धनकौर भी कई बै इस हंसी ठठें की पंचायत की सरपंच बणती। खूब मस्ती करते सारे। हसंता खेलता परिवार। बलदेव कदे इसे मौके पै आता तो उसनै भी चुप्पी का मुखौटा बदलणा पड़ता।

सांझ नै जब रोटी बणान खान का टैम आंदा तो हर रोज का काम था अक स्वर्णा कै ब्याह की बात चालती और दिनां तो स्वर्णा सबनै डपट दिया करती पर आज चुप्प रही। भाभी भी आज घरां कौन्या जो उसतै आपणै दिल की बात कहती। फेर होती भी तो के कहती। युद्धवीर उसनै पहली नजरां म्हं प्यारा लाग्या था, पर उसकै बारे म्हं और किम्मै भी तो ना जाणै थी, इन्नै सोच विचारां मैं रोटी जलगी।

"के बात बेटी" बलदेव नै टोकी तो स्वर्णा चौंक पड़ी

"तेरी तबीयत तो ठीक सै नै लाडो"

"हां बाबू कोय बात ना मैं ठीक सूं"

स्वर्णा झूठ बोलगी।

शरीर तो स्वस्थ था पर मन का पंछी आज घायल पड़या था। अर उसकी मर्ज का वैद्य भी पास ना था।

9

आन्धाँ के चाहवै दो आंख - युद्धवीर नै जब अपणे पिता का फरमान सुण्या तो उछल पड्या।

"रै युद्धवीर बेटा - तू तड़कै रोहतक चलया जाईये। एक तो बीज लाणा सै अर कुछ ट्रैक्टर का सामान भी। बख्ते जांकै टैम सिर उल्टा आ जाईये बेटा" - कहकै जागे बाहर निकलग्या।

युद्धवीर नै तीन दिन हो लिये थे - जब स्वर्णा तै मिल्या था, तब अर इब का टैम, कुछ भी काम हो मन नहीं लागै था उसका। इब रोहतक जाण का बहाना तो मिलग्या, पर उसनै टौहवैगा कित। उसनै तो बात बातां म्हं इतना ए बेरा पाटया था अक आई.टी.आई के होस्टल म्हं रह्या करै। इब ना तो न्यू बेरा था क्यांका कोर्स करै सै, अर कुणसी क्लास म्हं सै। फेर भी मन म्हं सोचणं लाग्या के ले टोहण म्हं के नुक्सान सै।

अगलै दिन युद्धवीर बख्ते तैयार होग्या। मोटरसाईकिल सांझै ने नुहा-धुआ कै बन्नो बणा दी थी। खुद नै भी बढ़िया सा जोड़ा पहरया। मोटरसाईकिल कै किक मारी अर हो लिया रोहतक की तरफ। बाई-पास पै जा कै एक चा की दुकान पै रुक्या। बात बाता म्हं आई.टी.आई का पता पूछया। अर चाल पड्या शहर की तरफ। न्यू कह्यां करै कै जै मन म्हं किसे बात नै ले के धुकड़-धुकड़ हो तो फेर उसका असर सीधा-सीधा व्यवहार अर बोलचाल पै पड्या करै। उसका हाल भी इसा ए हो रहया था, जाणो कोय बोदा सा बालक दसवीं का नतीजा देखण जा सै अर डरै सै कदे फेल ना होज्या, कदे

नम्बर थोड़े आवैं, ऐसी सी घमरोल दिमाग म्हं चाले जाया करै उस बालक कै। युद्धवीर कै मन का हाल भी चीकले जैसा हो रह्या था।

बेरा ना पावैगी के नहीं?

पावैंगी तो पिछाणैगी के नहीं?

पिछाण भी लिया तो बेरा ना बोलेगी के नहीं?

सवाल बहोत घणे थे......।

जवाब एक का भी नहीं।

हिम्मत सी करकै युद्धवीर आगै बढ्या।

एक खाकी लतया आला छोरा गेट पै खड्या था।

"आ रै भाई यू होस्टल कित सै छोरियाँ का?"

"रै पहलवान मैं पूंछू सूं छोरियां का होस्टल कित सै?"

"रै बहरा से के" - युद्धवीर झल्लाया

"तु आन्धा सै के" - उस आदमी नै रोज का ढ़ाला था

"वो स्यामी बोर्ड लाग रहया इतणा बड़ा"

युद्धवीर ने बोर्ड देख्या - गर्ल्ज होस्टल

"भाई छोह म्हं मत आवै मैं तो न्यू पूछूं था के मैं उड़ै चला जाऊँ के" - युद्धवीर थोड़ा नरम हो के बोल्या।

आाशिक का दिल बहोत नाजुक हो ज्या सै। आदमी पहाड़ गेलै टकराज्या, शेर गेलै टक्कर ले ले, पर जब उसनै किसे तै इश्क हो ज्या सै तो वो गादड़ हो ज्या सै। युद्धवीर भी आज कती गार-माटी का सा हो ग्या था।

"तन्नै उड़ै गाड़ी म्हं छोड़ कै आऊँ के" आदमी ने मजाक उड़ाया

'ना भाई मैं आप ए चला ज्यांगा" युद्धवीर ने एक बिना भाव की नजर उसपै दौड़ाई।

उसकै गात का ब्यौत देख्या तो मन ए मन उसपै दया भी आई। सोचण लाग्या, जै मेरे छोह उठग्या तो इसकै कित मारूंगा। पर खुद पै हैरानी भी होई के आज तेरे छोह क्यू नहीं उठता। मन ए मन फेर सोच्या - शुक्र सै आज सरदार कोन्या गेलै। नहीं तो इसका तांगा सा तोड़ देता।

"के सोच सै भाई?" आदमी नै पूछ्या।

युद्धवीर चुपचाप गर्ल्ज होस्टल की तरफ निकल लिया।

आदमी नै आपणी बात का निचोड़ सुणा दिया - "यू जवान पहली बै आया सै। इबै तो गेट पै इन्नै चौकीदार धमकावैगा। फेर वो होस्टल आली आया धमकावैगी। जै मैडम तो पागी तो इसकी सुथरी ढ़ाल झाड़-पिछौड़ कर देगी। बेचारा....."

ठीक कहगां सै दादा लख्मी -

"आशिकी सै बेल नाश की, चाहे कोय कर के देखल्यो"

युद्धवीर नै जाणो सुणना बन्द हो लिया था। एक एक पल भारी हो रह्या था। किसे जादू टोने कै असर की ढ़ालां उसकी चाल अजीब सी होगी थी।

"कित जावेगा रै ओ पहलवान?"

ध्यान हटया - युद्धवीर ने थोड़ा सा होश आया।

चौकीदार था तो बूढ़ा पर आवाज म्हं आज भी वो ऐ दमखम था।

"ओ मिलणा था जी" युद्धवीर कै गले म्हं शब्द अटक गये।

"किसतै मिलणा था भाई" चौकीदार का कड़क सवाल था।

"वो.... स्वर्णा.... नाम सै उसका"

"क्यूँ के काम सै? के लागै सै तेरी?..... चौकीदार का आकार बड़ा होण लागग्या। युद्धवीर की हालत बहोत खराब, ज्युकर बेबस सा कबूतर होया करै बिल्ली कै आगै।

"के कर्‌या करै तू....?" चौकीदार का इन्टरव्यू जारी था।

"फौज मैं सूं जी".... युद्धवीर पड़ता-पड़ता पालै कै हाथ लाग्या। बस इब और बोलण की हिम्मत ना थी।

पर या बात सुण कै चौकीदार का रूख एकदम बदलग्या।

"फौजी सै? बैठ बेटा, बैठ" चौकीदार भाज कै स्टूल ठा ल्याया - तू बैठ। आराम तै बात करांगे।

"जी वो मैं तो......" युद्धवीर के मुँह तै दो बोल निकले

मैं सूं नायक रिटायर्ड हरनाम सिंह" ८ जाट, युद्धवीर नै आव देखा ना ताव झट तै सैल्यूट मारया। एक मिनट म्हं ए जाणो छावनी का माहौल बणग्या।

"इब बता किसतै मिलण आया सै। पूरी बात बता"

"मन्नै दो ए बातां का पता है जी एक तो नाम अर दूसरा गाम" युद्धवीर इब पूरी तरह होश में आ चुक्या था।

आगै की सारी जिम्मेवारी चौकीदार नै ले ली। पता करवाया तो युद्धवीर थोड़ा उदास सा होग्या। उसकी एक सहेली नै बताया स्वर्णा तो घर तै कोन्या आई। आज आणा तो सै पर किस टैम कुछ कह नहीं सकती।

"कोय बात ना, कोय जरूरी संदेश हो तो मैं कह दयूंगा" हरनाम सिंह बोल्या

"ना ना कुछ मत कहियो - मैं फेर आज्यांगा" एक फौजी नै दूसरे फौजी तै विदा ली।

"खाम खाह हांड होई रै हाण्डु" युद्धवीर आपणै आप पै हांसै था।

मोटरसाईकिल जब गेट तै बाहर निकली तो गजब होग्या। युद्धवीर नै के इसा देख्या जो भूलग्या अक स्यामी रिक्शा भी आवै सै।

धड़ाम.... रिक्शा म्हं टक्कर लागगी। युद्धवीर गात का ठाड्डा था। पड़ते-पड़ते संभलग्या पर रिक्शा म्हं जितणी सब्जी थी सारी सड़क पै। युद्धवीर नै स्वर्णा दिखगी थी। कान्धै बैग टांगे चाली आवै थी। स्वर्णा नै भी जब युद्धवीर देख्या तो हैरान भी होई अर मन में हिलोर सी भी उठी।

युद्धवीर नै मोटरसाईकिल एक ओर नै खड़ी कर दी

स्वर्णा कै सामनै जा खड़्या होया।

दोनू कुछ ना बोले।

युद्धवीर कुछ बोलण खातर होठ खोले ऐ था कै.....

"अरे हो बाबूजी.... इह का कर दिया। हमार कितना नुस्कान होई गवा मालूम है का?"

युद्धवीर कुछ भी कहण सुनण की हालत मैं नहीं था।

रिक्शा आला भईया सिर होग्या उसकै।

युद्धवीर नै सोच्या ले भाई, आज तो क्यूँकरे बात नहीं सुलझै।

स्वर्णा नै जब सड़क पै टमाटर, गण्ठे, टिण्डे बिखरे देखे तो उसनै हांसी आगी।

"अरे बीबी जी तोहार की इह बात ठीक नाहीं। हमारा नुक्सान होई गवा तुम हंसत जात हो" रिक्शा आलै की राम कहाणी जारी थी।

"रे के नुस्कान नै तेरा जहाज डूबग्या? आपणे टिण्डे चुगले। रोला कर रह्या आड़ै। मेरे सालै कै इतणे जूत मारूंगा घर क्या कै भी समझ नहीं आवैगी"।

हरनाम सिंह हनुमान बणकै मदद करण पोंहच गया। युद्धवीर नै हौसंला मिल्या।

"बेटा तू आपणा काम बतला, मैं आप निपट लूंगा इसनै"

हरियाणवी सोच का शुद्ध हरियाणवी मानस था हरनाम।

युद्धवीर की अर स्वर्णा की कोय घणी सी बात ना होई।

शायद दोनुआं नै जो संस्कार घर तै मिले थे उन्नै घणी इजाजत ना दी।

"मैं ठीक सूं। भगता मन्नै छोडकै गया सै। तन्नै मिलै तो बात कर लिये" ये तीन बात स्वर्णा बोली अर झट तै निकल बढ़ी होस्टल की तरफ।

युद्धवीर कुछ देर तक जड़ सा बण्या खड्या रह्या।

रिक्शा आला आपणे टिण्डे टमाटर ठाण लाग रह्या था। गेल की गेल आपणी भाषा म्हं बड़बड़ाण भी लाग रह्या था। हरनाम सिंह इब भी आपणी डयूटी सी करण लाग रह्या था। युद्धवीर नै किक मारी अर चाल पड्या।

"तन्नै मिलै तो बात कर लिये" स्वर्णा की या बात इब तक उस मूढ़ कै समझ ना आई थी

"तन्नै मिलै तो बात कर लिये.......।"

"तन्नै मिलै तो बात कर लिये.......।"

"तन्नै मिलै तो बात कर लिये.......।"

लगभग बीस बार युद्धवीर नै वा बात बड़बड़ा के देखी, अचानक मोटरसाईकिल की ब्रेक मारी।

बात समझ आगी थी।

"ओ भाई धारे....." जोर तै चीख्या

आसपास के माणस चौंक पड़े। एक नै तो युद्धवीर की डाक्टरी भी कर दी

"इसके घर के भी कितणे लापरवाह सैं - बता पागल तांय मोटरसाईकिल दे राखी सै चलाण नै - आड़ै सयाणे पैदल हांडण लाग रे सैं"।

सारा दिन बड़ी मस्ती म्हं गुजर्या। एक अजीब सा नशा युद्धवीर पै छाया रहया। सारा सामान लै के सांझ नै घराँ पहुँचा तो भी बिल्कुल तरो ताजा था। थकान का नामो निशान न था। घर पहुंच्या तो मां बाबू बाट देखण लाग रहे थे।

"बेटा वार कर कै आया?"

"हां मां बाजार म्हं देर होगी"

"हामनै चिन्ता हो रही थी"

"चिन्ता क्या की री मां?"

जागे भी बोल्या - 'भाई आजकाल सड़कां का बुरा हाल सै, चिन्ता तो होय जा सै तेरी मां नै।"

"हो ओ मां - मेरी चिन्ता मत ना करै। मैं न्यू सड़क पै ना मरू - किमे सुथरा काम करकै ए मरूंगा।" मां कै करण्ट लाग्या।

"बस कर काली जीभ आले। बकवास ना करै चाल मुंह हाथ धौ के आपणा रोटी टुका खा लै"

"आज राजपुरै तै एक छोरा आया था, भगता नाम बतावै था आपणा"

- जागे नै सूचना दी तो युद्धवीर के पांया तलै की धरती हालण लागगी।

"के - के - कहवै था?" युद्धवीर हक्लाया।

"उल्हाणा देण आया था" - मां नै बीच म्हं बात जोड़ी तो युद्धवीर की हालत खराब

"रै क्यू दिमाग खराब करै सै इसका, रै कुछ ना ओ तो उस दिन पंचायत आली बात बताण आया था। कहरया था अक सारा गाम खुश था तेरी बातां तै"

युद्धवीर नै आपणै बाबू की बात सुण कै राहत की साँस ली।

10

युद्धवीर की छुट्टी के दो दिन रहगे थे। घर खेत के जुण से काम घणी हांड फिर के थे, वे युद्धवीर नै सारे निपटा दिये थे। गुरूप्रीत का भी फोन आ लिया था। उसनै बताया के गाम मैं इब सब कुछ ठीक-ठाक सै। भाई की भी जमानत होगी। बैर दुश्मनी का माहौल बहुत ए बदलग्या। उसनै बताया के सुखविन्दर इब उनके घरां आवै सै। दो परिवारां की दुश्मनी खत्म होगी। सुखविन्दर का ब्याह सै तड़कै। दोनू परिवारां नै यू भी फैसला कर्या सै के भाई आली रस्म गुरूप्रीत करेगा या सुखविन्दर की जिद्द थी। सुजानकौर नै भी फोन पै युद्धवीर गेल्याँ बात कर्यी "युद्धवीर बेटा तेरा पिंड विच आणा तो वाहे गुरू जी दी किरपा नाल बड़ा शुभ बण्या, साढ़े लई हुण इत्थे अमन शान्ति है। असी रात नू निश्चिन्त हो के सोन्दे हां।"

युद्धवीर नै सारी बात घरां बताई तो मां-बाप भी खुश हुए।

संवेरै आली गाड़ी पकड़नी थी। गुरूप्रीत भी टेंशण पै मिलेगा तो उस खातर भी सुजानी नै खाण-पीण का सामान बांध दिया। युद्धवीर नै आपणा सारा जरूरी सामान बान्ध जूड़ लिया था। पेटी, आपणा जाड्या का प्रबन्ध और भी छोटा-मोटा सामान - युद्धवीर नै सारा पैक कर लिया। सुबह जब चालण का टैम आया तो ताऊ जागे मन्नै बुला ल्याया। मेरे धोरे एक दो किताब थी कहाणियां की। मैं वै ठा ल्याया।

“रै उड़ै कित टैम मिलैगा पढ़ण का” युद्धवीर नै किताब ले ली पर मजबूरी भी बताई।

मैं उस घर का मैम्बर तो नहीं था, पर मेरी भागीदारी हर खास़ मौके पै उस घर म्हं रह्या करती। मन्नै भी यू सब करणा आच्छा लाग्या करता। परिवार सारा का सारा बहोत नेक था।

रास्तै म्हं ट्रैक्टर के शोर म्हं मन्नै जो बात कही, उसनै युद्धवीर चौंका दिया।

“तन्नै उस दिन रागनियां का प्रोग्राम किसा लाग्या?“

“या बात तो बाबा जी पै पूछणी चाहिये“ युद्धवीर ने जवाब दिया। हाम दोनूं खूब जोर का हांसे।

“अच्छा न्यू बता, तन्नै स्वर्णा किसी लागी?“

“हैं? हैं? कौण?“ युद्धवीर चौंका

“भगतै की बहाण....“ मन्नै बात सरल करी

“भाई मन्नै देखी नहीं ध्यान तै“ युद्धवीर मामलै तै बचणा चाहवै था।

“चलो कोय बात ना“ मन्नै हल्की सी चुटकी भरी

“तन्नै या बात क्यातैं पूछी“ युद्धवीर बात आगै बढ़ाणा चाहवै था

“किम्मै ना मन्नै तो न्यूयें पूछ ली“। बात खत्म होई पर मन्नै उसकै

चेहरे के रंग पढ़ लिये।

युद्धवीर नै छोड़ कै मैं सीधा ताऊ जागे धौरे गया। ताऊ तायँ बताया के जुणसां छोरा ४-५ दिन पहल्यां आया था, उसका के मकसद था।

“भगता नाम बतावै था.... पर उसनै कोय काम तो ना बताया.....“ ताऊ जागे नै सहज भाव तै पूछ्या

“हां आड़ै तै जब वो गया तो सीधा मेरे धौरैं आया था, उसकी बहाण सै स्वर्णा। रोहतक आई.टी.आई. करै सै। युद्धवीर नै देख भी राखी सै“ - मन्नै बात सुलझाई।

“देख राखी सै कद.....? ताऊ का चौंकंणा जायज था।

“हां, पिछले महीने हाम गये नही थे?..... वो बाबा जी नै प्रोग्राम करा राख्या था, फेर पंचायत होई थी.... उसै की बात कर रह्या सूं ताऊ“ - मन्नै याद दिलाण की कोशिश करी।

“अच्छा-अच्छा समझ गया‘, फेर भाई जै न्यूएं बात सै तो उसके घर के आवैं, बात करैं तो ए बात आगै चालै“

“वै तो आ ज्यांगे ताऊ। पर मन्नै न्यू कही थी अक एक बै ताऊ तै पूछ कै देखूं, उसकै बाद ए बात करूंगां“

ताऊ जागे नै हरी झण्डी दे दी। इतणै मैं ताई सुजानी भी आगी।

“ आ रे क्या की के बात सै? मैं भी तो सुणुँ“

“कुछ ना ताई। युद्धवीर की ए बात कर रे थे“

“दिखे ऊं तो कोये बात कोन्या, पर उसकै डयूटी पै जाये पाछै मैं जमा ए एकली हो ज्या सूं। सुर्तो अर काबर जब तक घरां थी तो घर भर्‌या-भर्‌या लाग्या करता।“

“ले भाई, एक पथ दो काज। तेरी ताई का भी संकट कट ज्यागा जै यू

काम होज्या तै" - ताऊ जागे नै हाँक लगाई।

"के? के? कुण सा काम? ताई हाथ म्हं ले रही पतीला एक ओर नै धर के तुरन्त पास आगी।

"ताई युद्धवीर खातर एक सुथरा रिश्ता आ रह्या सै"

ताई की उत्सुकता कै और भी चा चढ़ग्या

"साच्ची के? कुण सै गाम तै? कौण सै? छोरी किसी सै? कितणी लाम्बी सै? रंग किसा सै? आंख किसी सै?" ताई की प्रश्नावली बहोत ए लाम्बी थी।

"रै भागवान। मैं तो तन्नै बावली सोंचू था। तन्नै तो घणी ए बातां का बेरा सै" - ताऊ न चटकारा लिया।

उत्सव का माहौल बणया एक उत्सव के इंतजार मैं.....।

11

मेरठ छावनी - भारत की सबतै पुरानी छावनियां मैं तै एक, जिसकै गेल्या मंगल पाण्डे का इतिहास जुड़या होया सै। गुरूप्रीत अर युद्धवीर जब छावनी पहुंचे तो सांझ होण आली थी। टेशण पै दो चार साथी पहल्यां ए मौजूद थे। अर दस-बारह इसे गाड़ी मैं थे, सो छावनी तै एक फौजी ट्रक आ रहया था सबनै लेण। सबनै आपस में हालचाल पूछ्या, राम राम करी, मस्ती करी। परिवार तै बिछड़न की उदासी जो भूतणी बणकै रेल में गेल-गेल थी साथियां के मिलते ही भीगी बिल्ली बण गाड़ी म्हं उल्टी ए बैठ ली। छावनी शहर के गेल्या लागती थी, सो गहमा-गहमी, चहल-पहल रह्या करती। आपणै बैरक म्हं पंहोच कै

सबनै आपणे आपणे ठोड़ ठिकाणे साफ करे। जिन्दगी नै जित थाम कै गये थे वा उड़े तैं ए फेर तै शुरू कर दी जवानां नै। कुछ बिलगंणी जो छुट्टी जाण पै सूनी सी पड़ी थी आज फेर उनके तौलियां, कच्छा, बणियाना तै आबाद होगी। घणे दिन के मौनव्रत कै बाद आज बैरक नै चुप्पी तोड़ी।

"ए कोका नक दा कोका, कदी करी ना प्यार विच धोखा............."
कोई पंजाबी लहर आती

तो एक कोणे से मद्रास का जवान गा उठता

"रोजा पू चिन्नै रोजा पू........"

जिनकै समझ नहीं आता वै जोर के हांसते तो मद्रासी जवान आपणी भाषा म्हं उन्नै धमकाता.....

"ऊंगल के पुरी लय......।"

"ए नी पयति काररा.....।"

"नी सुमाईर....."

सबके सब एक दूसरे कै मुंह की तरफ देखते।

एक दो दिन बाद ये शब्द किसे पै समझ कै आवँगे तो होवैगा खड़दू।
गुरूप्रीत उन्नै जवाब देता

"ओये खोते दे पुतरो। हिन्दी विच नी बोल सकदे......।"

भाषाओं के मुर्गे लड़ते रहते, पर जज्बे एक दूसरे का हाथ पकड़ कै जमे रहते। एक दूसरै कै दु:ख दर्द नै आपणा मानया करते बैरक के सारे जवान।

किते कुण मैं जब हरियाणवी दौरा पड़ता तो बैरक गूँज उठती.....

“रै पाणी आली पाणी प्यादे......“

इन बोला की भी व्याख्या हो जाती -

एक थे यू.पी. के मिश्रा जी... शुद्ध हिन्दी में विश्लेषण कर दिया करते.

“हमारे प्रान्त में गोरी से प्यार मांगते है पर ये हरियाणा वाले खाने-पीने को ज्यादा महत्व देते है। तभी तो कह रहे है भईया.... पानी वाली पानी पिला दे। फिर कहेगे रोटी खिलादे और फिर खा पी कर सो जाऐगें। प्यार गया भाड में......।“ ऐसा ठहाका गूंजता कि पूछो मत।

“रै बावली बूच मिश्रा जी तन्नै सुण्या नहीं के पहलां सुख निरोगी काया......। रै जब गात म्हं दम नहीं होगा तौ प्यार के धांस करैगा।

“बात म्हं तो दम है भईया.....।“

वाद-विवाद, हास-परिहास का दौरा रोज का काम था। एक दिन सारै दिन की भाग दौड़ के बाद जब सांझ नै सारे मस्ती म्हं थे तो युद्धवीर बैरक कै बाहर एक ओर नै सीढ़ीया पै चुपचाप बैठ्या एक सलाई सी तै धरती कुरेदण लाग रह्या था। गुरूप्रीत नै बैरक म्हं टोहया - नहीं पाया तो वो भी टोहदां टोहदां बाहर आग्या।

“ओय कि गल है काके - इत्थे क्यूँ बैइठा है तू?“

“कुछ नहीं यार बस न्यूए....“ युद्धवीर जाणो किते ध्यान लगा रह्या था

इबकै गुरूप्रीत कै भी हल्का सा तनाव होग्या

“ओय घर तो सब ठीक ठाक है ना?“

युद्धवीर ने देख्या गुरूप्रीत सच में चिन्तित होग्या तो झट तै बोल्या... . “रै ना ना! भाई सब ठीक है मेरी ए एक समस्या सी सै.....“

गुरूप्रीत इब तो उसकै लवे सी आकै बैठग्या।

फेर शुरू होया फ्लैश बैंक, जिस की नायिका थी स्वर्णा। पूरी फिल्म खत्म होई तो गुरूप्रीत हांस हांस कै बेहाल होग्या.....। रोला सा सुण कै और फौजी भी बाहर आगे।

के होया?, कि होया?

वट हैप्पन्ड?

कई भाषाओं के प्रश्न पत्र हवा म्हं उछले।

“ओय सुणो सुणो....“ गुरूप्रीत बराबर मैं खड़ी पाणी की टंकी पै चढ़ग्या।

“रै ओ सरदार जै जुबान काढ़ी तो टांग तोड़ द्यूँगा“ - युद्धवीर चिल्लाया।

एक लठ ठा कै युद्धवीर गुरूप्रीत कै पाछै लाग लिया।

“ओय नहीं दसदा, नहीं दसदा वाहे गुरू जी दी सों, नहीं दसदा..... गुरूप्रीत दूर भाजग्या।

वैसे तो फौजियां कैं दिन का रूटीन एक सा ए था, पर फेर भी कोय न कोय नई बात वै ढूंढ लिया करते ताजगी ल्याण खातर।

एक दिन शाम नै युद्धवीर नै जब घर नै फोन करया तो पता लाग्या कै मां अर बाबू मेरठ आण लाग रहे सै उसनै पूछा भी अक एक दम के काम पड़ग्या तो बाबू नै हँस कै टाल दिया। युद्धवीर खुश तो था पर थोड़ा सा हैरान भी था, के चाणचक न्यू आण का प्रोग्राम क्युँकर बणा? गुरूप्रीत ने बेरा पाट्या तो उसनै बैरक ठीक ठाक करणी शुरू कर दी। कोय इसा सामान जो मां-बाबू देख कै नाराज होज्या, सारा साफ कर दिया।

दो दिन बाद - जागे अर सुजानी छावनी पहुंचगे। सारे फौजियां नै उनका खूब स्वागत कर्‌या। सारे के सारे इसै ढ़ाल खुश थे जाणो उनका आपना घर का आदमी आया हो। जागे अर सुजानी यू सब देख कै निहाल होगे। शाम ने स्पैशल खाणा बणया मेहमानां खातर, जो भी आता पूरा आदर सत्कार देता। न्यू लागै था आज जागे नै के उसके तो बहोत घणे बेटे सैं। पाछै तै वो मद्रासी जवान जो घरां भी गया था वो आया -

"हैलो बाबू, मां आपका कहां ज्ञान से?"

जब उसने टूटी फूटी हरियाणवी बोली तो सब जोर तै हांस पड़े।

"रै भाई तू भी म्हारै आली सीखग्या"

"युद्धवीर ने बताया के उसने दो दिन तै इस बात का रट्‌टा लाणा शुरू कर दिया था।

भाषा अस्पष्ट थी, पर भावनायें बिल्कुल शाश्वत थी।

अगले दिन जागे अर सुजानी नै फौजियां की ट्रेनिंग देखी। मां का जी कदे खुश तो कदे दु:खी होज्या था। अकेले युद्धवीर नै देख कै नहीं, सारे ए फौजियां नै देखकै। सारा दिन बीत गया। दोपहर का खाना, फेर चाय कदे किमे, कदे किमे, खूब सेवा की मां-बाप की युद्धवीर नै। सांझ नै बैरक के सारे फौजी मिल कै जब नाचन गाण लाग रहे थे तो युद्धवीर, गुरूप्रीत जागे अर सुजानी एक तरफ नै बैठे थे।

"बेटा युद्धवीर आज हाम एक खास बात पूछण आये सैं"- जागे आहिस्ता सी बोल्या

"पूछण के आये सां, बताणं आये सां" - सुजानी बोली

"मां बिल्कुल ठीक कहवै सै - मेरे तै पूछण का के मतलब सै बाबू।

आपकी बात तो भगवान का हुक्म सै मेरे खातर" - युद्धवीर गंभीर होके बोल्या।

"आप जैसे मॉ-बाप तो वाहे गुरू सबनू देवे" -गुरूप्रीत नै हांक लगाई" - "कि गल है सानू भी तो बताओ"

"हाम नै युद्धवीर का रिश्ता पक्का कर दिया सै" सुजानी नै पत्ते खोले।

युद्धवीर नै सुण्या तो एकदम कई तोप सी चाली काना मैं। एकदम चौंक पड्या।

"रिश्ता-इब्बै के तावल सै"

"भाई जुणसा काम टैम सै होज्यां वो ऐ बढ़िया"

मन्नै तो पक्की कर दी सै - जै तन्नै पसन्द नहीं तो टाल मार द्यांगे" - जागे फेर बोल्या

गुरूप्रीत युद्धवीर कै मन की बात जाणै था।

"मैं एक गल कहवाँ....." गुरूप्रीत बोलण लाग्या तो युद्धवीर नै हाथ तै रोक दिया।

"आपनै जो कर्‌या वो ए ठीक सै। आपकी जुबान मेरे खातर सबतै पवितर बात सै, जो आपनै पक्की कर दी तो पक्की।"

गुरूप्रीत युद्धवीर की बात कै बीच दब्बी लहरां नै पिछाणै था।

"ओय जियो मेरे भाई! सौ साल जियो! तू कमाल है वीरे।" गुरूप्रीत युद्धवीर कै लिपटग्या।

"आ रे हाण्डू - न्यू नी पूछैगा के कोण कित के सै?" सुजानी बोली।

"री मां जब थामनै टोह दी तो इब काणी कुब्बी किसी ए आओ मन्नै

के सै, तन्नै लोग कहवैंगे काणी की सासू" - युद्धवीर उपरलै मन तै हांस्या।

"काणी कोन्या, बहोत ए सुथरी सै लाम्बी नाड़ आली सोने बरगी सै, जबै तो घर क्या नै नाम धरया सै स्वर्णा....." सुजानी नै अपणा पक्ष रख्या।

"है? है? बेबे कि नाम हैगा......?" गुरूप्रीत तो चौंका युद्धवीर पात्थर होग्या।

"क्यूं होग्या नै मग्ज ठीक स्वर्णा नाम तै...... रोहतक कोर्स करै सै - एक भाई सै भगता - बलदेव सिंह की छोरी सै..... मां नै सारा ब्यौरा एक सांस मैं कह दि़या।

"अभी तो युद्धवीर मना करै है - और मेरे ख्याल तो सानू इस मामलै में जल्दबाजी करनी नहीं चाहिदी" इब गुरूप्रीत मजे लैण लागग्या।

"भाई गुरूप्रीत मैं तो पहल्यां ए कहूँ सू के युद्धवीर का मन होगा तो करांगे, यू नाटै सै तो म्हारी भी टाल" - जागे बोल्या।

"ना ना बाबू इसी बात ना बोलो। थारी मरजी के आगै सब मिथ्या सै" - युद्धवीर नै फीलिंडग लगाई।

गुरूप्रीत बड़ी मुश्किल तै हांसी रोक कै बोल्या - "ओय युद्धवीर फादर ठीक कह रहे हैं और फेर घर तो तैन्नू ही बसाणा है"

"रै तू टिकज्या सरदार क्यूँ कढ़ी बिगाड़ै सै" - युद्धवीर नै तलै ए तलै आंख काढ़ी।

"रे युद्धवीर बहोत सुथरी छोरी सै - उवैं नाटै सै" सुजानी नै ठण्डी सांस ली

"ओय बेबे बढियां सोणिया कुड़िया मिलण गी पंजाब विच" - गुरूप्रीत

बोल्या तो युद्धवीर का सब्र का बांध टूटग्या।

"रै उसतै सुथरी कोन्या पावै, सरदार तेरे पंजाब मैं भी"

"हैं" सुजानी अर जागे चौंके - "तन्नै देख राखी सै के वॉ?"

युद्धवीर शरीर तै कठोर जवान था, पर इब तो वो इसा पिघल्या ज्यूँकर बर्फ घाम में पिघल्या करै।

युद्धवीर उड़ै खड्या नहीं रह सक्या।

गुरूप्रीत हांसै ए हांसै था।

जागे अर सुजानी तां ही गुरूप्रीत नै सारी कहाणी बता दी। जागे अर सुजानी की उलझन मिटगी। न्यू लाग्या, जाणो हर तरफ रंगा के छोटे बड़े बादल उनकै घर की तरफ चाले जा सै। बहोत खुश होय दोनू।

मां बाबू कै जाये पाछै फौजियां नै खूब मस्ती करी। युद्धवीर नै अपणी तरफ तै एक बढ़िया पार्टी करी। जिन्नै दारू पीणी थी, वै टुन्न होगे। जो युद्धवीर जिसे बिना पींणिये थे, उन्नै दूध फल फ्रूट का आनन्द लिया। सारै माहौल मैं मजे की बात या थी अक जो मन नै चाह्या वो मिल्या। युद्धवीर नै भी अर बाकी फौज़िया नै भी। गुरूप्रीत भी बहोत खुश था। सच्ची दोस्ती नै आपणी खुशी या दर्द बताण खातर बोलना नहीं पड़ता, बल्कि खुद ब खुद चेहरा बता दिया करैं। गुरूप्रीत की भी आख्यां के डोरे बता रहे थे के वो युद्दवीर की खुशी म्हं कितणा खुश था। युद्धवीर अर गुरूप्रीत एक टूक तोड़ी खाया करते। दोस्ती की गजब मिसाल थे दोनू।

12

जब भगतै नै अपने पिता बलदेव तै इस रिश्ते की बात करी

थी तो वो एक संयोग सा था। स्वर्णा नै भगतै तै युद्धवीर कै बारे मैं कोय बात नहीं करी थी। एक दो बार मन मैं आया, के भाई नै बता दयूँ, पर पता नहीं के सोच कै नहीं बताई। हो सकै भाई नै यो बात पसन्द ना आवे अर फेर कोये इसी बात भी तो नहीं थी के जिसनै प्यार या कुछ और नाम देती। पर फेर भी युद्धबीर उसनै बहोत आच्छा लाग्या था। जीवन मैं पहली बार उसका बचपन उसतै हाथ छुड़ा कै दूर भाजता नजर आया था। इतणी बड़ी होगी थी, पर इसा अहसास कदे ना होया था। खुद स्वर्णा कै भी या बात घणी वारी समझ आई थी के क्यो वा पहली बार मोमबती की रोशनी मैं दिखे युद्धवीर की सूरत देखते ही सन्न रहगी थी। उसके अर युद्धवीर के मिलन की फिल्म मैं सीन भले ही तीन थे - पर स्वर्णा नै बार-बार अनेकों बार उन दश्यों को आंख बन्द कर कै देख्या। मर्ज हर बार बढ़ज्या थी। युद्धवीर के प्रति आकर्षण नै स्वर्णा की नींद गेल दुश्मनी ले ली। तड़कै जब पौ फटती - ठण्डी ताजी हवा चलती तो स्वर्णा ने युद्धवीर के पास होण का अहसास होता, अर जब सांझ नै सूरज के घोड़े थक कै गाम के शिवालय की पिछली तरफ चले जाते तो विरह की उदासी का रंग आसमान मैं बिखर जाता। जिस दिन होस्टल के गेट पै युद्धवीर मिलया अर सब्जी आलै गेल टकराया तो उसनै महसूस कर्या के इतना कठोर गात तै तगड़ा दिखण आला फौजी प्यार कै मामलैं में बिचल कै खड़ा होग्या था। आशिक का दिल कांच की दीवार बरगा हो सै। उसनै बेरा था जै उस दिन वा युद्धवीर नै सहारा ना देती और करड़ी बोल पड़ती तो फौजी सच मैं दु:खी हो जाता। स्वर्णा नै फौजी बहोत आपणा सा लाग्या था, जबे ता वा रुकी अर उस गेल बात करी। इब तो होस्टल मैं भी घणा सा जी ना लागै था। वैसे तो पहल्या भी स्वर्णा घणी सी हाड़्या फिर्या नहीं करती, पर फेर भी एक

आधी बार कोय जरूरी सामान लेणा होता तो चली जाया करती। पर इब तो मन की नगरी पै कर्फ्यू सा लागग्या। जब उसनै बेरा था के उसकी नजर जिसनै टोहवै सै वो तो कोसों दूर सै, फेर बाजार मैं पात्थरा कै बीच धक्कै खावण का के फायदा। उसका फूल किते दूर खिल्या था, पर खुशबू उस तक आण लाग री थी। जब उसनै घरा आकै आपणे भाई अर पिता की बात सुणी तो संकट मैं पड़गी।

“छोरा तो बहोत सुथरा सै बाबू अर काबिल भी बहोत सै“ भगता कहण लाग रह्या था।

“हां इस बात की तो सारा गाम गवाही दे सै‘ पर बेटा घर बार आपणा उनकै समझ आवै के बेरा ना आवै“ - बलदेव ने अपना संशय बताया।

“मन्नै तसल्ली कर ली बाबू। बहोत नेक परिवार सै“ भगता बोल्या

“पर उनकै स्वर्णा भी तो पसन्द आणी चाहिये अक नहीं“ बलदेव सिंह सारी बातां की तसल्ली चाहवै था।

“छोरे नै तो देखै राखी सै स्वर्णा“

भगतै की बात सुणकै एक बै तो स्वर्णा उलझ कै खड़ी होगी, पर फेर एक दम तै सुलझगे सारे जाल। आन्धा के चाहवै दो आंख। स्वर्णा जो चाहवै थी उसनै मिलग्या।

आणे वाले जीवन की तैयारी शुरू होगी।

हर लड़की की तरह स्वर्णा के जीवन मैं भी वै दिन बहोत अजीब दिन थे। एक तरफ तो सामान साधना कै बारे में जोड़-तोड, दूसरा मन कै घोड़े की रफ्तार। इस घर मैं भी सारै ढ़ाल की जिम्मेवारी आपणै आप बटगी। बारात के स्वागत तै ले कै हलवाई की,

खाणै की जिम्मेवारी बाप अर भाई की थी तो तील तागे की सारी बात माँ नै बेरा थी। एक और जिम्मेवारी जो स्वर्ण पै थी - वा थी मन की जिम्मेवारी। मन का घोड़ा कई बै तो संशया की दलदल मैं फंस कै खड़या हो जाता तो कई बै इतना तेज दौड़ता के बेकाबू हो जाता। स्वर्णा नै एक नये घर जाणा था। इसलिए मन का मंथन हर समय चलता रहता, ताकि अगलै घर जाकै आपणै घर परिवार नै बड़ाई दिला सकै। किते अटक कै खड़ी होती तो फेर कल्पना मैं उसका फौजी आण खड़ा होता - स्वर्णा नै बड़ा सहारा मिलता।

13

मेरठ छावनी म्हं जब तक जागे अर सुजानी रहे एक त्यौहार सा मन्या। हर फौजी नै आपणे मां-बाप की मूरत उन दोनआं म्हं देख्यी। हर किसे नै कोशिश करयी के मां बाप की के सेवा कर द्यां। उल्टे चालण लागे तो सुजानी की आंख नम सी होगी थी। सुजानी भावुक लुगाई तो थी पर कमजोर नहीं थी। आपणी उदासी पै हंसी का ओढ़णा झट तै ओढ़ लिया था। टेशण पै छोड़ण आये युद्धवीर, गुरूप्रीत अर दो चार फौजी और। गुरूप्रीत बार-बार स्वर्णा का नाम ले ले युद्धवीर नै छेड़ दे था। युद्धवीर मां-बाप के होते हुये एक ए काम कर संकै था। बस शरमा ज्या था और करता भी तो के? ट्रेन म्हं बैठे-बैठे सुजानी छावनी की बात जागे गेल्याँ करती रही। जागे भी खुश था आपणे बेटे का हौंसला देख, उसकी सारी बड़ाई जो अफसरां नै करी, वै जागे खातर एक बहोत बड़ा सम्मान था। रोहतक टेशण पै उतरे तो

थोड़ी सी राहत मिली। एक तरफ नै ठण्डे पाणी का प्याऊ था, जागे पाणी पीण चला गया। एक बूढ़ा पहल्यां ए कोडा हो कै पाणी पीण लाग रह्या था। जागे ठीक उसकै पाछै खड़्या था।

"रै सारा ए पीवैगा के एक आधा गिलास छोड़ दिये म्हारे खातर" - जागे नै हल्की सी हांक लगाई

"ले भाई तू पी ले - हाम तो फेर पी ल्यांगे" बूढ़ा मुड़्या तो जागे अर वो आमने सामने थे

"ओ हो जागे भाई" - बूढ़ा चौंका

"दलीपे तू? तू आड़ै के करें सै" - जागे नै मिलण का खुशी की इजहार करया।

"रै मैं तो आड़ै मण्डी म्हं आया था आपणै गाम का पन्ना बाणिया आड़ै आया करै - मन्नै सोची गाम की हवा तवा पता करल्यूँ" - दलीपा बोलते बोलते गंभीर सा होता चलया गया।

"हाम तो छावनी म्हं गये थे युद्धवीर नै मिलण चाल तेरी भाभी भी सै गेल - जागे नै दलीपै का हाथ पकड़ लिया, अर आपणै पाछै-पाछै कर लिया। सुजानी बैंच पै बैठगी थी। टेशण पै कसूती काँ-काँ माच रही थी। कदे उधर लखावै तो एकाधा सड़ियल बाबा दिखज्या - मुँह फेरै तो एक बावला सा छोरा नंग धड़ंग मुंह तै लार टपकाता दिखै। बहोत जी सा खराब होया।

"ले भागवान! देख, के ल्याया मैं!" जागे नै सुजानी का ध्यान बटांया।

सुजानी एक टक दलीपै की तरफ देखे गई।

"हाय मेरे तो कोन पिछाण म्हं आया"

"रै बावली दलीपा नहीं से कै? जागे नै हल्की सी डाँट मार्यी।

"हाय डूबगी, दलीपे! हो देवर तेरे कै होया। के बात, बीमार होग्या था के? कितणा काला रंग हो रह्या सै, ज्यातै पिछाण म्हं कोन आया - मेरी बेबे के का ज्ञान सै" - सुजानी नै एक सांस म्हं सारी बात कहदी।

दलीपै नै एक दम ठंडी सास छोड़ी - "बस वा थोड़ी सी बीमार सी हो री सै"

"कै बात दलीपै सब ठीक तो सै" - जागे कुछ चिन्तित सा होगा

"ना सब ठीक सै - चालो थाम मेरे गेल चालो, दिखे थामने देख कै उसका भी जी ठीक होज्यागा।

जागे अर सुजानी आंख आख्यॉं म्हं बतलाये - दलीपै का बुलावा स्वीकार कर गेल-गेल हो लिये।

दलीपा अर उसकी घर आली किताबो- ये दोनू सुजानी नै बहोत प्यारे लाग्या करते। सुजानी जब ब्याही आई तो गाम म्हं एक ए साथण गेल उसका मिजान खाया, वा थी किताबो। किसे की चुगली चर्चा नही। सबकी मदद करण नै तैयार रहती। बोल कोयल तै भी मीठा। कदे किसे की बुराई नही करी। ये सब वै गहणे थे जो किताबो कै रूप नै सजाया करते। सुबह तै ले कै शाम तक जितणे भी काम होते, सुजानी नै किताबो का साथ हमेशा पसन्द रहता। जागे का अर दलीपै का खेत भी लागता ए था तो खेत म्हं भी कठ्ठी जाती। दोफारी म्हं जब फुरसत होती या तो सुजानी कै घरां किताबो आ जाती या फिर सुजानी किताबो कै घरां चली जाती। चरखा ले कै बैठती तो भी जुबान पै किसे की निन्दा चुगली ना आती, बल्कि राम के भजन आते। एक भजन जब दोनू मिलकै गाया करती तो गाम की दुसरी लुगाई मन लगा के सुणती

-

"आज म्हारै राम आवैगे, पलकां तै मैं तो बगड़ बुहारूँगी,
मैं तो बनूगी दूब जमना की, कष्ण जी म्हारे गऊ चरावैंगे।

दोनू एक दूसरे की मुंह बोली धर्म बहाण थी। फाल्गण के महीनै म्हं सुजानी अर दलीपै के बाज से लड़ते। दलीपा सुजानी पै पाणी गेरण त नही हटता तो सुजानी नै भी दुपट्टै म्हं रस्सी डालकै कसूता कोरड़ा बणा राख्या था। जब दोनू होली खेलते तो गाम खातर एक उत्सव सा होया करता। गाम की छोरी पाणीयां के मटके भर-भर ल्याये जाती, अर दलीपै अर सुजानी की अगुवाई म्हं सारा गाम के देवर भाभी जम कै होली खेलते। इस दौरान जागे आपणी बैठक म्हं बैठ के चौपड़ खेलता या फेर खेत क्यार की तरफ निकल जाता। होली का त्यौहार उसनै भी पसन्द था, पर इस मार कुटाई तै दूर ए रह्या करता।

दलीपै अर किताबो कै तीन सन्तान होई, पर उनमें तै बचा एक ए। सुरेश दलीपै अर किताबो की आख्यां का तारा था। एक ए सन्तान म्हं मां बाप का मोह और भी घणा होज्या सै। दोनुआं की या ए इच्छा थी अक उनका बेटा पढ़ लिख कै बड़ा आदमी बणज्या। कदे भी सुरेश पै कोय तकलीप नहीं आण दी। स्कूल म्हं जाण का टैम होता तो दलीपा आपणे कान्धै पै बिठा कै ले जाता। कोय खाण की चीज घर म्हं आती तो पहल्यां सुरेश का पेट भर्या जाता, जै बच भी जाती तो मां-बाप खाण की सोच्या करते। दसवीं करते-करते सुरेश होशियार बालकां म्हं गिणा जाण लागग्या। दलीपै कै आठ किले थे, सारे उपजाऊ। पैसे-धैले की तरफ तै कोय घणी सी चिन्ता ना थी। सुरेश का होस्टल म्हं दाखला करवा दिया। दलीपै अर किताबो की हर दम या ए चिन्ता रहती, कदे सुरेश क्यायें की तंगी म्हं ना हो। बढ़िया

तै बढ़िया कपड़े, खानपीन खातर हर वा चीज जो गाम म्हं तै जा सकै थी, दलीपा अर किताबो आपणे मुंह का टूक तक सुरेश धोरे पहुंचाते। महीनै म्हं एक बार दलीपा होस्टल जाता। जिस दिन होस्टल जाणा होता वो तड़कै ए निकल लेता। इतणै म्हं पहुंचता सुरेश कॉलेज जा लेता। भूखा भाणा होस्टल कै गेट पै बठ्या रहता। सुरेश जब दोफारी म्हं होस्टल आता तो उसकै सांस म्हं सांस आता। सुरेश नै जब इतणा प्यार बोनस म्हं मिल्या तो थोड़ा मरोड़िया होग्या। आपणे बाबू पै भी कई बार लताड़ लगा देता।

"इतणी जल्दी आण की के जरूरत थी? सारै दिन का आड़ै बैठ्या सै?" सुरेश फटकारता तो दलीपा केवल खीस निपोरता।

"ना मैं तो इब्बे आया सूं" सारा दिन कित होग्या?"

सुरेश सामान ले कै आपणे बाबू नै चा पाणी पूछता

दलीपा सवेरै तै भूखा भी होता तो नाट जाता।

फेर बस स्टैण्ड पै आकै चाय की दुकान पै बढ़ता, पर कदम उल्टे खींच लेता न्यू सोच कै

"इब जा पहुंचगा गाम म्हं फेर किताबो अर मैं कट्ठे बैठके पीवांगे"

ऐसा नहीं था के दलीपा कंजूस था, पर उसनै किताबो तै बहुत लगाव था। उसकै गेल बैठ कै चा पीकैं सारी थकान दूर होज्या थी।

घरां जा कै दलीपा किताबो के हर उस सवाल का बढ़ा-चढ़ा कै जवाब देता जो सारे दिन किताबो बैठ कै घड्या करती।

फटकार आली बात छुपाज्याता। किताबो कै स्यामी भी कई बै सुरेश कड़वा बोल्या करता। पर इस दुनिया म्हं दो इश्क बेकाबू बताये, एक तो बुढ़ापै का इश्क अर दूसरा औलाद का इश्क। दलीपा अर किताबो आपणे बेटे कै मोह म्हं बेबस थे। अर फेर उनकै जीवन में एक ए तो

चांदणा था वो था सुरेश। उनकी खुशी बस सुरेश की खुशी म्हं बसी थी। सुरेश नै डिग्री बहोत अच्छे नम्बरां तै पास करी। गाम म्हं चोगरदे बहोत बड़ाई मिली। उस दिन दलीपा मिठाई ले कै सुजानी धोरे आया था। दलीपा नशे तै सौ सौ कोस दूर था, पर आज अपणी मेहनत की सफलता का नशा उसकी आख्यां म्हं बिल्कुल साफ नजर आवै था।

"ले भाभी तेरे बेटे नै बहोत बढ़िया नम्बर लिये सै, खा लाडू खा"

"बहोत आच्छी बात सै देवर! आक कै पेड़ पै आम लाग ग्या" सुजानी नै फब्ती कसी तो दलीपा भी जोर तै हांस्या फेर आंख्या म्हं थोड़ी नमी आई।

"भाभी बहोत डर्या करता दुनिया के बालकां के लिछण देख कै, पर सुरेश नै म्हारी इज्जत राखी"

"दिखे जिन मकानां की नीव बढ़िया हो सै नै देवर, वै आसानी तै हाल्या ना करते। थाम दोनू बीर मर्दानै बढिया बात सिखाई छोरे तांय, सो कामयाब होग्या।"

सुजानी नै दलीपै की कमर थपथपाई।

दलीपा बहोत सीधी सोच का आदमी था। कुछ भी नहीं छिपा पावै था, वो खुशी हो चाहे दर्द। और नहीं तो सुजानी आगै तो सब कुछ बताया करता। टोटे की, नफै की। सुरेश नै एक नौकरी खातर फार्म भर्या। टैस्ट होणा था तो कोचिग की इच्छा जाहिर करी। वैसे तो दलीपै की दाल रोटी ठीक चाल रही थी, पर मोटै खर्च खातर धोरे कोय खास रकम ना थी। पर सुरेश आगै कोय तकलीफ ब्यान नहीं करी। किताबो तै बतलाया, अर अगले दिन मण्डी मैं जाकै बाणिये धोरै चुपचाप तीस हजार रूपये ल्याकै सुरेश कै हाथ पै धर दिये। सुरेश नै

रूपये पकड़े। अगर वो दलीपै कै मुंह की तरफ देख लेता तो शायद पता भी लगता के ये रूपये कित तै आये सै? पर उसनै जरूरी नहीं समझ्या। रूपये बैग म्हं धरे अर निकल लिया।

ट्रेनिंग कै बाद समस्या थी नौकरी। सुरेश मैरिट म्हं तो आवै था पर आजकाल समाज नै भ्रष्टाचार का कुर्ता बणा कै पहर लिया। या बात सुरेश जिसे होशियार बालक नै भी पता थी के बिना पीसां काम ना बणैं, पर इबकै बात काबू तै बाहर थी। पांच लाख रूपये मांगे थे दलाल ने।

दलीपै नै सुणी तो चुप्प रहग्या।

किताबो भी चिन्ता म्हं पड़गी।

अगले दिन सुबह सवरे पहली बस तै आपणै भाई धोरै गई, पर आई खाली हाथ।

कई बै दलीपै कै मन म्हं आई के जागे नै कहद्यूं पर किताबो नै न्यू कह कै रोक लिया अक वो तो आखरी उम्मीद सै, पहल्यां और सारे साधन करकै देखल्या और शायद या बात सुरेश नै भी आच्छी ना लागै।

मन भटकै था इधर उधर। दलीपा भटकता भटकता सुजानी धोरै पहुँच्या।

"आज्या देवर बैठ किमै परेशान सा दिख्या"

"ना भाभी ठीक सूं बस कई बै थक सा जा सूं" दलीपै नै बहाना बणाया।

"ले ठीक टैम पै आग्या। एक बै अड्डै पै जाकै तेरे भाई नै देख कै आ, आ लिया अक नहीं?" सुजानी बोली।

"क्यू कितजा रहया सै जागे! सवैरे तो आड़ै ए था" दलीपै नै सहज भाव तै पूछ्या।

"के जा रह्या था? वो सूर्रो का बटेऊ नौकरी लागै सै। आजकल बिना पीस्साँ कोय काम नहीं बणता। उरान परान तै कट्ठे कर के लाख रूपये बणे सै, वे ए देण जा रह्या सै। पचास हजार रूपये युद्धवीर तायं कहे सै" सुजानी नै सारा गणित समझाया।

दलीपै की रही सही उम्मीद भी जाती रही। इब किस मुंह तै मदद मागूं। सुजानी की इस बात पाछै दलीपा और भी परेशान होग्या।

"ले भाभी जाऊँ सूँ। देखूँ सूँ अड्डै पै जाकै जागे आया के नहीं"

"देवर चा तो पीज्या" सुजानी जब तक आवाज लगाती, दलीपा बाहर निकल लिया था।

किताबो अर दलीपा सारी रात जागते पड़े रहे।

रात के तीसरे पहर म्हं एक कठोर सा फैसला लिया अर नींदका घोड़ा खोल दिया।

किताबो धोरे जितणा चांदी सोना था, उसनै पोटली म्हं बांध क तैयार कर दिया।

दलीपा मण्डी मैं बाणिये धोरे गया अर कागजां पै गुंठा ला दिया, दो किले गहणै धर दिये। सुरेश नै भी तब्बै पेट भर खाणा खाया जब उसनै पीसे दीख लिये। मां बाप कै लाड प्यार नै सुरेश का स्वभाव स्वार्थी सा बणा दिया था। उसनै पूछण की जरूरत ए नहीं समझी के यू इतणा पीस्सा आया कित तै।

नौकरी लागगी तो दलीपा अर किताबो जमीन अर जेवरात जाण का दु:ख भूलगे। दलीपा जब खेत म्हं उन किलां म्हं खड्या होता तो इसा लागता के एक-एक खूड उसनै गाल देण लाग रहया सै, पर आज वो

जब खेत म्हं गया तो उन किलयां म्हं खड़ा हो कै बड़बड़ाया।

"चलो तेरी कुरबानी काम तो आई"

नौकरी लागते ही सुरेश के रिश्तयां की बौछार होगी। रिश्तयां आले न्यू टूट पडये ज्यूँकर मरे होय डांगर पै करगस टूट कै पडया करैं। दलीपै की मूंछ और पैनी होती गई। एक दिन जब सुरेश गाम म्हं आया तो रोटी पाणी खा कै दलीपा अर किताबो उसकै धोरे जाकै बैठगे। दरअसल दलीपै कै एक रिश्ता पसन्द आ गया था। एक दिन वे दोनू जाकै छोरी भी देख आये थे। अगलां नै न्यू कह कै आये थे के इबकै सुरेश आवैगा तो उसतै बात करकै थामनै बेरा भेज द्यांगे। बात थाम पक्की समझो। सुरेश म्हारै तै बाहर थोडे ए सै।

"बेटा एक बात करनी थी तेरे तै" दलीपै नै मौका सा देख कै बात शुरू करी।

"के बाबू" - सुरेश नै बिना उपर देखे पूछ्या।

"दिखे बेटा जब तै तेरी नौकरी लागी सै, रिश्ता आले खूब चक्कर काटै सै" किताबो नै सुरेश कै सिर पर हाथ फेर्या।

"पर मैं भी या ए बताण आया था बाबू! मन्नै एक लड़की देखी सै, मन्नै पसन्द सै। कालेज म्हं इबे इब लैकचरार लागी सै, उनकै घर के आगले इतवार नै आवैगे देखण। अर देखण के मान तान करण आवेगे। बाबू तू गाम के जुणसे माणस बलाणे हो बुला लिये - सुरेश नै नाड़ नीची करे करे ये सारी बात बोली।

जुणसा माणस नजर बिना मिलाये बात करै, उसकै मन की थाह लेणी बहोत मुश्किल हो सै, पर यू तो उनका आपणा बेटा था जो आज इतणा गहरा होग्या था, अक दलीपा अर किताबो तह ना पा सके।

दोनूआं कै मुंह तै कुछ ना निकल्या।

"लै ठीक सै बेटा! तन्नै पक्की कर दी तो। जीवन तो तन्नै गुजारणा सै, म्हारां के? हाम तो ढ़लदी छां सै। पर वा बहू गाम म्हं के रहलेगी। न्यू ए सोचू था" - जागे की हालत धतराष्ट्र जैसी थी, दूर्योधन उसकै मन की बात नहीं समझै था।

"गाम म्हं किसनै रहणा सै बाबू- उसपै के इब तो मेरे ए पै ना रहया जा" सुरेश बोलदा बोलदा बाहर निकलग्या।

किताबो नै दलीपै की तरफ देख्या। दलीपै का रंग सफेद पड़ग्या था। किताबो रो पड़ी.....

"जिस दिन मन्नै गहणे बेचे, धरती गहणे धरी तो दुःख तो होया था पर सब्र था, पर आज इसनै तो.

"चुपकर बावली। गाम म्हं रह कै नौकरी बणै सै के । फेर सुरेश इतणा पढ़ाया लिखाया तो के गाम म्हं डले ढ़ोण खातर -

बात दलीपै की जायज थी, पर किताबो कै दर्द पै मरहम ना बण सकी।

ब्याह होया। रस्म भी उतणी अक होई जितनी सुरेश नै आच्छी लागी। गाम का यू पहला ब्याह था जिसका प्रबंध सबकी समझ तै बाहर था। जिनकै घर ब्याहण गये वै थे तो गामां के जमीदार किसान, पर शहर म्हं रह कै आधे तीतर आधे बटेर हो रहे थे। गाम म्हं तै जितणे देसी बाराती गये, उन्नै देख कै घणे से राजी ना थे। शहर के "हैलो हाय" आले लोग जो ब्याहां म्हं भी इसे ढ़ाल जाया करै जाणो अफसोस करण जाते हो, उन लोगां के नजदीकी थे। दो चार मुंह चावलां म्हं मार कै अर एक रंगीन लिफाफै म्हं नोट घाल कै आपणी शुभकामनाये दे दे कै लोग आवै थे, अर जावै थे। गामां के कर्मठ किसान मिठाई की तलाश करते रह्ये। ले दे के निपटग्या ब्याह!

नई बहू जब गाम म्हं आई तो किताबो के खूब रंग चाव था, पर सुरेश

की नई ब्याहता के अंग्रेजी नखरां नै सारा नशा तार दिया। शहर की पली बढ़ी थी सुमन। गाम का कठोर जीवन तो उसनै सपन्याँ म्हं भी ना देख्या था।

"ओ सुरेश! इट ठू होट? कुछ करो ना" सुमन नै जब जुबान खोली तो गाम की सारी लुगाई जोर कै हांसी।

सुरेश नै वैं डांट-डपट कै चालती कर दी।

"चालो ए चालो दिख्या नै इसा बन्नो आला - देखिये तो तन्नै खुवावैगी या खीर" - गाम की लुगाई भविष्यवाणी करकै चालती बणी।

बात साची निकली! हफ्तै भर तो रस्मो रिवाज का बन्धन रह्या तो सुरेश अर सुमन गाम म्हं आये। उसकै बाद रोहतक कै सैक्टर मै एक मकान लिया अर आपणी दुनियां बसा ली। सुमन कै घर के बहोत अमीर थे, सो मकान दहेज मैं मिलग्या। एक ए एक बेटी थी सुमन। जी भर कै दौलत लुटाई सुरेश अर सुमन पै। उन्नै आपणी बेटी खातर ठण्डी छाँ आला पेड़ मिलग्या। पर उसकी जड़ां मैं जिनका खून पसीना था, उन्नै भूलगे, और तो और सुरेश भी।

दलीपा अर किताबो उदास से रहण लागगे।

शुरू-शुरू म्हं हफतै वार रोहतक आया करते। आहिस्ता-आहिस्ता महिनै म्हं बदलगा यात्रा का कार्यक्रम।

दलीपा अर किताबो खेत म्हं भी जाते तो अनमने मन तै। दोनू एक दूसरे की तकलीफ समझैं थे। कदे कदे आसूआं की पंचायत जुड़ती तो कदे कदे हालत पै हंसी के मोर भी पीऊ पीऊ करण लागते।

"मति मारी गई थी। घर तै सारी टूम ओर काढ़ कै दे दी" किताबो हांसती तो दलीपा हांक लगाता।

"ठीक सै इब बुढ़ापै म्हं टूम पहर कै के मेले म्हं जागी भागवान"

दोनू हंसते तो मन का दर्द तिलमिला उठता, अपणी अनदेखी पर तुरन्त जबान पै आ जाता

"टूमां का के दुख, जुण सै तायं आपणे जिगर का खून प्याया वो ए हाथ छुड़ा गया" किताबो सांस भरती। दु:ख साच्चा था। रग पर होये फोड़े फुन्सी तावले से ठीक ना होया करते। दलीपा अर किताबो तिलतिल कर टूटते रहे।

साल पाछै जब दलीपै नै बताया था के तू दादी बणन आली सै तो किताबो कै चेहरै पै रंगत लौट आई। चलो दूर ए सही, पर सीली हवा आये जा, इसमै ए माँ-बाप खुश।

उस दिन सुरेश गाड़ी ले कै आया था।

सुमन तॉय डाक्टर नै खास हिदायत दी थी - घणी सी मेहनत खुबात ना करण की। काम आली तीन-चार बदल बदल देख ली, कोय नही टिकदी। फेर बाहर का आदमी बाहर का हो सै।

मां -बाप के मन का मैल बहोत कच्चा हो सै। संगमरमर पै जमा होया रेत मामूली सी फूंक मारते उड़ जाया करै। किताबो एकदम तै तैयार होगी शहर जाण खातर। पर संकट यू था अक दलीपा कित रहवै।

औलाद की हठ जीतगी एक घर कै ताला लागगा, दूसरे की रौनक बढ़ाण खातर......।

सुमन कै छोरा होया। दलीपा बाहर बैठया था तो किताबो एक स्टील की प्लेट अर चम्मच बजाती बाहर आई। दलीपा समझ गया खुशी का संदेश।

"न्यू के आहिस्ता आहिस्ता बजावै सै - ल्या मन्नै दे। असल मैं तो या प्लेट ए नकली सी सै - गाम म्हं होन्दा तो काँसे की बड़ी थाली बजाता" - दलीपै नै प्लेट ली अर जोर जोर ते चमच तै पीटण

लागग्या।

"ओ हो बाबू क्या कर रहे हो? सुमन सो रही है। इट्स क्वाईट नान सैन्स" - सुरेश नै आकै उत्सव बिगाड़ दिया। बेटे की बात सुण हाथ औड़े ए के औड़े रुकगे।

किताबो अर दलीपै नै सिर्फ एक दूसरै की तरफ देख्या।

दलीपै का काम दूध ल्याणा, अखबार बाहर लान तै उठा कै ड्राईंगरूम म्हं घर कै आणा। हुक्कै की तलब होती तो कोय रास्ता नहीं मिलता। पार्क म्हं जाकै बीड़ी के दो कश चुराणे पडया करते। किताबो घर की सफाई, बालकाँ की देखभाल, कोय बाहर का आ ज्याता, तो चाय भी बणा देती। शुरू शुरू म्हं घणे मीठे की चाय बणाई तो सुमन नै नाक भौं सिकोड़ी। आहिस्ता आहिस्ता सीखगी। गाम म्हं जाण का जी करता तो एक हफता पहल्यां अर्जी लगाणी पड़ती। छुट्टी भी मिलती तो इस शर्त पै के इतवार नै सांझ नै घरा आ जाईयो उल्टे। गाम म्हं जाकै दलीपा अर किताबो अपणे बहू बेटे की खूब बड़ाई करते। सुजानी अर जागे नै कई बै खोद-खोद उनका दर्द भांपण की कोशिश करी, पर दलीपै अर किताबो के पुत्र-मोह की चट्टान बहोत घणी मजबूत थी। आपस म्हं बैठ कै रो लिये, पर मुंह तै उफ तक नहीं करी। मण्डी तै बाणिये का सन्देशा आया तो दलीपा संकट म्हं पड़ग्या। एक दिन हिम्मत सी कर कै सुरेश ताहीं करजे आली बात बताई तो संकट खड़ा होग्या। सुरेश नै अपणे पिता गेल्या जम कै झगड़ा कर्‌या। तय यू होया के जमीन सारी उसकै बेटे कै नाम करवा देगा दलीप, फेर सुरेश जाणै आर उसका काम। अर एक दिन कोर्ट म्हं दलीपै न आपणे हाथ काट कै सुरेश के नाम कर दिये।

सुरेश शहर कै रंग म्हं रंग रह्या था। धरती नै मां कह्या

करैं, अर वा जमीदार की इज्जत हो सै, ये बात उसके नजदीक भी ना थी। नतीजा यू होया के जमीन अर गाम आला घर बेच दिया। दलीपै अर किताबो का जीवन एक आलीशान घर म्हं बेशक गुजर रह्या था पर आज उन्नै न्यू लाग्या के उनकी आत्मा बेघर सी, वीरान बंजर कै बीच खड़ी सै। उनकै लाड-प्यार नै एक इंसान का रूप तैयार करण की सोची थी, पर सुरेश नै क्यां का नाम द्‌याँ, आज उनकै समझ नहीं आ रही थी। वै दोनू घर म्हं कैद होकै रहगे। दिन ब दिन उनका रूतबा घटता जा रह्या था। सुमन के भाई भतीजे आते तो बूढ़ा-बुढ़िया घर के पिछले तरफ बणे नौकरां आले कमरै म्हं चले जाते। एक पंखा था, जिसकी हालत भी उन्नै बरगी थी। शायद दोनूंआ का हाल समझै था, ज्यातै जितणी अक ताकत बच रही थी, उसतै वो दोनूआं नै हवा देता।

किताबो पिछले पन्द्रह दिन तै बीमार थी। खेतां म्हं दब कै काम कर्‌या करती, तो कुछ तकलीफ नहीं होया करती। पर आड़ै बीमारी मन तै शुरू हो के तन नै खाणा शुरू करण लागगी। सुरेश अर सुमन आपणै जीवन म्हं व्यस्त थे। उन्नै फुरसत नहीं थी, कदे आपणै काम तै, अर कदे पार्टियां तै। दलीपा की गोज म्हं इबे पीसे भी नहीं रहया करते, सो दवाई खातर भी सुरेश की बाट देखणी पड़ती। आज इसै उम्मीद म्हं घर तै मण्डी की तरफ आया था के हो सकै सै पन्ना बाणियां मिलज्या तो उसपै कुछ ले ल्यूं। पर वो मिल्या नहीं तो टेशन की तरफ निकल आया, जित उसनै जागे अर सुजानी मिलगे।

सैक्टर मैं पहुंचे तो दलीपै नै गोज मैं तै एक कागजी सी निकाली, अर सुजानी ताय बोल्या-

"इसमैं तेरी बेबे की दवाई लिख राखी सै। मेरे धोरे इब हाल

बटुआ कोन्या। ले चालां, जै पीसे हो तो'....'

सुजानी कै जोर का झटका सा लागग्या। वा न्यू जाणै थी के दलीपा कितणा कमाऊ अर मजबूत आदमी था। गाम मै उसनै किसे की नहीं धराई, या बात कहण मैं उसका कितणां हांगा लागग्या होगा वा समझगी पर चेहरै प कोय भाव नहीं आण दिया।

मां बाप गेल किसा भी बरताव औलाद करै, पर मां-बाप दूसरां क स्यामी अपणे कालजै की बुराई ना करै। घर पहुंच कै दलीपै नै सारा घर जागे अर सुजानी ताहीं दिखाया। सुजानी का ध्यान सिर्फ अर सिर्फ किताबो म्हं था।

"किताबो कित सै देवर?" एक बै नहीं पांच बार पूछ्या"

"किताबो रै कित गई भागवान" दलीपै नै सहज होण का नाटक कर्‌या।

जब नहीं आई तो मजबूरन दलीपा उन्नै ले कै पिछले कमरै म्हं गया। किताबो आंख मीचे लेट रही थी। जब सुजानी नै किताबो कै माथै पै हाथ धरया तो चेतना लौटी। किताबो का माथा तपै था।

"हे राम या तो बुखार म्हं तपै सै" - सुजानी का बोल सुण्या अर उसके हाथ का स्पर्श किताबो कै माथै नै मिल्या तो जीवन थोड़ा सा मुड़या।

किताबो नै आहिस्ता आहिस्ता आंख खोली -

"सुजानी.....?" एक दम तै बेरा ना कित तै जान आई किताबो उठ कै सुजानी तै लिपटगी।

"हे मेरी बहाण..... मेरी बेबे".....न्यू कहै कै गला जवाब देगा। आख्ँया तै गर्म-गर्म आंसू बगावत करगे।

जागे सब मामला समझगया।

दलीपै की तरफ लखाया तो उसकी आंख्या तै भी गंगा जमना बहण लाग रही थी।

जागे नै कान्धै हाथ धर्‌या तो फूट पडया।

"भाई रै हामनै ले चाल आड़ै तै"

फेर जागे अर सुजानी नै बैठ कै उनकी बात सुणी तो पात्थर होगे। घणी ए देर सारे चुपचाप बैठे रहे। बूढ़ा पंखा लचर-लचर की आवाज करकै उनका साथ दे रहया था।

जागे बहोत सुलझा होया आदमी था। पर आज उसकी भी समझ नै काम ना करया। करूँ भी तो के करूँ। सुजानी की तरफ देख्या। हमेशा की ढ़ाल सुजानी की आख्यां नै वा ए गवाही दी जो सच्चा न्याय था। जागे, दलीपा सुजानी अर किताबो घर तै बाहर निकले ताला लाया अर स्यामी दुकान पै चाबी दे के निकल पड़े। घर के बाहर पेड़ पै बैठे घणेए तोते रोला कर रहे थे। शायद आजादी का गीत गा रहे थे। जागे नै गाम के मौजिज आदमी कट्‌ठे करे। जिसनै घर लिया था वो भला आदमी था। पीस्सा का कोय तकाजा नहीं करया, घर खाली कर दिया। किताबो आपणै घर म्हं आकै खूब घणी राजी होई। बिना दवाई ठीक होती चली गई। दलीपै नै सुरेश के बेचे होय किल्ले बाध ौ पै लिये। शुरू म्हं जागे नै पीस्से धेली की मदद करी। सुरेश दो दिन बाद आया तो था गाड़ी लै कै, पर मां-बाप नै लेण नहीं। दो तीन चाबी नहीं मिल रही थी उनका पता करण आया था। जब जाण लागग्या तो किताबो उसकै खातर बाहर लपकी - दलीपै नै हाथ पकड़ लिया।

"ना किताबो बस इब ओर नहीं - इब जितणे भी दिन जीवांगे दोनू

जींवागे'' - किताबो कै पास कोय जवाब नहीं था।

जीवन का पहिया जो पिछले कुछ सालां तै डगमग था, रफ्तार पकड़न लागग्या। पर किताबो की सेहत म्हं घणा सा सुधार नहीं आया। सुजानी उसका खास ध्यान राखती। इब तो जागे भी हर रोज जब तक दलीपै नै ना मिल लेता, सोया नहीं करता।

दलीपै कै हसी ठट्ठे बिल्कुल खत्म होगे। हारा होया जुआरी जब अपणी दौलत याद करता है तो बहोत कष्ट की घड़ी हो सै। सौ-सौ मण की झाल उठै थी, पर कित टकराती। मन की दीवार बड़ी कठोर होगी थी उनतै टकरा कै उल्टी ए चली जाती। दु:ख बतावै भी तो किसनै अर के कह कै। आत्मा का एक अंग कट कै पड़ग्या था दलीपै का। घायल सा डोलता रह्या। कदे घरां कदे खेत म्हं। दलीपै अर किताबो नै उल्टे आण का कोय दु:ख ना था। पर जिन हालत म्हं वै उल्टे आये वो दु:खदायी था। युद्धवीर नै भी जब सारी बात पता लागी तो उसकी मुट्ठी तनगी। सुरेश इतना गन्दा हो सकै सै या उम्मीद ना थी।

''वो था ए नुगरा - बचपन तै ए'' और भी बेरा ना के याद कर कै युद्धवीर सुरेश पै आपणा गुस्सा उतारता रहा।

14

युद्धवीर अर स्वर्णा क ब्याह की तैयारी बणगी। युद्धवीर नै भी छुट्टी मिलगी। गेल्या गुरूप्रीत नै भी। उसका खास यार था वो, या बात मिल्ट्री के अफसरां नै भी मालूम थी। दोनू छुट्टी ले कै चाल पड़े। युद्धवीर नै बताया के रोहतक किमे काम सा सै, घंटा दो घंटा

रोहतक म्हं लगा कै फेर चालांगे। गुरूप्रीत नै भी हां मैं सिर हिला दिया।

सुरेश आपणे दफ्तर तै गाड़ी ले कै उल्टा आण लाग रह्या था। रास्तै म्हं सुमन का फोन आया तो बाजार म्हं तै उसनै गाड़ी म्हं बिठाल्याया। सैक्टर शहर तै थोड़ा सा बाहर था। एक किलोमीटर लाम्बी सड़क कै बाद जब मोड़ आया सुरेश की गाड़ी आगे एकदम एक सरदार आग्या।

''यू स्टूपिड दिखता नहीं?'' सुरेश चिल्लाया

''इडियट अन्धा है क्या?'' सुमन नै भी वकालत करी

''ओय गाली क्यू दें दा है खोत्या'' सरदार नै आव देख्या ना ताव, सुरेश का गला पकड़ कै गाड़ी कै बाहर खींच लिया।

''ताड़ ताड़ ताड़'' सुरेश कै लगातार तीन थप्पड़ पड़े। सुमन चीखीं चिल्लाई, पर किसी ने उस झगड़ै म्हं बीच बिचाव तक नहीं किया।

सुरेश का चश्मा दूर जा पडया।

सरदार नै थप्पड़ा का एक राऊंड ओर काढया।

जाता-जाता गाड़ी की चाबी निकाल लेगया।

थोड़ी सी दूर प युद्धवीर यू तमाशा एक पेड़ की ओट म्हं खड़या हो कै देखण लाग रह्या था। गुरूप्रीत सुरेश नै पीटण लाग रह्या था तो युद्धवीर मन ए मन प्रसन्न हो रह्या था। दोनू फौजी गाम की तरफ निकल लिये।

''या बात घरां मत बता दिये सरदार - नही तो बाबू खाल उधेड़ देगा'' युद्धवीर बोल्या।

"केहडी बात?" गुरूप्रीत नै बड़ी मासूमियम तै उत्तर दिया, दोनू एक दम जोर तै हांस पड़े।

जागे अर दलीपा बैठक म्हं बैठे थे जब युद्धवीर अर गुरूप्रीत पहुंचे। दोनुआं नै पायाँ कै हाथ ल्याया। युद्धवीर नै आहिस्ता सी गुरूप्रीत कै कान म्हं बताया, अक यू सै दलीपा जुणसै का जिकर था। गुरूप्रीत दलीपै की तरफ मुड़ता होया बोल्या।

"चाचा जी तुसी चिन्ता न करयो। जेहड़ी औलाद मां-बाप दा अपमान कर दी है, वो सुखी नहीं रह सकदी"

"ना बेटा कोय बात नहीं। हाम तो इब भी न्यूएं कंहवागे, वो जित भी रहो सुखी रहो"। दलीपा उदास भाव तै बोल्या।

जागे दलीपै कै दरद नै आच्छी ढाल समझै था।

जब कोय हरा भरा पेड़ अपणी जड़ तै हाल जा, फेर हरियाली बहोत मुश्किल आया करै।

"थाम जाओ घरां रोटी पाणी खाल्यो", जागे नै हुक्म दिया, तो दोनू फौजी घर की तरफ हो लिये।

ब्याह की तारीख एक महीने बाद थी। गुरूप्रीत नै अपणे घरां फोन कर दिया था। तय यू ए होया के बजाय इसके के गुरूप्रीत आपणे घरां जाता, सुजानकौर अर गुड़िया पहल्यां गाम म्हं आवैंगे। गुड़िया का रिश्ता पंजाब के सुनाम शहर म्हं पक्का कर दिया था। सुजानकौर इस बाट म्हं थी अक गुरूप्रीत खातर भी कोय रिश्ता मिलज्या तो दोनूंआ का कट्ठा ब्याह होज्या। एक जगहां बात लगभग पक्की थी। गुरूप्रीत नै अपणी मां-ताय साफ कह दिया था अक युद्धवीर कै ब्याह पाछै ए तारीख रखी जागी। दोनू परिवार भले ही दो अलग-अलग सूबां म्हं हों,

पर लगाव इतणा ज्यादा था ज्यूकर आंगली अर नाखूंना का होया करै। इस बात की चर्चा हरियाणा अर पंजाब दोनूआं के गामां म्हं थी। हफ्ते बाद सुजानकौर अर गुड़िया आगी। उसे दिन युद्धवीर अर गुरूप्रीत सुर्रो अर काबर नै लेण जा रहे थे। सांझ तक सारे कट्ठे होगे। दोनू बहाणां कै खूब चाव चढ़ रह्या था आपणे भाई के ब्याह का।

सुजानी किताबो धोरे जा कै आपणा एलान सुणा आई थी

"देखे बेबे! तेरे बेटे का ब्याह सै, आज कहू सूं फेर नहीं कहणा पड़ै। थाम दोनूं चालो अर ब्याह म्हं रल जाओ।"

"ए मेरा गात कहया कोन करदा इब सुजानी" मैं आड़ै ए ठीक सूं" किताबो नै बहाना बणाया।

"तो ठीक सै मैं भी या बैठी आड़ै - मैं भी ना जाऊ" सुजानी धम्म तै पीढ़ै पै बैठगी।

किताबो नै बेरा था सुजानी की हठ। चुपचाप खड़ी होई सूट बदल्या अर बोली

"चाल खड़ी हो बैरण, मन्नै बेरा सै तू मानै कोन्या"

इब सुजानी थोड़ा सा भावुक हो कै बोली -

"देख किताबो जुणसी कसर सुरेश कै ब्याह म्हं रहगी थी वा इस ब्याह म्हं पूरी करांगे दोनू बहाण - दिखो मन्नै बहू कै भाई ताय कह दिया सै - टेवै की तील दो ल्याणी सै"

किताबो की आख्यां म्हं पाणी आग्या। मन ए मन सोचण लागी के कुण सी कसर छोड़ी थी सुरेश कै जो उसनै मां-बाप भुला दिये।

दोनू जणी चाल पड़ीं।

मन्नै भी पन्द्रह दिन की छुट्टी लेणी पड़ी। थोड़ा बहोत बहाना भी

बणाया पर ताऊ जागे नहीं मान्या। युद्धवीर नै बेरया पट्या तो आकै स्पष्ट कर गया, देख तेरे गेल रागनी सुणन गया था तो या बीमारी बणी, इब इसकै इलाज कै टैम जै गेल नहीं रह्या तो मैं साफ नाट ज्यांगा।

रिश्ता म्हं ईमानदारी ही अधिकार को जन्म देती है।

युद्धवीर अर ताऊ जागे कै परिवार तै मेरा लगाव इसे ईमानदारी का हिस्सा थी।

"ठीक सै भाई हाण्डू-ब्याह के रोज रोज हौवे सै"

मन्ने आत्मसर्म्पण करया तो युद्धवीर हांस पड़या।

गुरूप्रीत भी जोर तै हांस्या - हाण्डु नाम सुण कै

"ओये ए तेरा नाम बड़ा चंगा है यार"

"तो तू आपणा धर ले - मैं कोय ओर नाम टोहल्यूंगा"

युद्धवीर नै पलटवार कर्‌या तो माहौल म्हं जोरदार ठहाका गुंज्या। दोनू फौजियाँ की मस्ती हफ्तै भर म्हं गाम खातर अच्छा भला मनोरंजन होग्या। सब खुश होते अर उन नै आशिर्वाद देते। ब्याह के सात दिन रहगे थे। मण्डी म्हं ट्रैक्टर गया अर जितणी भी खरीदारी थी, सारी बणगी। हलवाई का सामान, छोरिया का तील तांगा और भी जो चीज ब्याह खातर जरूरी थी वै सारी खरीदी गई। उधर स्वर्णा कै घर पै भी रिश्तेदारां का जमघट था। उसके तो भाती भी दो जगहां तै आणे थे। एक तो भगतै के मामे अर दूसरे उसके खुद के।

युद्धवीर का पहला बाना दलीपै कै घरा था।

सांझ होते होते गाम की घणी ए लुगाई आण डटी।

युद्धवीर खातर एक पाटड़ा बिछाया गया। गुरूप्रीत खातर एक-एक

चीज़ नई थी। सुजानकौर अर गुड़िया कै खातर भी यू एक नया अनुभव था। युद्धवीर किमै तो गोरा पहल्या ए था। जब मटणा मसल्या गया तो गाम की बहू जो युद्धवीर की भाभी लागै थी, उन्नै छेड़छाड़ शुरू कर दी।

"ए इसकै मटणै का के असर होगा इस खातर तो कोय न्यारा ए काम करणा पड़ैगा"

एकाधी सीमा भी तोड़ देती...

"ऐ फेर तू लिपटज्या मटणा बण कै"

सुजानी उन्नै हल्का सा डांटती तो हंसी का ब्यार बिखेरती। युद्धवीर ओर भी शरमा जाता। हल्दी तै मुंह लीपग्या। नहाण लागग्या तो लोकगीत के मीठे स्वर गुंजण लागगे -

"ताता पाणी समुद्राँ का ताता पाणी
हे म्हारे जागे का बेटा नहाईये
ताता पाणी हे म्हारै दलीपै का भतीजा नहाईये,
ताता पाणी म्हारी किताबो का बेटा नहाईये"

लोकगीत के इस संशोधन नै किताबो कै दिल मैं कितणी ठडंक पहुंचाई, उसका अन्दाजा ना था। सच म्हं आज वा आपणा सारा दर्द भूलगी थी। घणे ए साल बाद घर की एक-एक चीज़ की उदासी टूटी। किताबो म्हं एक नये जीवन का संचार होग्या। दलीपै न जब किताबो राजी देखी तो उसनै भी ठंडा सांस लिया।

नहाये पाछै जब युद्धवीर की आख्या म्हं स्याही घाली तो गजब का रूप निकल कै आया।

ब्याह तै पहलड़ी रात गाम की लुगाईयां नै मिल कै भात गाया।

बहू, बूढ़ी, ढेरी, नाइन, खातण सारी की सारी लुगाइयां का सुजानी गेल बहोत घणा लगाव था। लोकगीतां का एक-एक शब्द हर किसे के दिल तै निकल कै आवै था।

"क्यायें रज न्योंदू बाबल, क्याये तै चाचे ताऊ हे री
क्याये त न्योदूं मेरी मां का जाया जिसतै मैं उजली
भेलियां न्योदूं बाबल रज डलियां चाचे ताऊ
मिसरी कै कुजै मेरी मां का जाया जिसतै मैं उजली.........

क्याये पै आवै मेरी मां का जाया जिसतै मैं उजली। रथां में आवै बाबल रज मंझोलिया

चाचे ताऊ, हाथी के हौदे मेरी मां का जाया जिसते मैं उजली"।

गीत के बोल सबके कालजै म्हं उतरै थे। जिनकी भाई नहीं थे, उनकी आख्यां म्हं तो पाणी चुपचाप आकै गीता म्हं शामिल होज्या था। जिनके भाई आपणी दुनियां म्हं व्यस्त थे उन बहाणा के चेहरां का दर्द भी उत्सव का हिस्सा बणज्या था, पर औरत तायं भगवान नै एक गजब की शक्ति दी वा या ए सै के वै दर्द अपार होते हुए भी उत्सव म्हं नत्य कर सकती है। किताबो भी एक आदर्श औरत का उदाहरण थी। मन की किसे भी लहर के छींटे उसनै बाहर नहीं आण दिये। सुजानी की हंसी में हंसी मिला कै उसनै उदासी लौवे नहीं फटकण दी।

अगले दिन भाती आये। बटेऊ आये, माहण्डा झुकाऊ, सीटणे कसे गये। सुर्रो अर काबर की सखी सहेलियां नै मिल कै उनके बटेऊआं की जमकै क्लास ली। सब मस्त थे ब्याह की मस्ती म्हं।

जनेत चढ़ण लागी तो सुजानी नै फेर दिलेरी दिखाई। दुध प्याण आला नेग का टेम आया तो किताबो आगे कर दी। इब तक

किताबो भी रमगी थी। सुरेश आला दर्द असहाय सा हो कै कुण म्हं लागग्या था। जनेत चढ़ण लागी तो लोकगीतां नै फेर आपणी हाजरी लगाई -

"एक महल उपर बेल पसरी सारा तो बंगला छाईयां
तन्नै भली ए करी ए जागे के बेटा भाईयों न लेगा सिंगार के"

"न्यू मत डरिये रे बनड़े तू एकला चाले रै ताऊ तेरे संग
न्यू मत डरिये रे बनड़े एकला भाईयां की जोड़ी तेरे साथ"

जनेत आगलै गाम पहुंची तो गाम के एक न्यारा ए चाव था। ऐसा नहीं था के हर ब्याह म्हं इतणा चाव चढया करता, पर इबकै बटेऊ कै प्रति स्नेह, अर आदर था। गाम म्हं एक आधे मसखरै सै नै तो युद्धवीर का नाम पंचायती बटेऊ काढ़ दिया था। पंचायत आली बात गाम भूल्या नहीं था। सारा गाम आज भी उसकी सयाणपत की गवाही दिया करै। धनकौर जब किते स्वर्णा कै बटेऊ की तारीफ सुणती तो फूली नहीं समाया करती। एक मां खातर इसतै बड़ा भाग ओर के हो सकै सै कै उसकी बेटी सुथरै घर म्हं जाण लागरी थी। जनेत की खूब सेवा बणी। जिसकी डयूटी थी, उसनै भी अर जिसका सीधा मतलब नहीं था उसनै भी, खूब डट कै खातरदारी करी जनेतियां की। एक आधा जनेती दारू पी कै लुढ़क्या तो उसकै खातर ठण्डे पाणी का इन्तजाम था। सुधयां लते नहावै गये शराबी जनेती, पर बात म्हं कोय कड़वापन नहीं आया।

सब काम सुथरै ढ़ाल होगे। जब थापा लागण का टैम आया तो जागे नै दलीपां आगे कर दिया। दलीपा विरोध न कर सक्या। आत्मा निहाल होगी। जागे नै दलीपा इतणी उपर बिठा दिया जित तै सुरेश बहोत छोटा नजर आवै था। विदा होई।

हंस अर हंसिणी का जोड़ा घर आया।
गाम की रौनक म्हं चार चांद लागगे।

सुजानी बहु का रूप देख कै गदगद होगी। जिसी अक मन म्हं थी, वै पूरी होगी।

अगला सारा दिन धौका पूजी म्हं बीता। गाम म्हं स्वर्णा की खूब चर्चा रही, पर साथ म्हं युद्धवीर की प्रशंसा करकै गाम की लुगाइयाँ नै आपणी परम्परागत डाह जलन शान्त करी।

युद्धवीर अर स्वर्णा दोनुआं का ध्यान सारी रौनक कै गेल गेल एक दूसरे पर था।

भगवान की सबतै बढ़िया रचना शायद औरत सै। उसकी सरचंना म्हं जितने गुण भगवान नै इस्तेमाल करे, शायद और किते भी नहीं करे। औरत बणाई भगवान नै श्रेष्ठ काम करया, पर उसतै भी श्रेष्ठ काम यू करया के पुरूष कै मन म्हं नारी के प्रति अथाह आकर्षण भर दिया। सष्टि के विस्तार का मूल भी यो ए सै।

गहस्थी की परम्परा, अर मिलन की चाहत - आखिरकार युद्धवीर अर स्वर्णा दोनूं अकेले थे।

ट्रेनिंग के दौरान कितणे बड़े-बड़े पुल लांघग्या था फौजी, पर आज इस मोर्चे पै घबराहट थी। स्वर्णा म्हं गजब का आत्म विश्वास रहया करता, पर आज उसकी भी स्थिति ठीक नहीं थी।

युद्धवीर नै हिम्मत सी करकै स्वर्णा का हाथ पकड़या।

एक साथ जाणो हजार तार बिजली के छू लिये हो।

स्वर्णा पसीने तैं तर बतर होगी।

हिम्मत सी कर कै हाथ छुड़ा लिया तो युद्धवीर नै एक वार ओर कर

दिया -

''कै बात मैं पसन्द कोन तन्नै''

स्वर्णा झट तै मुड़ी अर युद्धवीर का हाथ कसकै पकड़ लिया।

धीमे से स्वर लड़खड़ाया - ''या के बात कहीं आपनै''

युद्धवीर अर स्वर्णा की चाहत की बर्फ जम जम कै बहोत बड़ी शिला बणगी थी। भले ही इसतै पहल्यां कदे आपस म्हं बात ना करी हो फेर भी हर रोज एक दूसरे का ख्याल मन म्हं ले कै सोया करते। सगाई होय पाछै तो हाल ओर भी बुरा था। स्पर्श की गरमाहट तै हिमशिला खिसकी। फिर शिला के छोटे-छोटे खण्ड बणे। जब बर्फ पिघली तो प्रेम का शुद्ध जल बह निकला अलग-अलग दिशाओं से और अन्तत नदी बण कै बह निकला - शुद्ध निर्मल जल। काजल डली होई चार आंख सवेरा होते-होते लाल होगी थी। युद्धवीर की झपकी टूटी तो स्वर्णा वहां नहीं थी। झटकै तै उठया तो देख्या स्वर्णा नीचै घर का काम करणे की कोशिश म्हं थी। सुजानी उसकी मदद कर रही थी, बाकी सारे सौवें थे। युद्धवीर उल्टा ए सोग्या।

15

मैं इस उत्सव कै हर मौके का गवाह था। इसतै जागे कै घर नै खुशी तो आई थी पर दलीपै अर किताबो खातर एक तरह का दवाई का कोर्स सा होगा। आपणै बेटे की जिस हरकत तै जीवन अन्धेरै म्हं चला गया, युद्धवीर के ब्याह के सूरज नै उनकी आख्यां म्हं नई रोशनी भर दी। जागे अर सुजानी नै उनके वै सारे रंग चाव करे जो सुरेश

क ब्याह कै टाईम उनकै मन म्हं थे। इब किताबो खुश तो रहती पर सेहत इब साथ ना देवै थी। शहर म्हं रह कै उसके मन अर तन दोनू बीमार होगे थे। इब हाल मन तो ठीक था पर तन दिन ब दिन साथ छोड़ता जावै था। कई बै रात आख्यां म्हं कटती। दलीपा उसकी सेवा करण म्हं कोय कसर नहीं छोड़ता। इब हाल तो उनकी दुनियां एक दुसरै म्हं समाई थी।

"दिखे तू ठीक होज्या, जै तेरे कुछ होग्या तो मैं भी जी नहीं पाऊंगा" - दलीपा कहता तो किताबो सलाह देती

"मेरे कुछ होज्या तो तू सुरेश धौरै चला जाईये"

"बकवास बन्द कर - मैं मरज्यांगा पर उसकै घर का पाणी भी नही पीऊंगा"

बस फेर किस टैम नींद आती कुछ पता नहीं चलता।

बात दोनूआं नै दिल के लगा ली थी। इलाज सिर्फ और सिर्फ सुरेश था - शायद इस बात तै बेखबर। म्हं बीच कै कोय शहर गया होया सुरेश कै बारै म्हं बताणा शुरू भी करता तो दलीपा या तो बात बदल देता या फिर उठ कै चला जाता। वैसे तो गाम राम म्हं सारै ढ़ाल के माणस हो सै, आच्छी कहणिये भी अर बुराई करणिये भी, पर दलीपै कै मामलै म्हं दुष्ट तै दुष्ट आदमी की भी या हे राय थी अक सुरेश नै बहोत गल्त काम कर्‌या।

समय का कोल्हू चलता रह्‌या।

पीराई म्हं रस तो निकलै सै - बचै सै खोहई शायद यादां की अर अनुभवां की - रस किसका कितणा निकलै या सारी करमां की बात हो सै।

युद्धवीर की छुट्‌टी पूरी होती रही - ड्यूटी करकै और

छुट्‌टी मिलती रहीं। गुरूप्रीत का भी ब्याह जब तय होया तो जागे नै छोड़ सारा कुणबा पंजाब गया। सुजानी की जिद्द थी तो किताबो नै भी गेल लेगी। इब तो सुजानकौर तै भी आच्छा मेलजोल होग्या था किताबो का। स्वर्णा नै भी सुजानकौर कै घर म्हं वे सारे नेग जोग मिले जो भाभी के हो सैं। वैसे भी हरियाणा अर पंजाब के रीति रिवाजां म्हं घणा सा फरक भी नहीं, बात सिर्फ बोली की थी। जब सुजानी किताबो आपणी देसी बात बोलती तो पंजाब की सरदारणी हांस पड़ती, अर जब सरदारणी पंजाबी म्हं चबर-चबर करती तो वैं भी हांस कै बदला तार लेती, पर किताबो की सेहत कदे कदे घणी बिगड़ जाती थी।

उल्टे गाम म्हं आये तो कई दिन तक पंजाब की चर्चा चरखे सुणते रहे। एक दिन चरखाँ की घूं घू खुशी कै बाजै मैं बदलगी, जब सुजानी नै बताया के स्वर्णा दिनां त सै। घर म्हं एक नया मेहमान आण आला सै।

एक कहावत सै - कार पुरूष अर चालणा बलध कदे मोटा न रहणे का, जिस घर म्हं हो बीर सुपातर औड़े टोटा ना रहणे का। ये सारी बात जागे कै घर पै लागू हौवे थी। सुजानी कै व्यवहार की परम्परा स्वर्णा नै आगै बढ़ाई। सबनै इज्जत तै पेश आती, सबका आदर मान करती, सबका कहया करती। सारै गाम म्हं इज्जत जो जागे ने कमाई उसपै आंच ना आण दी, ना कदे सुजानी नै अर इब स्वर्णा नै।

1995 की जनवरी का महीना -

जागे कै पोता होया - नाम धर्‌या सुयोग।

सुजानी दादी बणगी

युद्धवीर अर स्वर्णा एक सुथरै से बालक के मां-बाप बणे। उन दोनुआं कै ब्याह का उत्सव जिसनै इब तक विराम ले राख्या था, बेटे कै जन्म गेल फेर शुरू होग्या।

"ले आपणै पोतै नै खिला ले" सुजानी नै जब किताबो के गोड्या म्हं नवजात शिशु दिया तो किताबो गदगद होगी।

"ए मेरा पोता! बस न्यू सोच ले तेरे खातर सांसा नै पकड़े बैठी थी। इब बेशक मरज्याऊं।" किताबो बहोत घणी खुश थी। इतणी के उसकी आख्या तै टपर-टपर आंसू पड़े। बालक के चेहरै पै। बालक शुद्ध होग्या, यो जल तो गंगा जल तै भी पवित्तर था।

जब सारे चले गये तो किताबो एकली रहगी

दीवारां पै कुछ परछाई हलचल करण लागगी।

"ले मेरा प्यारा पोता! दिखेल्या तेरी नाक खीच द्यूं कदे मिड्डा ना रहज्या"।

किताबो नै जब सुरेश कै बेटे की नाक खींची तो वो बिलबिलाया। सुमन पास आले कमरे तै भाजी आई -

"ओ वट आर यू डूइंग मम्मी आप अनपढ़ बातें क्यूँ करती हैं। आप इसे मत लिया करे प्लीज।" सुमन की बात आधी परधी पल्लै पड़ी, पर उनमै छुपी हुई तानाशाही ना छुप सकी। सुरेश भी धोरे ए तो खड़या था। उसनै भी कुछ ना कह्या सुमन ताँय। उल्टा आपणी मां नै ए कठोर बोल्या।

"मां जुणसा काम सै तेरा ओए कर ले न' क्यूँ बेकार म्हं?"

दीवार पै परछाईयाँ की हलचल तेज होगी।

"सुरेश जस्ट टैल यूर मम्मी पापा - मेरे घर को गांव ना बनायें।

उन्हें बोलो वापस चले जाये" सुमन जोर-जोर तै कह रही थी।

"डोन्ट बी स्टूपिड - उनको सुन जायेगा" सुरेश डर्या।

"यस मैं भी चाहती हूँ वो सुन लें। उनसे मेरे बच्चे का इन्फैक्शन हो जायेगा। वो चले जाये तो बेहतर है" सुमन जानबूझ कै ऊँचा बोल रही थी।

"अरे मेरी बात तो सुनो....." सुरेश असहाय था।

वो जानता था कि गांव की सारी जायदाद वो बेच चुका है, अब मां बाप को भेजे तो भेजे कहां।

"ओ - के, ठीक है, मैं उन्हें सर्वेन्ट क्वाटर में शिफ्ट कर देता हूँ"

किताबो कै दिमाग म्हं कड़वी यादाँ का ऐसा बंवडर उठ्या जिसनै सांसो का पंछी कैद कर लिया आपणे खून की बेवफाई की यादाँ भी बहोत घणी कष्टदायी थी। किताबो के मन म्हं उठ्या यू ज्वार निर्णायक साबित होया। पंछी पिंजरा तोड़ग्या। दीवार की परछाईयाँ की हलचल बेहोशी म्हं बदलगी।

दलीपा जब घरां आया तो उसनै देख्या किताबो पीढ़ै प बैठी-बैठी थाम्ब कै सहारै लागी बैठी थी।

"किताबो-किताबो......" दलीपै नै आवाज लगाई, कोय आवाज ना आई।

"किताबो-किताबो...." किताबो एक ओर लुढ़क गई।

जीत गई मौत! विचाराँ के द्वन्द्व को एक झटकै तै तोड़ दिया, अर किताबो बिल्कुल शान्त हो गई। दलीपा सन्न रहग्या।

"न्यू तो ना करै किताबो! दिखे तेरा बेटा मन्नै छोड़ग्या, मन्नै कती दु:ख ना आया। पर इब तू भी जावैगी, तो क्यूँकर पार पड़ैगी। बोल

तो एक बै किताबो....“

इब की बार किताबो ना बोली।

दलीपै की सिसकी शुरू होई

विलाप म्हं बदलगी

विलाप जब दहाड़ म्हं बदल्या तो गाम राम पहोंचग्या। लाकड़ी, गोसे, फूस पराली....... सारै गाम नै दु:ख था किताबो कै जाण का। म्हं बीच कै दलीपै धोरै बात पहुंची के सुरेश नै बेरा कर द्यां तो उसनै मना कर दिया। इस दर्द नै शायद वो बांटणा नहीं चाहवै था। खास कर कै सुरेश तै तो बिल्कुल नहीं। पर जागे नै एक आदमी शहर की तरफ रवाना कर दिया। सूरज ढ़लण की तैयारी म्हं था। सुरेश नहीं आया।

आग की लपट उठी। किताबो की काया के तत्व बिखरगे। दलीपा एक टक उठती होई लपटां नै देखण लाग रह्या था।

किताबो के जाणे कै बाद दलीपै कै जीवन का रथ डगमग होग्या। जागे अर सुजानी उसका हरदम ख्याल राखते। इब तो उसनै दाड़ी भी बढ़ाली थी। एकाधी बर उसका गाम तै जी उठता तो जागे उसनै इजाजत दे देता के किते घूम फिर आवै। एकाधी बार शहर म्हं भी गया। पर सैक्टर म्हं नहीं। मण्डी म्हं घूम आता। गाम का कोय गेल होता तो उसे गेल वापस आ जाता। आच्छी बात या थी के इतणी परेशानियां कै बाद भी कोय एब ना पकड़या, शायद जागे जिसे सज्जन की संगत का असर था।

सुरेश जिस विभाग म्हं अधिकारी था, इस सप्ताह उनके कुछ प्रोग्राम चाल रहे थे। सुरेश की जिम्मेवारी थी के सामाजिक न्याय की

कुछ योजना आम लोगां नै बताता, अर कोय बात समझ नहीं आती तो जणे-जणे नै भी समझाता।

“हमारी कोशिश है कि हर किसी को न्याय मिले - सबको उनके अधिकार मिले...“ सुरेश धारा प्रवाह बोलण लाग रह्या था।

“रै ओ छोरे रूक.....“ पाछै तै एक आवाज आई।

बोल जाणा पिछाणा सा लागग्या सुरेश नै।

“तू के न्याय की बात करै सै - जो आदमी आपणे जामणिये मां बाप नै न्याय नहीं दे सका, वो ओर किस गेल्याँ न्याय करेगा“ - एक दाड़ी आला बूढ़ा पूरे जोर तै चीख्या - यू दलीपा था।

सुरेश आपणी बात छोड़ के मंच तै नीचै आग्या।

आपणै आफिस के चपड़ासी कै हाथ दलीपा बुला लिया - आंख्या का धुधंलापण हटया -

“बाबू! तू! यू कै भेष बणा राख्या सै?“

दलीपा मुट्ठी भीचे खड़ा रह्या।

“बाबू! बोल तो“.... सुरेश कै भीतर बैठा बेटा बाहर आया तो अफसर धूम्मै की ढाल उड़ग्या।

“मां किसी सै बाबू! कितणे दिन होगे कोय खैर-खबर नहीं“।

दलीपा इब चौंक्या - “तन्नै बेरा नहीं के सुरेश? तेरी मां तो....

सुरेश डरग्या - “ ना बाबू.....“

“हां सुरेश चार महीना पहल्यां....“ दलीपा कह नहीं पाया

सुरेश आपणे आप पै काबू नहीं रख पाया।

“मैं फुटभागा बाबु! मेरे खातर हर सजा छोटी सै“। कह कै दलीपै

कै लिपटग्या

"मां - मेरी मां" सुरेश छोटे याणे बालक ढ़ाल फूट पडया।

"इब के रौवै सै तू तो दाग पै भी नहीं आया"

माणस गया था, घरां बता कै भी आया था, तेरी बहोत बाट देखी.."

सभा समाप्त होई तो सब चले गये।

दलीपै के गेल सुरेश भी गाम म्हं आग्या। सीधा चहाणिया म्हं पहुंचा। जित दाह संस्कार होया था किताबो का, उस जगहां जा कै बैठग्या। कुछ नहीं बोल्या। दिन छिपग्या तो दलीपै नै आकै कान्धै पै हाथ धर्‌या -

"चाल खडया हो! इब राख म्हं तै के काढ़ैगा"?

"जा घराँ चलाज्या, उड़ै बालक परेशान होरे होंगे।"

"इब नहीं बाबू। एक गल्ती करली, दूसरी नहीं"

सुरेश नै दलीपै की बांह पकड़ी, अर गाम की तरफ हो लिया।

घरां गये तो सुजानी घर के आगै खड़ी बाट देखै थी।

"रे सुरेश एक बै घरां चालो - औड़े सुमन अर बालक आ रहे सै"

दलीपा सुरेश की तरफ लखाया - "मन्नै कही थी ना पहल्या ए"

सुरेश करड़ा सा होकै बोल्या" चाल बाबू यू फैसला भी आज ए होज्या तो ठीक"

घरा पहुंचते ही सुमन चिल्लाई" वट इज दीस नान-सैन्स सुरेश! तुम बिना बताये ही...."

सुरेश लपकया.. "इनफ। इटस नाट नानसैन्स, नाऊ आई एम इन सैन्सिज। मन्नै होश इब आया सै, मैं किते नहीं जांगा। मैं अपने बाप

के साथ रहूंगा। सुमन चिल्लाई, रोई छिछर करे, पर सुरेश कै मन की आवाज आगै सब बेसुरा था।

"ठीक है मैं पापा से बात करूँगी" आपणे बालकां नै लेकै चालण लागगी तो छोरा अड़ के खडया होग्या।

"अब तुम्हारी क्या प्रोब्लम है?" सुमन बोली

छोरा बड़ी मासूमियत तै बोल्या " ममा जब पापा अपने डैडी के साथ रहेंगे, तो मुझे भी डैडी के साथ रहना चाहिये ना?" सब के मुंह तै मासूम जवाब पै जोर की हंसी छुट्टी। दलीपै नै भाज कै बालक गोद मैं उठा लिया -

"ग्रांडपा - पापा आपको बहोत मिस करते हैं।

"मैने कई बार उन्हें देखा है - वो आपको बहुत लव करते है"।

दलीपै की आंख्याँ तै फेर छलके दर्द के व्यापारी -

"बहोत वार कर दी बेटा - तू एक बै कह तो देता, हामनै रोक लेता तो हम कदे भी ना आते..."।

ये ना होता तो वो ना होता - शिकवे, शिकायत। सुमन चली गई। सुरेश नै आपणा कार्यक्रम उस तायं समझा दिया। वा समझ भी गई। आखिर मां बाप तो सबके हो सैं।

दलीपै नै दाड़ी कटवाई तो सुजानी नै चुटकी कसी -

"हो देवर बता कै तो कटवाता। घर म्हं कितणे जाले लाग रहे सै - तेरी दाड़ी तै वै ए साफ कर लेते"

जीवन का घोड़ा अहिस्ता आहिस्ता रफ्तार पकड़न लागग्या।

16

ताऊ जागे की कहाणी कै हर पहलू तै मैं वाफिक था। कोय इसा काम, इसी बात ना थी जुणसी नै मैं ना जाणूँ था। आधै तै घणियां म्हं गेल था - जित मैं नहीं था वै बात किसे न किसे जरिये मेरे तक पहुंचै थीं। मन्नै रामायण पढ़ी, महाभारत पढ़ी और भी जितणी कहाणी भी उनमैं कोय ना कोय पात्र खलनायक था, पर मैं जब भी ताऊ कै कुणबै पर नजर डालता, मन्नै हर तरफ अच्छाई नजर आती। पर जित माणस खलनायक ना हो उन कहाणियाँ का के राह हो सै - सोच विचार कई बै कर लिया करता। मन म्हं भगवान तै या ए प्रार्थना करता के जिस ढ़ाल ताऊ जागे कै घर मैं खुशियां का पहरा रहै सै, सारै गाम म्हं रहवै तो जी सा आज्या। दलीपै का घर भी उजड़ कै फेर बसण की राही पै आ लिया था।

युद्धवीर नै छुट्टी की अर्जी दी। सुर्रो अर काबर के देवर का ब्याह था। बटेऊआं नै युद्धवीर धोरै खास चिट्टी भेजी। कई बै फोन करे के रिश्तेदार जै तू ब्याह म्हं नहीं अया तो हाम बुरा मान जावांगे। दोनूं बटेऊआं का लाडला था युद्धवीर, एक कहावत भी तो सै

''गन्नै तै गण्डीरी मीठी, गुड़ तै मीठा लाला

भाई तै भतीजा प्यारा सबतै प्यारा साला''

युद्धवीर नै भी छुट्टी खातर अर्जी लगा दी। छुट्टी मंजूर भी होगी पर अचानक सब फौजियां की छुट्टी रद्द होगी।

कारगिल **1999**

घुसपैठियां की शक्ल म्हं दुश्मन नै आपणे फौजी भेजे। जब घणे जाड़े पड़ते तो आपणे फौजी चौकी छोड़ कै नीचै आ जाया करदे। जब बरफ पिघलती तो फेर जाकै आपणे ठिकाणे संभाल लेते। पर अब की बार दुश्मन नै गजब की चाल चली। मौका सा ताड़ कै जब चौकी खाली पाई, उनमैं जा कै जमगे। बहोत भारी गोला बारूद के साथ। शुरू शुरू म्हं आपणी फौज नै मामला छोटा ए समझया पर कैप्टन कालिया अर उनके साथियां के शव अंग-भंग करकै भेजे पायलट आहुजा की शहादत होई तो आंख खुली। रणबाकुराँ ने दुश्मन का नाश करण की हुंकार भरी। युद्धवीर की कम्पनी को हुक्म हुआ मोर्चे पै जाण का। युद्धवीर की पूरी कम्पनी म्हं एक तै एक शेर दिल जवान थे। गुरूप्रीत अर युद्धवीर जैसे क्षत्रिय जिनकै खून का एक-एक कतरा अजय था।

''वीरे आज फिर दोनूं यारा नू मौका मिल्या ए - साले दुश्मनां नू चुण चुण के मारांगे''- गुरूप्रीत नै ललकार भरी तो युद्धवीर नै भी दहाड मारी -

''हामनै आपणै गाम की पवित्तर माटी की कसम सै - अपणे फौजियां की मौत का बदला लेकए सीला पाणी पीवांगे''

हथियारां तै लैस होगे फौजी।

युद्धवीर जंग की वर्दी म्ह भी गजब सुथरा लागै था।

''ओय तू तो हुण भी सोणा दिख रह्या है वीरे। ला एक टीका लगा देवाँ तैन्नू''- गुरूप्रीत वाकई जिन्दा दिल छोरा था।

'इब तो दुश्मन कै खून तै तिलक कंरागे भाई'' युद्वीर आपणै क्रोध नै संजोण लाग रह्या था।

कम्पनी बेस पै पहुंचगी थी।

उपर पहाड़ाँ पर तै शहीदाँ के ताबूत आण का सिलसिला जारी था। आज तक की लड़ाईयाँ मैं सबतै भयानक लड़ाई थी कारगिल की। दुश्मन आपनै साफ देख सकै था, पर नीचै तै कुछ दिखाई ना दे था। पर रेजिमैन्ट का इतिहास, अर कम्पनी की बहादुरी का विश्वास, दुश्मन के मनसूबे कित कामयाब हो सकै थे।

कम्पनी नै आज रात हुक्म हुआ एक मोर्चा फतह करण का। लैफ्टिनैन्ट, सूबेदार, अर बाकी सारे रैंक, सब के सब नये जोशीले जवान।

पास म्हं फोन की सुविधा थी। युद्धवीर अर गुरूप्रीत दोनू फोन करणे चले गये।

दूर तै इब भी गोले पाटण के धमाके साफ सुणाई दे रहे थे। कुछ आपणे, कुछ दुश्मन के। लड़ाई के स्वभाव नै कोय नहीं जाण पाया। हर गोला कितणा नुक्सान करैगा कोय अन्दाजा नहीं था। एक बात जरूर थी - गोला आपणा हो या दुश्मन का - आवाज दोनुंआ की एक जैसी थी।

गाम म्हं युद्धवीर की बाट थी। जब कोय सन्देशा नहीं आया तो सुजानी नै सहज चिन्ता दरसाई -

"आज तक तो इसा होया नहीं - जुणसा टाइम दे दिया उसपै जरूर पहुंचा सै छोरा"

"कदे सीधा छोरियाँ धोरे चला गया हो" दलीपा भी इस चिन्ता सभा म्हं मौजूद था।

"ना आवैगा तो घरां ए पहल्या - न्यूं तो असूल पक्का सै छौरे का" युद्धवीर पै गजब का विश्वास था जागे नै।

इतणी बार म्हं अड्डै पर तै दुकान आला नाई पहोच्ंया।

"ताऊ युद्धवीर का फोन आ रहया सै - तू तावला चाल, न्यू कहै था घणा टैम मत लाईये"

एक दम घर म्हं खामोशी छागी।

दलीपा अर जागे लगभग भाजते-भाजते अड्डै पै पंहोचे।

जागे नै कांपते हाथां तै फोन ठाया।

"बाबू...." युद्धवीर का स्वर उभर्‌या।

"बेटा तू आया नहीं... आड़ै तेरी मां चिन्ता कर रही सै, के बात सै?'

"हाँ बाबू आणा कोन बणै - छुट्‌टी कैन्सल होगी - ड्यूटी लागगी कश्मीर म्हं, पर चिन्ता की बात नहीं, मां का ख्याल राखिये - हफ्तै दस दिन म्हं ठीक ठाक हो ज्यागा - हां गुरूप्रीत भी गेल सै, थाम चिन्ता मत करियो।"

संवाद तो दोनू तरफ तै जारी थे। चिन्ता एक तरफ तै जावै थी तो दूसरी तरफ तै आश्वासन जवाब देवै था। दलीपा अर जागे भारी कदमां तै घर की तरफ चाल पड़े। राह म्हं एक बैठक कै बाहर गाम के कुछ बूढ़े कुछ जवान कट्‌ठे बैठ कै चर्चा कर रहे थे। बैठक में एक पुराणै सै टीवी पै खबर चाल री थी।

जागे अर दलीपा औड़े थोड़ी सी बार रुके। लोगां की बातचीत नै मन के डर का पोषण करया। घर तक पहुंचते - पहुंचते जागे नै पता चल गया था के उनका बेटा मोर्चे पै सै लड़ाई के बीच।

घरां पहुंचे तो सुजानी अर स्वर्णा दोनूं आपणी-आपणी चिन्ता ओढ़े खड़ी थी।

"के होया - होगी बात? रेल लेट होगी अक छुट्‌टी देर तै मिली"।

सुजानी नै वै बात पूछी जिनकै कारण पहल्यां एक आधी बार युद्धवीर घर आण म्हं देर कर देवै था।

जागे असमंजस म्हं था, पर बताणा भी तो जरूरी था।

“उसकी छुट्टी कैन्सिल होगी - पर युद्धवीर न्यू कहवै था - चिन्ता की कोये बात नहीं“

“चिन्ता? के बात सै? साची - साची बतावै न।“ सुजानी अधीर हो उठी। दलीपै के मुंह की तरफ देख्या तो उसका चेहरा भी पीला सा दिख्या।

“जरूर कोय बात सै, बतावो तो?“

“कुछ ना कश्मीर म्हं डयूटी लागंगी सै कोया रोला हो रहया स। पूरी कम्पनी गई सै उनकी - जागे नै बड़ी हिम्मत कर कै बताया।

“हायमां! वो रोला कोन्या, वा तो पूरी लड़ाई सै - मन्नै रेडियो पर सुणया था“ - स्वर्णा एक दम चीख सी पड़ी। सुजानी धम्म तै खाट पै बैठगी। स्वर्णा भी डरी-डरी उसकै पास आ बैठी।

स्वर्णा के मुंह तै उसके बाद बोल ना निकल्या। न्यू लाग्या जाणो कोये दोनू हाथां तै गला दबाण लाग रह्या सै। हर बार जब छुट्टी खत्म कर कै युद्धवीर उल्टा डयूटी पै चालै था तो स्वर्णा आपणै विरह पै काबू पा लिया करती, पर अबकी बार बिरह अर भय दोनूआं नै मिलकै हौसला तोड़ दिया।

सुजानी कै चेहरै पर चिन्ता तो दौड़ रही थी, पर बड़ी होण के नातै स्वर्णा का हौसंला बढ़ाणा उसका फर्ज था, सो थोड़ी सी संभलगी।

“राम जी खैर करैगे, बेटी तू जी ना छोड़डै“

जागे भी अब तक आपणी हलचल पै काबू पा चुक्या था। इन सब बातां

तै अनजान हाथ मैं प्लास्टिक की बन्दूक लिये चार साल का सुयोग लड़ाई-लड़ाई खेल रह्या था, अर दूसरी तरफ उसका जाबांज बाप असली की लड़ाई लड़ रह्या था।

फौजियां के ट्रक रणभूमि की ओर बढ़ते जा रहे थे। गुरूप्रीत अर युद्धवीर ट्रक म्हं कठठे बैठे थे। कश्मीर की घाटी की सुन्दरता का वैसे तो इन योद्धाओं के लिए कोय घणा सा मतलब ना था, पर जब कोय ठण्डी हवा का झोंका गुजरै था तो एकाधा मनमौजी कह उठै था-

“ओय शुक्र है लड़ाई यहां पहाड़ पर है - राजस्थान में होती तो गर्मी म्हं ए परेशान हो जाते“

फिर एक ठहाका गूँजता। ट्रक म्हं आगे बैठ्या अफसर गंभीर मुद्रा म्हं मुड़ के पीछै की आवाज सुणता तो मन ए मन खुश भी होता अपणे साथियों की जिन्दादिली पर।

मिश्रा जी नै भी मौका मिल्या -

“रै हरियाणा के जाट। पानी की बोतल अच्छी तरह भर लीजियेगा वरना वहां जाते ही फिर गायेगा

“पानी आली पानी पिला दे।“ अबकी बार का ठहाका तोप के गोले जैसा था।

एक और पंजाबी फौजी गा उठा

“जदो तारे चमकदे राता नूं
किवै सहवां मैं बरसाता नू
मैनू तेरी याद आंदी ए.....।“

एक जोरदार धमाका हुआ। उनके ट्रक से थोड़ी ही दूरी पर

शेलिंग हुई। संगीत क्रोध म्हं बदलग्या।

"साले गादड। छुप कै वार करै सै" - युद्धवीर बड़बड़ाया।

गुरूप्रीत भी भन्नाया - "एक वारी आमना सामना हो जाये तो दस देवाँ, बहन दे .....

ट्रक एक जगहां जा कै रुक गे। आज का मिशन था दो किलोमीटर पीछे पहाड़ी की चोटी पर तिरंगा फहराना। अंधेरा होते ही मार्च करना था।

जब निशाना थोड़ी दूर रहग्या तो फौजी दो टुकड़ियाँ म्हं बंटगे। एक टुकड़ी का काम था दाये जाकै दुश्मन को बहकाना, अर दूसरी टुकड़ी का बांये से जाकै हमला कर चोटी पै कब्जा करणा। गुरूप्रीत अर युद्धवीर बांयी टुकड़ी म्हं थे।

फांयरिग शुरू होगी। दांयी टुकड़ी नै ग्रेनेड बगाये। गोली चलाईं। दुश्मन नै भी फांयरिंग शुरू करी। रात कै अंधेरे म्हं गोली इसी ढ़ाल लागै थी जाणा ब्याह म्हं आतिशबाजी चालती हो। पर या आतिशबाजी खतरनाक भयानक थी। जित भी लागती - घर उजाड़ सकै थी।

बांयी टुकड़ी लगभग करीब थी। एक संदेश भेजया गया दांयी टुकड़ी को के बांयी टुकडी पहुंचगी सै, फांयरिग की दिशा बदल दे। दांयी टुकड़ी नै दिखावै खातर फायंरिग की दिशा बदली पर उस दिशा तै भी फायर आया। दुश्मन चप्पै-चप्पै पै मौजूद था।

चोटी के बंकर म्हं बैठे शैतान इस परिवर्तन का समझ पाते, उससे पहले ही युद्धवीर अर गुरूप्रीत बंकर म्हं कूदगे। जोरदार विजयी नारा लगाया, अर सारी मैग्जीन खाली कर दी मशीनगन पै बैठे दो

दुश्मनां पै। मुड़े तो पांच और थे सबका निशाना दोनू जाबाजां पै। इससे पहले के दुश्मन फायर करता। पीछै से मिश्रा जी की रायफल नै श्लोकोच्चारण करया। सबके सब गिर पड़े। इधर से युद्धवीर नै अध याय समाप्त किया। चोटी पर कब्जा होगा। दांयी टुकड़ी नीचे ठिकाणै के दुश्मनां तै लड़ण लाग रही थी। हिन्दुस्तान के जुझारू जज्बै नै थोड़ी सी देर मैं इलाकै पै कब्जा कर लिया। टुकड़ी को सतर्क रहणे का हुक्म दिया गया। रात के ढ़ाई बजे तै सुबह पांच बजे तक कोय गोली नहीं चली। पीली पाटी तो दुश्मनां की लाशां की गिनती होई। कुल मिला कै इक्कीस निपटा दिये थे। जब गोला बारूद देख्या, उनका खाण-पीण का सामान देख्या तो सब हैरत में पड़ग्ये - दुश्मन लम्बी लड़ाई की सोच कै आया था। पर तावला ए निपटग्या।

थोड़ी देर म्हं खबर मिली के भारत सेना का एक हेलिकाप्टर दुश्मनां नै गेर दिया। आपणे कई आदमी मारे गये। फौजियां की मुट्ठी भिंच गई मामला उतना छोटा नहीं था, जितणा समझा जा रहया था।

जब मन्नै पता लाग्या के युद्धवीर मोर्चे पै सै तो मैं तुरन्त गाम चला गया। एक हफ्ते की छुटी कर ली। सीधा ताऊ जागे धौरै गया। जागे मन तै कमजोर नहीं था पर या बात भी साची थी के उसके जिगर का टुकड़ा खूनी खेल म्हं शामिल था, सो उसकै चेहरे का लाल रंग भी शायद सन्देशा लै कै कश्मीर चला गया था। मन्नै पहली बार ताऊ के चेहरै का रंग पीला सा देख्या। मन्नै जाकै कुछ हौंसलें की बात करी, तो ताऊ जागे बोल पडया

"देख भाई मन्नै इस बात का कोय भय नहीं के युद्धवीर लड़ाई म्हं सै। किसे नै किसे नै तो देश खातर लड़ना ए सै ना।

पाच्छै हटे काम तो ना चालै। कुछ भी हो सकै सै। यू मेरा हौंसला नहीं बल्कि फर्ज सै, हां मन्नै बेरा सै के मेरा रंग फक हो रहया सै – मै बाप भी तो सूं। घरां जाऊं सूं तो उसकी मां अर बहू मेरे चेहरै तै अन्दाजा लगावै सै के सब राजी खुशी सै के नहीं। मैं लाख छुपाऊ पर चेहरे पै किते न किते चिन्ता साफ झलक जा सै। युद्धवीर की मां नै बुरे सपने आवैं सै तो वा मन्नै बतावै सै, पर मैं किसने बताऊँ बेटा''

मन्नै ताऊ जागे के कान्धे पर हाथ धरया, पर दिलासा भी जागे खातर बहोत छोटी चीज थी। वो मजबूत माणस था। पर भावनायें तो उसमैं भी थी। दर्द बहोत घणा था, पर हिम्मत का बांध ा बहोत मजबूत था। दो दिन बाद भगता भी आग्या था। तनाव अर दर्द अगर बंटज्या तो हिम्मत नै रास्ता मिलज्या सै। स्वर्णा नै बड़ा सहारा मिल्या भगतै के आण का। म्हं बीच कै जब सुयोग आपणे पिता के आणे कै बारै मैं पूछता तो सबकै कांपणी चढ़ ज्याती। बालक नै बहका तो देते पर खुद न कँयूकंर समझाते। सबका डर साच्चा था। रेडियों, टी वी पर खबर आई, लड़ाई तेज होगी थी। मोर्च पै भी, अर सबके मन मै भी।

लड़ाई तेज भी होगी थी। हर जीत कै बाद न्यू लागै था के काम हो लिया, पर दुश्मन बड़े मजबूत इरादां तै आया था। संघर्ष बढ़ग्या। बोफोर्स तोपां नै काम आसान तो कर्‌या परं कब्जा तो उपर जा कै फौजियां ए नै करणा था। वायु सेना की भी मदद ली गई। छोटी मोटी कई चौंकी दुबारा हासिल करी गई। युद्धवीर की टुकड़ी का विजयी अभियान जारी था। दिन म्हं माहौल शान्त रहता पर अन्धेरा होते-होते तोपां की भयानक गर्जना के साथ-साथ फायरिंग तै पूरी घाटी कांप जाती। चार दिन तै फौजी लगातार लड़ाई म्हं थे।

नींद का नाम नहीं था पर आंख सबकी मोटी मोटी होगी थी। फौजियां कै हौसलें आगे मौत अर ठण्ड का गठबंधन कमजोर था। थोड़ा बहोत कदे टाईम मिलता तो हल्की फुल्की गपशप भी हो जाती।

''रै भाई आपके बेटे का क्या नाम है'' एक फौजी नै युद्धवीर तै सवाल करया

''सुयोग'' – युद्धवीर नै बड़ै प्यार तै नाम बुदबुदाया।

''बड़ा पढ़ा लिखा नाम है भाई'' – मिश्रा नै हांक लगाई ''इसका क्या अर्थ है?''

''मिश्रा जी मतलब का तो बेरा नहीं, पर म्हारै घरक्याँ के जितणे नाम सै उनका एक-एक अक्षर जोड़ कै बणाया सै नाम

''आये तू ठीक कहदां ए यार'' – गुरूप्रीत नै गणित खोल्या

''सु से सुजानी और स्वर्णा, य से युद्धवीर, ग भी अंकल के नाम में आता है''

अचानक बगल में गोला फटा – एक जवान बहोत बुरी तरह घायल हुआ। युद्धवीर लपकया घायल जवान नै उठा कै बंकर मैं घुस गया। जवान कुछ कहने की कोशिश म्हं था – शरीर नै जवाब दे दिया। शब्द तो समझ म्हं नहीं आये पर हर जवान समझै था के वो के कहणा चाह रहया था। वो चला गया।

दौ फौजियां नै हुक्म मिलया – शव बेस पै भेज कै तुरन्त लौट आयें। टुकड़ी की पहली शहादत नै सबकै दिमाग म्हं गुस्सा भर दिया। कमान का हुक्म था, अभी मार्च ना करे। युद्धवीर अर गुरूप्रीत दोनुआं नै नजर मिलाई। दोनू अपणै कमाण्डिग अफसर धौरै पहुंचगे।

''साहब एक अर्ज करने आये है अगर हुक्म हो तो..

कैप्टन साब एक नक्शा पढ़ण लाग रहे थे -

"हुँ कहो - क्या बात है?"

उसकै बाद जो युद्धवीर अर गुरूप्रीत नै कहया तो कैप्टन चौंक पड़या-

"वहाट? आर यू क्रेजी? तुम दोनों क्या कह रहे हो, जानते हो। तुम दोनों हमारी टीम के दो बड़े पिलर हो - आई कानट वेस्ट यू ब्रेव मैन। आई एपरिशियेट यूअर करेज़"।

"प्लीज सर हमें हुक्म दे दीजिये। हम जानते है, इसमें खतरा जरूर है, पर हम पर विश्वास कीजिये एक मौका हमें दे दे सर"

एक के बाद एक युद्धवीर अर गुरूप्रीत बोले जा रहे थे।

आखिरकार जनून कै आगै समझदारी नरम पड़गी। वो दोनू जो करना चाहते थे - उसकी इजाजत मिल गई।

कैप्टन साब नै उनको वापिस बुलाकर कहा -

"ये फैसला मेरा अपना है। अगर तुम्हें कुछ भी हुआ तो मेरी काबलियत पर कमान शक करेगी। मैं सुबह तुम्हारे साथ चाय-पीना चाहता हूँ"

"ओ के सर" दोनू फौजी राजी राजी बंकर की और दौड़े।

दोनुआं नै बहोत खतरनाक फैसला लिया था। सामनै आली चौकी पै सिर्फ दो रणबांकुरे कब्जा करणा चाहते थे। आपणा गोला बारूद ले कै दोनू निकल लिये। उनके जाते ही कैप्टन साहब नै सबको लाइन हाजिर करके मार्च के लिये तैयार रहने को कहा - हम इनका तीन बजे तक इन्तजार करेगे। मुझे इन पर पूरा भरोसा है। वैसे भी इन दोनों ने जो प्लान किया है - दुश्मन जरूर मात खायेगा।

युद्धवीर अर गुरूप्रीत रेंगते हुये आगे बढ़ रहे थे। रात के दस

बजे थे। दुश्मन का अन्दाजा था के भारतीय फौजी बारह बजे के बाद कार्यवाही करेंगे, इसलिए थोड़े से बेखबर थे। रेंगते रेंगते बिल्कुल चौकी के बंकरा कै नीचै पहुंचेगे। दोनुआं नै एक एक ग्रेनेड बैग म्हं तै निकाला - पिन ढ़ीली करी अर बंकर के अन्दर। कुछ सैकण्डा बाद धमाके होये। युद्धवीर अर गुरूप्रीत तब तक उछल के चौंकी के बांयी साईड पहुंच चुके थे। दो तीन दुश्मन हथगोलां नै गेंद की ढ़ाल उछाल दिये। फिर शुरू होई दोनुआं की फायरिंग। चार पांच शैतान पत्थरां की ओट ले कै भाजगे। गुरूप्रीत अर युद्धवीर नै भाजते होये गादड़ां पै कोहराम बरसाया तो दो और निपटगे। लगभग पांच मिनट बाद दुश्मन के लड़ाके जोरदार फायरिंग करते हुये फिर बंकर म्हं घुसे। उनकी गोली उनके मुर्दा साथियों के शरीर म्हं घुसी। इस हमलै की आशंका युद्धवीर नै पहल्यां ए थी, सो व पत्थरां पै चढ़कै बैठगे थे। अबकी बार वै सारे के सारे दो शेरां के जबड़ां म्हं फस चुके थे । तड़ातड़ - तड़ातड़ - युद्धवीर नै एक भी गोली बेकार नही जाण दी।

"सालो! म्हारै साथी का बदला ले लिया हामनै"

युद्धवीर नै दो चार ठोकर मुर्दा शैतानां के जबड़ा पै मारी।

गुरूप्रीत अर युद्धवीर बंकर की तरफ वापिस हो लिये।

कप्तान साब नै तीन बजे का टैम दिया था वै दोनू एक बजे उल्टे आ लिये।

"हामने बदला ले लिया साब - सारे दुश्मन ठिकाणै लगा दिये"

सब के सब जीत का स्वाद ले रहे थे। कमान नै इस फतह की सूचना मिली तो सारी यूनिट नै शाबासी मिली। कैप्टन की अनुशंसा मिली तो दोनों जवानां के मैडल भी पक्के होगे। सब के सब जोश तै भरे थे।

खतरा इबै कम नहीं होया था। एक बड़ी लड़ाई बाकी थी। एक इसी पहाड़ी पै दुश्मन का कब्जा था, जिसतै उसकी पहुँच म्हं वा मुख्य सड़क थी, जिस पर कै आपणे फौजियां की सारी रसद सप्लाई होवै थी। छोटै मोटे मोर्चा पर तै जितणे दुश्मन बचगे थे, वै सारे भी किसे ने किसे तरहां उड़ै जमा होगे थे। हजारों फुट ऊपर दुश्मन का कब्जा। उनके निशाने पै आपणे फौजी, अर इतणे साफ के वै म्हारे फौजियां कै माथे पै भी गोली मार सकै थे। एक दो बार कोशिश होई पर ज्यों ही आपणे फौजी आगे बढ़ण की कोशिश करते, गोलियां की भंयकर बरसात शुरू हो जाती। सैकड़ाँ वीर शहीद हो चुके थे। युद्धवीर की टुकड़ी जित तैनात थी उस जगहां सन्देशा आया के एक करड़ी कार्यवाही होगी सो उड़ै तै मोर्चा छोड़ सैकेण्ड बेस पै पहुँचो। उनकै अफसर नै अन्दाजां होग्या था के इबकै मुकाबला कांटै का होवैगा। मूवमैन्ट होई अर इस यूनिट के सारे फौजी एक बड़े हमले खातर दूसरे फौजियां तै जा मिले।

आपणी आपणी मैग्जीन भरकै बैग म्हं भर ली। जितणा गोला बारूद लिया जा सकया सब ले लिया। युद्धवीर, गुरूप्रीत, मिश्रा, दो मद्रासी फौजी अर चार जवान ओर ये सब एक अफसर गेल्या पीछे के रास्ते तै हमला करण खातर निकल लिये। रात का अन्धेरा, दुश्मन भी खबरदार पर फौजियां के हौंसले अपार। ये तीन बातें थी जिसकी गवाही उस रात नै देणी थी। लड़ाई किते भी हो, भयानक हो सै पर पहाड़ाँ की लड़ाई फौजियाँ खातर और भी भयानक थी। दुश्मन की गोली त बचो तो यू भी डर था के पांव फिसला तो देही की कोय खोज खबर ना पावै।

रात के २ बजे। टुकड़ी के फौजी बढ़े जा रहे थे। अचानक

फायरिंग शुरू होई। इस बार हमला पांच तरफ तै था, फेर भी दुश्मन मजबूत इसलिये था के वो एक ऐसी ऊँचाई पै बैठ्या था जित तै सबनै वो कीड़े मकौड़ा की ढ़ाल मार सकै था। फौजी आगे बढ़े थे, गोली भड़कै थी। चोट खाये फौजी कुछ गिरते, कुछ पड़ते तो कुछ घायल शेर से आगे लपकते। फौजी बेबस तो थे पर कायर नहीं थे। मौत भी शर्मिन्दा सी रणभूमि म्हं घूमै थी, क्योंकि उसतै कोय नहीं डरै था। भयंकर गोलाबारी जारी थी।

युद्धवीर और उसके सारे साथी पत्थराँ की ओट ले ले कै आगे बढ़ते जा रहे थे। आगे कुछ आहट सी होई तो अफसर नै रूकण का हुक्म दिया। अफसर नै पत्थर की ओट तै सिर उठा कै देखणा चाह्या। अचानक एक जोरदार फायर आया। गोली गाल नै चीरती होई निकलगी। अफसर घायल होग्या। युद्धवीर नै पत्थर का सहारा दे के वो लिटा दिया। अफसर बोल तो नहीं पाया पर उसके इशारां तै यू स्पष्ट होग्या के एक-एक दुश्मन नै छांट-छांट कै मारियो।

एक फौजी नै अफसर धौरे छोड़ कै बांकुरे आगे बढ़गे। फायर बहोत तेज आ रह्या था। दुश्मन का एक मोर्चा ध्वस्त करण का जिम्मा इनका था। रेंगते रेंगते वो बंकर तै बस ३०० मीटर के फासलै पै रहगे। दुश्मन भी पूरा चालाक था। ज्यों ए उन्नै बंकर की तरफ रेंगना शुरू कर्‌या दांयी तरफ तै फायर आया, इसका अन्दाजा नहीं था। खामियाजा भुगतणा पड़या। मिश्रा कै तीन गोली पेट म्हं घुसगी। युद्धवीर नै देंख्या मिश्रा ढह रह्या था। उल्टा आया अर आपणे हाथाँ म्हं मिश्रा की देही संभाल ली।

“मिश्रा जी – मिश्रा जी .....“ युद्धवीर नै वो झंझोडा।

“ले भाई हरियाणा वाले! मेरा अध्याय समाप्त होग्या, पर छोड़ना नहीं

दुष्टों को.....'' मिश्रा अचेत होग्या।

गुरूप्रीत अर उसके साथी इतणै आगे बढ़गे थे। बिल्कुल बंकर कै उपर जा कै गुरूप्रीत नै मशीनगन की नाल पकड़ी। अर जोर का झटका मार कै बाहर खींच ली। अन्दर तै जोरदार फायर आया। दोनों मद्रासी फौजियाँ कै चोट लागी। पत्थरां पै लुढ़कते चले गये।

''वाहे गुरू जी दा खालसा....

वाहे गुरू जी दी फतह....''

शेर की ढ़ाल गरजता होया गुरूप्रीत बंकर के म्हं कुदग्या। शेर की फुर्ती तै गुरूप्रीत की रायफल दहाड़ी। पांच के पांच दुश्मन कुण म्हं लगा दिये..... गुरूप्रीत मुडया पांच यमदूत अपणा निशाना गुरूप्रीत पै लगाये खड़े थे।

इसते पहल्या फायर खुलता - उपर पत्थर पर तै युद्धवीर कुद्या अर गुरूप्रीत की जाफी भर कै एक और नै लुढ़क गया। फायर आया। गुरूप्रीत की जांघ नै गोली चीरगी। दो गोली युद्धवीर कै लागी एक बाजू मै अर दूसरी दायी पसलिया नै तोड़ती होई निकलगी।

पत्थर की ओट म्हं युद्धवीर गुरूप्रीत आपणे हथियार संभाल चुके थे। फायरिंग इब भी जारी थी। गुरूप्रीत नै ग्रेनेड निकाल के फैंक्या। भाग्य नै साथ दिया दुश्मनों का, ग्रेनेड फट्या नहीं। गुरूप्रीत नै इस बात का अन्दाजा नहीं था कै युद्धवीर कै भी गोली लागगी।

''गुरूप्रीत तू ठीक सै ना....'' युद्धवीर हॉफता होया बोल्या

''हॉ मैं ठीक हूँ, एक गोली लगी है - पर ठीक हूँ''

तू ठीक सै ना....'' गुरूप्रीत नै युद्धवीर की बाजू पकड़ी तो खून तै हाथ भीग गया।

''युद्धवीर तेरे भी......''

युद्धवीर कुछ ओर सोच रह्या था।

''गुरूप्रीत यहां से फायर नहीं कर सकते - सुण मन्नै कवरिंग फायर दिये। मैं बाहर निकल कै जगहां बदलूंगा।

''ठीक है युद्धवीर'' गुरूप्रीत नै आपणी रायफल संभाली। पर युद्धवीर की बात का मतलब उसकै दिमाग तै कोसों दूर था।

युद्धवीर पत्थर के पीछै तै उठ्या। फायर करता करता दुश्मनां की तरफ हो लिया।

''युद्धवीर'' गुरूप्रीत चीख्या।

तब तक खेल हो चुक्या था। मौत का बटवारां होग्या, युद्धवीर की गोलियां नै पांच के पांच शैतान शान्त कर दिये, पर वीर की विशाल छाती पै तीन चार गोलियां के निशान हो चुके थे।

''युद्धवीर ओय ए कि किता ओय'' गुरूप्रीत लगड़ांता होया भाज्या। एक दुश्मन तड़पै था उसकी तड़पन भी शान्त कर दी। युद्धवीर ढहग्या था। चेतना अभी साथ थी। गुरूप्रीत फायर करता करता आस-पास घूम कै आया।

सुबह के चार बजगे थे। पहाड़ी कै दूसरी तरफ तै उद्घोष आया।

''भारत माता की जय''

इधर तै गुरूप्रीत भी चिल्लाया ''भारत माता की जय'' पर इस उद्घोष नै हासिल करण कै बदलै मै जो कीमत गुरूप्रीत दे चुकया था, इसका मोल भला कौण जाणै था।

गुरूप्रीत दौड़ता-दौड़ता युद्धवीर कै पास ग्या।

एक पत्थर का सहारा दे कै युद्धवीर बैठ्या करया। पानी की बोतल

होठां कै लाई तो युद्धवीर नै दो घूंट पाणी पिया। होश लौटया तो गुरूप्रीत की तरफ देख्या

"ओय तू ए कि किता मेरे नाल....। जे मैनू पता हौदां तू एंज करेगा तो..." गुरूप्रीत का गला भर आया।

"बस कर गुरूप्रीत... लड़ाई के मैदान मै आसूं नहीं बहाया करते। जै मैं नहीं जाता तो हाम दोनू मारे जाते। फेर मैं पंजाब आल्या नै के जवाब देता...।" युद्धवीर थोड़ा सा मुस्कराया।

"मैं करणा सी ए काम.... ओय मैं कि जवाब दूँगा तेरे पिण्ड जा के. ... तेरा पूरा परिवार है। वो मैन्नू पूछेगे के यार नूँ कित्थे छड़ के आया तौ मै कि कहांवागे ओय"" गुरूप्रीत बेबस था।

आसपास कोय मदद की उम्मीद नहीं थी।

युद्धवीर कै हाथां तै होश की रस्सी ढ़ीली होती जावै थी।

"गुरूप्रीत थोड़ा सा गरदन नै सहारा दे दे.." युद्धवीर नै करवट सी बदलन की कोशिश करी, घाव तै खून बह निकल्या।

गुरूप्रीत नै बैग का सहारा उसकी गरदन कै लगा दिया।

युद्धवीर कै चोगरदे कोहरा सा छाणा शुरू होग्या। सांस की डोरी जब हाथ तै छूटण लागै सै तो यांदा की रस्सियां के झूले माणस के चौगरदे झूलण लागज्याँ सै। बचपन तै लैके इब तक की घटनायें रथ पै सवार हो तेजी तै युद्धवीर की तरफ दौड़ती आण लाग री थी।

"मां! मां ल्या मन्नै झूला दे, फेर दुध पील्यूंगा" सुजानी नै नान्हा युद्धवीर आपणे पांया के पंज्या पै बिठा लिया।

"जुंजा के माइयां के......"

"मां देख मेरी बन्दूक इसमैं तै पांच गोली चालैगी दस दुश्मन मरेंगे"

"गुरूप्रीत मां नै कहिये मेरी बन्दूक की एक भी गोली खाली नहीं गई" युद्धवीर बड़बड़ाया। खून की धार लाम्बी होती जावै थी।

"हाण्डु रे भाई मेरे खातर घड़ी ल्याइये रे। हट बावली सी टैम देखण खातर एक आदमी तेरे गेल गेल चाहिये।

"अच्छा बेबे ठीक सै तेरे खातर इसां बटेऊ टोहवागे जिसकी घड़ियाँ की दुकान हो....."

काबर चिड़ती होई मां धोरे शिकायत लाण गई तो मां न आकै युद्धवीर का कान पकड़ लिया।

"ओ हो भूल आया बेबे! इबकै कैन्टीन मैं तै लाऊगा आपणी बेबे की घड़ी....

युद्धवीर कै मन मै लोहर उठी....

"गुरूप्रीत बेबे की घड़ी तो रहगी रै, तू जावै तो.....

गुरूप्रीत की आख्याँ तै टपर टपर आसूं पड़ै थे।

"तू उल्टी मत सोच चुप रह"- गुरूप्रीत ओर कहता भी तो के।

"हां मैं चुप सूँ" स्वर टूट रहया था।

"हां मैं चुप सूँ" युद्धवीर नै स्वर्णा का हाथ पकड़या, अर कुछ कहण खातर मुंह खोल्या ए था के स्वर्णा नै मुंह पै हाथ धर दिया।

"बस इब ओर कुछ ना बोलियो चुप करो"

"हां मैं चुप सूँ... पर न्यू तो बता मन्नै आपणा जीवन साथी बणा कै खुश सै ना तू...."

स्वर्णा सिमट कै युद्धवीर कै लिपटगी।

कुछ ना बोली बस हल्की सी आवाज निकली

"बस मेरे तै दूर मत जाईयो", मेरे सब रंग चाव तेरे तै ए सै"।

"जाणा तो पड़ैगा बावली - एक काम ओर भी तो सै ना मेरे जिम्मै"

"पर औड़े जा के मन्नै भूलिये ना...."

युद्धवीर नै झटका खाया तो गुरूप्रीत नै वो झिझोड़ा

युद्धवीर की आख्याँ तै पाणी बह निकलया..

"गुरूप्रीत तेरी भाभी नै कहिये मै उसनै भूल्या नही" मन्नै वा बहोत आच्छी लागै सै। मेरे बिना क्यूँकर जीवैगी समझ नहीं आ रहया।

गुरूप्रीत नै पाणी की बोतल मुंह कै लाई।

एक घूंट पाणी की भीतर गई पर खून उसतै कई गुणा बाहर निकल लिया था।

गुरूप्रीत नै युद्धवीर का सिर आपणे घुटना म्हं घर लिया।

"पापा-पापा"

सुयोग की रोने की आवाज आई

"हा बेटा..... रै रै मेरा शेर बेटा कँयू रोया रै"

युद्धवीर नै सुयोग गोदी म्हं उठा लिया

"पापा - पापा बाहल बाबा आल्या छै, उसतै डल लाग्या"

"रै बेटा कदे डरया नहीं करते - तू फौजी का बेटा हो कै डरै सै"

"ठीक छै: पापा इब कै बाबा आवैगा न मैं तह द्यूंगा मेला पापा बन्दुत माल देगा तेलै, पापा मेली भी बन्दुत लाईये। फेत तो मैं एतला ए सबनै भजा द्ंयुगा।"

"हां बेटा इबकै ल्यायूंगा"

"पल पापा तू आलै रहज्या मेलै गेल खेल लिया करिये"

"हां बेटा.... इबकै आऊंगा तो खूब खेलांगे"

अचानक छाती का घाव रिसया -

" बे - टा मैं इबब क...... वार...... तै"

युद्धवीर बोल्या तो बहुत कुछ पर शब्द बाहर नहीं आ सके।

गुरूप्रीत आसमान की तरफ देखण लाग रह्या था। दिन निकलण ते पहल्यां मदद की कोय उम्मीद नजर नहीं आ रही थी। सुबह की हल्की रोशनी फैलणी शुरू होगी। युद्धवीर की आंख्या की रोशनी मन्दी पड़ती जावै थी।

"बेटा-बेटा" युद्धवीर नै देख्या उसका बाबू उसका सिर पर हाथ धरे खड्या था।

"बाबू-बाबू.... मन्नै तेरा कहण पुगाया बाबु। मैं भरती होण गया तो उन्नै लिख्या था युद्धवीर, बाप का नाम जागे सिंह..... मन्नै तेरा नाम नहीं लजाया बाबू चाहे गुरूप्रीत तै पूछल्यो -

बता गुरूप्रीत बाबू नै मैं उल्टा नही हट्या - गुरूप्रीत फूट पडया

"हां मेरे यार तू उल्टा नही हट्या ओय तू शेर है, एक बार ही जन्म लेते है तेरे जैसे यार ओये

मैन्नू छड़ के ना जा ओय...."'

युद्धवीर की पकड़ ढ़ीली पड़गी।

युद्धवीर चला गया।

इब भी चेहरै पै गजब की मुस्कान थी।

गुरूप्रीत नै उसकी ठहरी होई आंख बन्द करी।

गुरूप्रीत युद्धवीर कै लिपट के कितणी बार तक रोता रह्या। हैलिकाप्टर की आवाज तै ध्यान टूटया।

17

स्वर्णा एकदम तै चौकी। एक अजीब सी हवा का झोंका सा गुजरया। इस झौंके नै कोय आनन्द नहीं दिया, बल्कि मन के डर को बढ़ावा दिया। जै वा सो रही होती तो इसनै बुरे सपने का नाम दे देती पर उसकै खुद याद नहीं के वा पिछले पन्द्रह दिन म्हं कद सोई थी। सुजानी ताहीं बताया तो उसनै स्वर्णा ताहीं हौंसला दिया। रेडियो टी वी नै खबर दी कि भारत नै लड़ाई जीत ली। तो सबनै राहत मिली। पर दिन चढ़ते-चढ़ते वो खबर भी आ ली जिसकै भय तै सारै कुणबे की नींद हराम थी। जब फोन का संदेशा आया तो जागे की हिम्मत सी ना होई। ताऊ जागे मेरे धोरे आया तो मैं गेल हो लिया। जागे कै राह ए म्हं जंच ली थी।

"जै ठीक ठाक होता तो युद्धवीर खुद फोन करता - किमे गड़बड़ सै"

"चलो चाल कै सुणा तो" - मन्नै फोन सुण्या।

डी.सी. आफिस तै फोन था। युद्धवीर शहीद हो गया था।

जागे नै सुण्या तो कुछ नहीं बोल्या, बस एक ए बात मुंह तै निकली-

"चालो भाई। जिसको जितणा काम सौप्ंया वो कर कै सबनै जाणा सै"। बुढ़ापै कै दर्द नै बुद्धिमानी की बैसाखी लगा ली थी, पर दर्द का बोझ कम नहीं था।

बात आग की ढ़ाल गाम राम म्हं फैलगी। लोग जागे की बैठक आगै कट्ठे होणे शुरू होगे।

सुजानी अर स्वर्णा धोरे पहुंचा जागे।

"थाम दोनू मेरी बात सुणो। यू झटका सहण कै काबिल नहीं सै। पर युद्धवीर नै जो काम कर्‌या सै उसनै रो के खोइयो मत। सारा गाम, सारा जिला, म्हारै मुंह की तरफ देखैगा। मैं थामनै कुछ भी करण तै रोकता नहीं, पर आपणा बालक देश खातर मरया सै। शहीद का बाप होणा कोय छोटी बात नही सै। एक ए गुजारिश करूंगा थारै तै, दिखे जब युद्धवीर घरां आवै, तो आंसू ना टपकज्या। आगै थारी मरजी।"

जागे सममुच हौसले का व्यापारी था। जो नुक्सान हो लिया उसकी खानापूर्ति नहीं की जा सकै थी, पर इब उसका अर उसकै परिवार का व्यवहार एक परम्परा बणा कै युद्धवीर का दर्जा बढ़ा सकै था सो उसनै हिम्मत बणाये राखी।

जिलै के सारे अधिकारी, आसपास के नेता जुड़ने शुरू होगे।

फौजी ट्रक दौफारै पाछै पहुंचा।

आसमान नारायां की आवाज तै गूंज उठया

"भारत माता की जय"

"जब तक सूरज चांद रहेगा - युद्धवीर तेरा नाम रहैगा...."

"शहीद युद्धवीर अमर रहे"

"भारत माता की जय"

तिरंगे म्हं लिपटा युद्धवीर जब गाम म्हं आया तो कण-कण शौर्यमान होग्या। जागे अर सुजानी कै पायां म्हं लोटग्या सब किमै। जब ताबूत घर के आंगण म्हं ल्या कै खोलण लागगे तो कुछ लुगाई पुताई सुजानी नै भीतर ले जाण लागगी।

बदहवास सुजानी दर्द तै और भी कठोर होगी थी।

"ना मैं रोऊँ कोन्या। कती भी ना रोऊँ। मन्नै एक बै मेरे बेटे की शक्ल दिखा दयो"

ताबूत खोल्या - युद्धवीर उसे मुस्कान गेल्या चिर निद्रा म्हं लीन था।

"बेटा - सौवे सै - उठै कोन्या - मेरे बेटा की छाती तो घणी एक मजबुत थी - फेर भी गोली कित कै भीतर म्हं गई रे"

सुजानी के हौसले नै एक सन्नाटा सा पैदा कर दिया, सबनै इसा लाग्या जाणो सुजानी के रूप मैं भारत माता के दरसन कर लिये हो।

नारे फिर से गूँज उठे।

भगता स्वर्णा का हाथ पकड़ कै ल्याया।

स्वर्णा कुछ ना बोली। उल्टी चली गई।

बस सुयोग नै गोदी म्हं ले कै चुपचाप बैठी रही। जुण से युद्धवीर नै जाणै थे उन्नै हाथ मसले।

नये छोरे भी गाम गवांड के कट्ठे होके युद्धवीर की अन्तिम यात्रा की तैयारी करण लागगे। युद्धवीर नै जान तो दे दी, पर गाम का मान बढ़ाग्या। शहीद की मौत नै लाखो भावनाओं का फिर से ताजा कर दिया।

अग्नि देव नै शहीद को अपनी गोद म्हं लिया अर चले गये।

पहाड़ पै लड़ाई खत्म होगी थी।

पर गाम मै लड़ाई की शुरूआत होगी थी।

लड़ाई थी जीवन की..................

दुश्मन था बिछोड़ा..................

तोप थी उसकी याद..................

गोला बारूद थे नन्हे से सुयोग के छोटे-छोटे सवाल अपणे पिता कै बारे म्हं..................

जागे, सुजानी, स्वर्णा, सुयोग अब सब के सब युद्धवीर थे। पर लड़ाई म्हं नतीजा के रहगा कुछ समझ नहीं आ रहया था।

सुर्तो अर काबर भी आई। उनकै जीवन का एक रंग उड़ग्या था। एक मौत का जहर कितणी नसां म्हं फैलग्या था - इसका अन्दाजा किसनै था। पर जिसकै लागै वो ए जाणै - दूसरा दर्द नै के समझ सकै था। भगवान नै भूलण की आदत इंसान ताँहीं खूब दी स पर इस घाव नै कोय क्यूकर भूलज्या। खुलै म्हं रो भी ना सके - कुण म्हं बड़-बड़ कै दर्द तै बतलाये, तो दर्द हावी होता चला गया।

इसकै बाद सिलसिला शुरू होया सम्मान-समारोहों का, कुछ सरकारी कुछ गैर सरकारी। सरकार नै मदद की परम्परा निभाई। दस लाख रूपये की सम्मान-राशि मिली, साथ म्हं एक पैट्रोलपम्प का आश्वासन जिसके कागज भी बाद म्हं पहोंचगे।

जागे कै घर म्हं कोय कमी ना थी। पैसे धेले की मदद उस खातर बेमानी थी। उसकी चिन्ता सिर्फ इतणी थी के युद्धवीर की याद सुजानी अर स्वर्णा नै कोय नुकसान ना पहुंचा दे। स्वर्णा नै बहोत आच्छे संस्कार मिले थे। अपणे घर तै। जवान उम्र म्हं विधवा हो कै जो सामाजिक संकट आमतौर पै देख्या जा सै, वो स्वर्णा नै घर के पड़ौस म्हं भी ना आण दिया। जागे इस बात का बहोत सहारा मान्या करता।

एक बरस बीत गया।

गाम के कुछ नौजवानां नै युद्धवीर की तेरहवीं पै फैसला लिया था कि उसकी मूर्ति गाम कै अड्डै पै स्थापित करांगे। रूपये पैसे कट्ठे कर कै काम शुरू होग्या। लोगा की युद्धवीर के प्रति बहोत चाहत थी, सो

किसे बात की कमी ना होई। थोड़ी बहोत कसर रही तो वा जागे नै पूरी कर दी।

शहीद की मूर्ति बण कै तैयार थी।

गाम आल्यां नै गजब का फैसला लिया। मन्त्री, अफसर तो बुलाये पर मूर्ति का अनावरण का काम युद्धवीर के परिवार पै करवाया। मूर्तिकार नै जान फूंक दी थी मूर्ति म्हं। न्यू लागै था जाणो इब्बै बोलैगा। समारोह कै बाद सब चले गये। पर पूरा परिवार सांझ तक औड़े ए बैठा रह्या। आज इतणा सुख मिल्या सबनै, जाणो युद्धवीर फेर तै उनकै बीच आग्या।

मासूम सुयोग नहीं जाणता था के होया के सै पत्थर के पापा तै लिपट कै बोल्या -

"मम्मी पापा पत्थर के क्यूँ होगे।

स्वर्णा की आँख्या का बाँध आज जवाब देग्या रोती-रोती बेहोश होगी।

सब घंरा आगे।

आज सुयोग की बात नै सब झझकोर दिये।

एक साल तक जो गुबार जागे के भीतर म्हं था वो आज फूट पडया। सुयोग कै लिपटग्या बूढ़ा शरीर थर थर कापण लाग्या -

"हाँ बेटा पापा पाथर का होग्या। इब वो बोलै कोन्या, राम नै ठीक ना करी बेटा। जीवन म्हं कदे दु'ख नहीं दिखाया पर इस दु:ख नै सारा हिसाब बराबर कर दिया।

सुजानी नै बहोत कम जागे की आख्यां म्हं आंसू देखे थे। पति का इतणा भावुक रूप देख्या तो उसपै डट्या नहीं गया -

18

"हाय बावले! न्यू ना करै। लोग सड़काँ पै ट्रकां नीचै मरज्याँ सै आपणा बेटा तो सिर ऊँचा कर कै गया सै", कोय बात ना वो नहीं, उसकी निशानी तो सै, इब जवान होज्या सै"।

फेर एक रुदन समारोह होया।

सुयोग कै समझ नहीं आया के दादा-दादी अर मां क्यूँ रौवे सै? मासुमियत तै बोल पड़या।

"ठीक होया पापा पत्थर के सै, नहीं तो वो भी रोणे लगते"

उसकी बात पै सब हांस पड़े। स्वर्णा नै सुयोग गोदी म्हं ठा लिया।

आज एक फैसला झलक्या के परिवार युद्धवीर की यांदा गेल जीवैगा। हिम्मत कै साथ। संस्कारां की परम्परा की बेल नै सूखण नहीं देवागे - इतणा निश्चय कर लिया सबनै।

अप्रैल २०००

जागे स्कूल म्हं सुयोग कै दाखलै की पूछ के आया। मास्टर जी ने बताया के सोमवार नै सुयोग का दाखला कर ल्यागे।

पर सोमवार तै पहलड़ा दिन था इतवार

सुबेरे सवैरे भगता आण पहुंचा।

स्वर्णा उसनै देख के मुस्काई जरूर, पर वो चिर परिचित खुशी तो गायब हो चुकी थी। सुजानी नै सिर पुचकार्‌या तो सुयोग मामा-मामा करकै उसकी गोद म्हं चढ़ग्या।

चाय पीते-पीते भगतै नै झिझकते हुये कह्या।

"मौसी मेरे समझ नहीं आ रही, आपनै या बात आच्छी लागैगी के बुरी"

सुजानी चौकी - "कुण सी बात बेटा?"

स्वर्णा भी सहम सी गई, कदे भाई कोय इसी बात ना कहदे जो मां नै बुरी लागै।

"ना ना इसी कोय बात नहीं - मेरी मां का जी सा कर रहया था के मैं स्वर्णा नै ले आऊं - वैसे भी घणे ए दिन होगे" - भगतै नै मन की बात कहयी। स्वर्णा नै राहत की सांस ली।

"वो तो ठीक सै बेटा पर इब स्वर्णा बिना घर सूना-सूना सा होज्यागा" - सुजानी की बात ठीक थी।

"मैं समझ सकूँ सूँ मौसी" - पर म्हारै घरक्याँ का मन बहोत सै - चलो आगै थारी मरजी" - भगतै नै बड़े नम्र भावतै कही।

तब तक बाहर तै जागे भी आग्या।

बात बताई गई तो करड़ा सा जी करकै उसनै स्वर्णा को ले जाण की इजाजत दे दी।

भगता सुयोग अर स्वर्णा नै ले के चला गया।

सुजानी अर जागे बहोत देर तक चुपचाप बैठे रहे।

चुप घड़ी जब टूटी जब दलीपा आया।

"जागे भाई"।

दोनू चौके - सांस ली दो चार लाम्बी लाम्बी।

"री भाभी चा पीण नै जी कर रह्या सै।

दलीपा जाणै था के उसकै सहारै ये दोनू भी चा पी लेंगे। फेर बोल पडया -

"दु:खी सै हो नै दोनूँ"

जागे लाम्बा सा सांस भर के बोल्या -

"दलीपै एक बात बताऊ - मन्नै किते सत्संग म्हं सुणी थी भगवान राम पंचवटी कै बाहर बैठे-बैठे आपणे तीर गेल्यां धरती नै कुरेदन लाग रहे थे। सीता कै वियोग म्हं ख्यालं नही रहया तीर की नोक तै धरती खोदे गये। नीचै नजर गई तो राम जी नै देख्या के धरती म्हं तै खून की धार सी निकली। माटी खोदी तो देख्या नीचे एक मेढ़क लहुलुहान पड़या था। भगवान नै मेढ़क हाथ म्हं उठाया बड़े दु:खी मन तै बोले - तेरे तीर चुभ्या तू बोल्या कोन्या - तो मेढ़क बोल्या मेरे राम जै ओर कोय घाव देवै तो हाम तेरे आगै बता दया, पर जब तन्नै ए घाव दे दिया, हाम किसके आगै कहवां - यू घाव तो राम जी नै म्हारै ताहीं दे दिया, इब इसकी पुकार किस कै आगै करां"?

दलीपा नम आँख्याँ तै जागे का तर्क सुणन लाग रहया था।

"चलो भाई - इब यू छोरा उपर नै होज्यागा। सारी कमी पूरी होज्यागी।

सुजानी चाय ले आई।

हफ्ता बीत गया। पन्द्रह दिन। फेर एक महीना।

स्वर्णा दस दिन की कह कै गई थी। आई नहीं। जागे नै बेरा भेज्या के बहू नै घाल दियो। अगलै दिन सवैरे सवैरे दरवाजै पै भगता खडया था। सुजानी दरवाजै की तरफ लपकी।

"हे बहू आगी मेरा पोता आग्या"

पर भगता एकला था।

चुपचाप खड़या रहया।

"आ रे बेटा, कित सै बहु अर सुयोग - बेटा के बात सै"?

जागे भी बाहर आया तो मामला समझ नहीं आया

"के बात सै भगतै - सब ठीक तो सैं - स्वर्णा कौन आई के?"

उसकै बाद जागे अर सुजानी पै बिजली टूटी।

"मौसी के बताऊँ कुण सै मुँह तै कँहू? इबै स्वर्णा की उमर भी के सै? घर की गाम की या ए राय बणी सै के उसका"

"के - उसका के....." सुजानी बरस पड़ी।

"उसका किते और घर बसा दं्या" भगत नै झिझक तोड़ी।

"के? के कही?" सुजानी नै आव देख्या नै ताव, भगतै कै जोरदार थप्पड़ मार्या।

"तन्नै शरम कौन आई? - म्हारी बहू के बारे मै या बात तन्नै सोची क्यूँकर?"

"वा मेरी बहाण भी तो सै?" भगता सहमा खडया था।

सुजानी फूट - फूट कै रोवण लागगी।

जागे बेरा ना किस माटी का बण्या होया इंसान था।

"ठीक सै भगतै-जा या मरजी स्वर्णा की सै, तो हाम के कर सका सां"

भगता चला गया - सुजानी नै जागे एक खाट पै बिठा समझावण लागग्या तो सुजानी नै आपा पीटणा शुरू कर दिया। थोड़ी देर म्हं वा अचेत होगी। संयोग तै सुरेश उस दिन गाम म्हं ए आ रह्या था - दलीपा भाज कै उसनै बला लाया। सुरेश आपणी गाड़ी म्हं डाक्टर नै बुला

ल्याया। डाक्टर नै एक इन्जैक्शन लगाया - सवैरे तक की नींद का उपाय कर दिया।

जागे कै समझ म्हं नहीं आ रहया था, वो करै तो के करै। बेबस सा हाथां की लकीरा नै देखण लागग्या।

"इस जन्म मैं तो किसे का बुरा नहीं कर्या दलीपै - कोय पिछलै जन्म की सजा लागै से"।

दलीपा के कहता, बस न्यूए सोचै था के उसका बेटा तो एक बै जाकै उल्टा आग्या था, पर युद्धवीर तो इसी दुनिया म्हं चला गया, जित तै कोय उल्टा नहीं आ सकता। इन्सान तो के चिट्ठी भी नहीं आ सकती। जागे सारी रात सुजानी के सिरहानै बैठ्या रहया। अगले दिन तड़कै ए दलीपै नै सुजानी धोरै छोड़ उसकी मरज की दवाई लेण चल पड्या। जागे नै आपणी मेहनत अर ईमानदारी तै जीवन जीया था। आज तक उसनै किसे कै आगे हाथ नहीं फैलाया था, पर आज सुजानी खातर वो मंगता भिखारी बण कै चाल पड़या था। सुजानी नै उम्मीद थी के जागे शाम तक बहू पोते नै लेके आज्यागा। पर सांझ नै जागे हारे होय जुआरी की ढ़ाल घर म्हं घुस्या। खाली हाथ।

सुजानी खामोश होगी। उसनै आपणे पति की रग-रग का बेरा था, उसकै स्वाभिमान का बेरा था। दरअसल भगतै अर बलदेव नै जागे स्वर्णा तै मिलण ही नहीं दिया। जागे के आते ही स्वर्णा अर सुयोग नै ले कै धनकौर उन्नै दोनुआं नै खेत म्हं लेगी।

स्वर्णा नै अर ना सुयोग नै इस बात का बेरा पाटया के जागे उन्नै लैण आया था।

जागे अर सुजानी - दर्द की राह के दो मुसाफिर, उनके बेटे की बहादुरी के चर्चे तो लोगां नै सुणाये पर जो लड़ाई ये दो बूढ़े शरीर

लड़ रहे थे, उसनै कोण जाणै था। बन्दूक की गोली तै तो आदमी घड़ी दो घड़ी तड़पता होगा, पर या चोट तो एक मिनट म्हं लाखो बार तड़पावै थी। खेतां नै जागे की बाट रहण लागगी।

सुजानी का चरखा धूल म्हं अटग्या।

चार महीनां म्हं बूढ़े योद्धाओं का शरीर आधा रहग्या।

दलीपा हर कोशिश करता के उनकै खाण-पीण का ध्यान राखूँ पर मन नै क्यूँकर बहलाता, दलीपा खुद इतणा स्याणा ना था।

एक दिन दरवाजै पै आहट होई। सुजानी नै आहिस्ता-आहिस्ता दरवाजा खोल्या तो दरवाजै पै सुजानकौर अर गुरूप्रीत खड़े थे। गुरूप्रीत एक छड़ी का सहारा ले रहया था। आंख्या नै मसल कै सुजानी नै पिछाणे तो सुजानकौर कै गले लिपटगी।

"रे मेरा शेर बेटा" उसतै आगै बोल ना निकलया सुजानी का। सुजानकौर गुरूप्रीत अर सुजानी आपस म्हं लिपटे तो सबके गले रूँधगे।

"हाय नी साढ़ी दो हसाँ दी जोड़ी टूट गई नी" सुजानकौर फूट पड़ी।

सुजानी फेर अचेत होगी।

जागे बदहवास सा आया, जब उस धोरे सन्देशा भेज्या के सुजानी फेर तै बेहोश होगी।

जागे नै दवाई करी। सुजानी नै नींद आगी।

फेर सुजानकौर सुजानी कै हवा करती रही।

युद्धवीर कै जाणै के बाद सुजानकौर तो दो तीन बार आली थी, पर गुरूप्रीत उस हादसे को सहन नहीं कर पाया था। लड़ाई कै दिन उसनै आपणै घाव की परवाह नहीं करी। युद्धवीर नै उठा कै

हैलीकाप्टर में बैठ तो गया, पर उसकै बाद बेहोशी छागी। टांग म्हं लगी गोली का जहर सारै शरीर में फैलग्या। कई महीनै आर्मी हस्पताल आलयां का इलाज चाल्या। दो ऑपरैशन बणे। युद्धवीर की मौत कै बाद अपणे आप को धिक्कारता रहा। आज भी बड़ी हिम्मत करकै आपणी मां के बार-बार कहणै पै गाम म्हं आया।

गुरूप्रीत अर जागे बैठगे - धौरे दलीपा बैठग्या।

गुरूप्रीत नै एक-एक बात जागे ताहीं य बताई। गुरूप्रीत फेर रोण लागग्या तो जागे नै संभाला।

"ना भाई रोके युद्धवीर की कुर्बानी नै सस्ती मत बणावे, वो तन्नै भाई कह्या करता - मानया करता फेर आपणै भाई की जान बचा भी दी तो कुण सा एहसान करया"।

"गुरूप्रीत बेटा तन्नै तो खुशी होणी चाहिये के आज के दौर म्हं तन्नै युद्धवीर जैसा दोस्त मिल्या"

जागे थोड़ी देर रुकया - फेर बोल्या

"गुरूप्रीत देख तू मन्नै युद्धवीर जिसा प्यारा सै, मेरी बात का बुरा ना मानिये। देख भाई इब तै आगै तू आड़ै मत आइये"

गुरूप्रीत हक्का बक्का सा रहग्या।

फेर जागे नै गुरूप्रीत ताहीं लड़ाई कै बाद के उस युद्ध की बात बताई जो उसनै अर सुजानी नै बिना बन्दूक गोली कै लड़ना पड़ रहया सै।

गुरूप्रीत कै बात समझ म्हं आगी। वो भीतर आया। सुजानकौर का हाथ पकड़ कै बाहर निकलग्या।

दो महीने और बीतगे। मेरी हिम्मत तो नहीं थी, पर ताऊ जागे ताहीं बताणा बहोत जरूरी था। मैं घराँ गया तो ताऊ जागे सुजानी गेल्याँ

बैठा चा पीण लाग रहया था। सुजानी जो गाम की सुथरी लुगाईयाँ की जमात म्हं शामिल थी - सूख कै हड्डियाँ का ढ़ाँचा रहगी थी। उनकै गेल गेल हाम भी इस दर्द के आदी होगे थे। सारै गाम नै मलाल था स्वर्णा अर सुयोग के इस ढाल छोड़ कै जाणे का।

मैं ताऊ नै बात बातां म्हं बाहर बला ल्याया। बाहर आकै मन्नै दरवाजा बन्द कर दिया। ताऊ जागे का हाथ पकड़ कै बोल्या - ताऊ बात इसी सै जो बताणी बहोत जरूरी सै। स्वर्णा का ब्याह पक्का कर दिया। मन्नै सुणया सै सुयोग नै भी गेल्या ले के जावैगी।

" हे भगवान - जागे नै चौखट पकड़ ली।" "इब तो सुजानी मर ज्यागी या बात सुण ली तो...."

दरवाजा खुलया, अचानक सुजानी दरवाजै कै पीछै खड़ी-खड़ी सुणै थी।

"कद सै उसका ब्याह?" सुजानी का स्वर कठोर होता चला गया।

"इसे हफ्ते शुक्रवार नै" - मैं घबरा गया था।

सुजानी नै जागे का हाथ पकड़या अर घर क अन्दर लेगी भीतर तै आवाज आई।

"बस इब तक जो होया इस उम्मीद म्हं था के म्हारी वंश बेल बची रहैगी, पर अब उनका कोय जिकर नहीं होगा। दिखे तन्नै दु:खी होण की कोय जरूरत ना सै" मै सोच में पड़ग्या। जो लोग लड़ाई म्हं लड़े थे, उन्हे मैडल, शौर्य-चक्र मिलैं सैं, पर इस लड़ाई के फौजियां नै कोण पिछाणै सै। सुजानी युद्धवीर की मां तो थी ए, पर खुद भी युद्धवीर तै कम ना लागी आज मन्नै।

दरवाजा झटकै तै बन्द होग्या। इसा लागै था यो घर नहीं, एक बंकर सै जिसकै भीतर दो महान योद्धा आगे का जीवन जीण की लड़ाई की

तैयार कर रहे हो।

मेरा जी बहोत भारी होग्या था। न्युँ निश्चय करकै के इब जल्दी सी गाम म्हं नहीं आऊँगा, मैं शहर लौट आया।

शुक्रवार का दिन आण पहुंचा।

सुजानी की तबीयत बहोत ज्यादा बिगड़ गयी।

जागे डाक्टर नै लेण चाल्या तो सुजानी नै हाथ पकड़ लिया। हाँफती सी बोली -

"इब किते जाण की जरूरत नहीं - कोय फायदा नहीं"।

"किसी बात करै सै तू - छोड़ मेरा हाथ, मन्नै जाण दे।" जागे नै हाथ छुड़ाया, पर सुजानी नै फेर पकड़ लिया।

"मन्नै एक बै बेटे धोरै ले चाल" - सुजानी बोली

जागे हक्का बक्का रहग्या - सुजानी के कह री थी, समझ नहीं पाया।

"मन्नै एक बै अड्डे पै ले चाल" सुजानी फेर बोली, तो जागे कै समझ म्हं आगी। उसनै दलीपै ताँही बोल मार्या। दोनू जणे सुजानी नै आपणे हाथां का सहारा दे कै युद्धवीर की मूर्ति धोरै ले आये।

मूर्ति धोरे पहुंच कै सुजानी सगमरमर के चबूतरे पै लेट गई। एक टक युद्धवीर की मूर्ति की तरफ देखे गई। मुंह तै कुछ ना बोली। रह रह कै आंख्याँ तै आँसूंआँ की किस्त जारी हौवे थी।

जागे समझै था, सुजानी के मन म्हं के चाल रह्या था। आँसू हिचकी म्हं बदले तो सांस भी अटक अटक कै आणे लाग्या। जागे बोल पड़्या

"दलीपै भाई आज या भी छोड़ कै जावैगी"।

"ना भाई जागे न्यू ना कहवै" - दलीपा रो पडया।

सुजानी नै हल्का सा हाथ हला कै जागे आपणे धौरे बुलाया - टूटे फूटे

शब्दां म्हं बोली

"दिखे .... मन्नै माफ कर दिये.... मेरे ताँय तन्नै कोय कष्ट नहीं दिया... पर मन्नै अर मेरे बेटे नै बहोत दर्द दिया सै"।

जागे नै सिर तलै हाथ ला कै सुजानी बैठी कर ली।

"ना कुछ मत कह, दर्द तन्नै नहीं भगवान नै दिया सै"।

एकदम सुजानी तेज तेज सांस भरण लागगी। जोर तै स्वर उभर्‌या "देख तेरी बहू अर पोता आण लाग रहे सै"।

जागे रो पडया - रै बावली वा कित तै आवैगी - उसनै के बेरा तूं मरण लाग री सै, वा तो फेरया पै बैठी होगी - क्यूँ पागल हो रही सै तू"?

सुजानी म्हं बेरा ना कित तै ताकत आगी थी। उसनै जागे क़ै जोर का हाथ मार्‌या - "हाय पागल मैं नहीं तू हो रहया सै - एक बै मुड़कै तो देख तो सही"

जागे नै दुनिया देखी थी। उसनै बेरा था मरण तै पहल्या कितणे भरम परछाई बण कै दिखयां करैं मरणिये नै। रोते-रोते दलीपै की तरफ मुड़या। दलीपा भी रोते-रोते उस तरफ नै देखण लागरहया था। जिस तरफ सुजानी इशारा कर रही थी

"हाँ भाई देख बहू अर पोता आगे"

"रे तू भी पागल होग्या के, कित तै आवैगे वै"

"दादा जी" सुयोग की आवाज नै जागे चौंका दिया।

साच म्हं स्वर्णा अर सुयोग उसकै पाछै खड़े थे।

स्वर्णा भाज कै सुजानी कै लिपटगी।

दीवै म्हं तेल सा घलग्या।

रोशनी बढ़ती चली गई।

"ए मेरी बेटी कित चली गई थी तू", सुजानी नै रोते-रोते पूछया।

स्वर्णा सुजानी के पैरां म्हं पड़गी" मन्नै माफ कर दे मां। मैं बहकग़ी थी। मेरा दिमाग धो दिया था घर क्याँ नै।

साँची बताऊँ मैं फेर्‌याँ खातर सज कै तैयार होगी थी। पर जब फेरयां पै चालण लागगी तो गुरूप्रीत सामणै आण खड्या होया - उसनै एक ए बात पूछी थी - भाभी के बणना पसन्द करेगी, दूसरी ब्याहता अक युद्धवीर जिसे शहीद की विधवा। सुयोग कल नै स्कूल म्हं जाकै आपणै बाप का नाम के लिखावैगा?"

बस मेरे खातर फैसले की घड़ी थी। मन्नै बेरा सै अक मेरे सास ससुर कितणे बहादुर सैं। पर वै जीवन गेल जबै लड़ सकैंगे जब उनका मकसद स्यामी होगा। अर उनका मकसद मैं अर सुयोग साँ और कोय नहीं।"

जागे नै स्वर्णा कै सिर पर हाथ धरा।

"जुग जुग जीओ मेरी बेटी। तू आगी, म्हारी लड़ाई भी खत्म होगी, हामनै जीवन जीत लिया बेटा"।

सुजानी उठ खड़ी होण लागगी तो स्वर्णा बोली

"ना मां, आज शाम तक तेरे बेटे धोरै रहंवोगे" जागे मुस्करा दिया।

दूर गुरूप्रीत अर सुजानकौर खड़े सुख की घड़ी की गवाही दे रहे थे।

19

“इब ताऊ बेटा किमे बतालाओगे के न्युएं लिपटे रहोगे“, ताई सुजानी की आवाज पै हाम दोनू वर्तमान म्हं लौट आये।

ताऊ बोल पडया - “कोय आपणा जै घणे दिन बाद दिखै तो हरक आ ए जा सै।“

इतणी देर मैं स्वर्णा भी भीतर तै निकल आई।

मैं बोल्या - “भाभी तन्नै बढ़िया कर्‌या जो फिर तै आज इस घर म्हं सै। ताई नै किस करम की सजा मिली या तो मैं नहीं कह सकता, पर उनके आच्छे कर्मा का फल यूं सै के इस घर म्हं खुशी लौट आई“।

मेरी बात पूरी होण तै ए पहल्यां स्वर्णा बोल उठी -

“दिखे जब किसे हलचल तै नदी रास्ता मोड़ ले तो उसकी ताकत आधी रहज्या सै। जै राह पा भी ज्या तो उसमैं पाणी कम रहज्या, अर जै ना पावै तो पाणी ठहर कै सड़ ज्याया करै - मैं आपणे परिवार की इस नदी नै कदे भी कमजोर नांही होण दयूंगी“।

मैं हैरानी तै स्वर्णा नै देखण लाग रहया था। जागे अर सुजानी नै जो परम्परा की बेल लगाई थी, उसमैं कोपल फूट आई थी।

इतणी बार मैं युद्धवीर कै साहस की परम्परा का फूल खिल्या - सुयोग भीतर तै भाज्या आया।

“चाचा देख मेरी बन्दूक इसमै दस गोली चालै सै अर बीस दुश्मन भरे सै“

सुजानी एक टक सुयोग न देखैं जाण लाग री थी।

मेरे होठां तै एक पवितर शब्द निकल्या - **“युद्धवीर“**